मेरा राजस्थान

वर्ष-१५, अंक- १०, मुम्बई, दिसम्बर २०२० सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ५२ मूल्य -१००.०० रूपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

लूनकरनसर

राजकीय महाविद्यालय

पंचायत समिति

गुरुद्वारा

जैतसी धाम

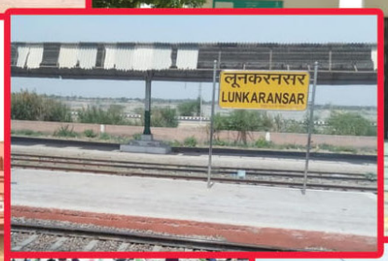

सती दादी माता

कृष्ण-रूक्मिणी मंदिर

जैन मंदिर

कृषि विज्ञान केन्द्र

पशु चिकित्सा विश्व विद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र

'लूणकरणसर' के इतिहास प्रकाशन पर 'मेरा राजस्थान' परिवार को धन्यवाद

प्रवीण खेतान (गुड्डु) भ्रमणध्वनि : ९६०२५७७७०० पवन खेतान भ्रमणध्वनि : ९४१४५२८९१४

दिनेश इन्टरप्राइजेज

दायजा सामान के विक्रेता

हनुमान मन्दिर के पास, लूणकरणसर, बीकानेर, राजस्थान, भारत - ३३४६०३ Sister Concern पंकज खेतान - ९४१४४५००६४

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान 'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

http:// www.merarajasthan.co.in

नीम लगायें पर्यावरण बचायें

Welcome to the exciting world of Cello

Choose from over 3000 exquisite household products from the world of Cello

cello®

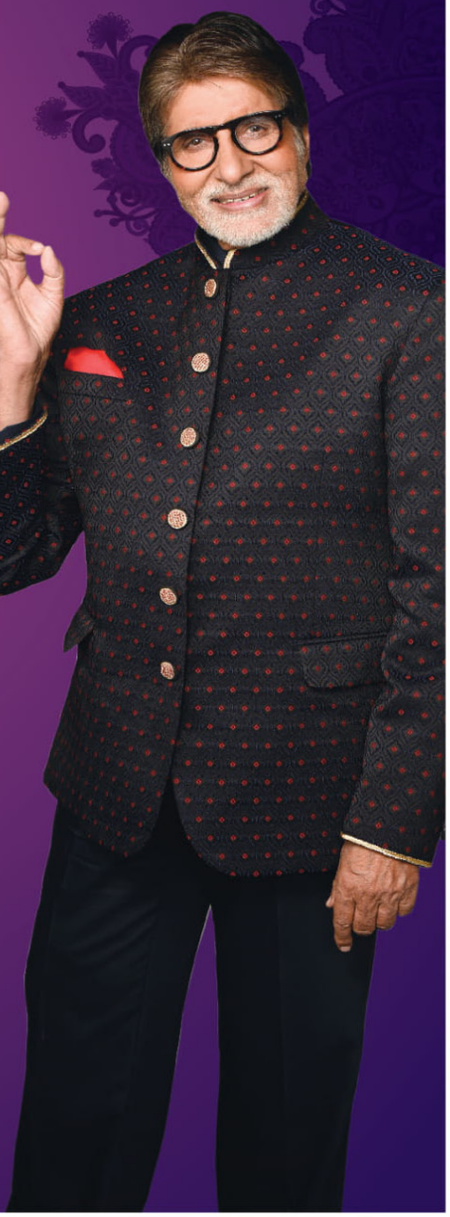

Download the Cello mobile app from

www.facebook.com/celloworldindia | www.celloworld.com

twitter.com/hello2cello | instagram.com/hello2cello

youtube.com/celloworldindia | amazon.com | Flipkart

All Cello products are made from BPA free food grade plastic.

For Corporate Enquiries : (West & South) Mr. Nitin : 9821459344 / (North & East) Mr. Vivek : 9911625261
Email : cellothermoware@hotmail.com, cello.sales@celloworld.com,
To know more about our range visit www.celloworld.com

भारत को भारत ही बोला जाए

मेरा राजस्थान

सम्पादक-बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

पधारो म्हारे देश

मात्र रु. 100/- में, प्रति महिना

राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

वार्षिक शुल्क 1,111/-
आजीवन शुल्क 11,111/-

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

राव लूणकरण...

स्वर्णकार समाज द्वारा...

अतीत के आईन...

श्री जैतसी धाम...

लूणकरणसर सती दादीजी...

मानिक चन्द सुराना...

दिसम्बर २०२० के अंक की झलकियाँ

और भी बहुत कुछ....

'मेरा राजस्थान' जनवरी २०२१ री विशेषतावां

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

'लूनकरनसर' के इतिहास प्रकाशन पर 'मेरा राजस्थान' परिवार की शुभकामनाएं

Shiv Kumar Saria

Mob. : 9434001526

Soongachi Tea Industries (P) Ltd.

Arjun Enclave, Tea Auction Road, Mallaguri, Siliguri, West Bengal, Bharat- 734003

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान नीम लगायें पर्यावरण बचायें

वर्ष-१५, अंक १० दिसम्बर २०२०

१२ अंक वार्षिक १११११/-

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक
स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई

सम्पर्क करें...

सम्पादकीय कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

बी- २१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०० ०५९.
दूरध्वनि - ०२२-२८५० ९९९९
भ्रमणध्वनिः 9322307908

अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना : http//: www.merarajasthan.co.in
http//:www.bijayjain.com

bijaykumarjain1956@gmail.com
hindiwelfaretrust@gmail.com
Linkedin:hindiwelfaretrust@gmail.com
Instagram: hindiwelfaretrust@gmail.com

अपने व्यापार-समाज-स्वयं की वेबसाइट बनाने के लिए या
digital marketing के लिए संपर्क करें
gdigital World Ph: 022-28509999

सम्पादकीय ....

आखिरकार लुणकरणसर का इतिहास प्रकाशित हो ही गया

मैंने पिछले १५ सालों के अन्तराल में राजस्थान के करीब १०० गावों के इतिहास को प्रकाशित किया हैं। आप सभी जानते भी हैं की इतिहास के प्रकाशन में काफी मेहनत व मशक्कत करनी पड़ती है, कारण यह भी है कि इतिहास! इतिहास ही होता है, उसमें हम किसी प्रकार का किन्तु-परन्तु यानी जोड़-घटाव नहीं कर सकते, सच्चाई बयॉ करनी होती है और वह मैंने 'मेरा राजस्थान' पत्रिका के विशेषांकों में प्रकाशित करने का हुबहू प्रयास किया है जिसको प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा ही नहीं, प्रोत्साहित कर संकलित भी किया है। 'लुणकरणसर' एक ऐसा कस्बा जहॉ की आबादी तो करीब ४०,००० है, पर आज तक किसी भी लेखक यहा पत्रकार ने विस्तृत ऐसी कोई भी जानकारी का प्रकाशन नहीं किया है जो कि 'लुणकरणसर' के बारे में ऐतिहासिक जानकारी दे सके।

'लुणकरणसर' के इतिहास प्रकाशन की सफलता में 'लुणकरणसर' के रहवासी सर्वश्री श्रेयांस बैद, दीनदयाल मुदगल, चंपालाल चोपड़ा, उमेदमल बोथरा के साथ कई रहवासी-प्रवासी का सहयोग, मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिसके लिए 'मेरा राजस्थान' परिवार सभी का कोटिश: आभार व्यक्त करता है। प्रस्तुत अंक कितना पठनीय बना है जिसकी कसौटी पर हम खरा तो तब उतरेगें, जब प्रबुद्ध पाठकों का सुझाव हमें प्राप्त होगा।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए के लिए मैंने भारत के महामहिम राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सभी केंद्रीय मंत्री, सभी राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, सांसद व सामाजिक संस्थाओं से संपर्क किया है, मार्गदर्शन व सहयोग का आश्वासन भी प्राप्त हुआ है, बस 'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठकों का मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होगा तो मुझे पुरा विश्वास है कि सन २०२१ से भारत को 'भारत' ही कहा जा सकेगा, इस विश्वास के साथ एक बार फिर से हम सभी स्वस्थ रहें, तन्दुरूस्त रहें, कोरोना जैसी महामारी से अपना व अपने परिवार का बचाव रखें, सरकारी नियमों का पालन करें क्योंकि जान है तो ज़हान है। जय जय राजस्थान!

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

आपका अपना
- बिजय कुमार जैन

अपनी बोली-अपनी भाषा
संवर्धन का एक सिपाही

भारत को भारत ही बोला जाए

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

सत्यमेव जयते

वसुन्धरा राजे

13, सिविल लाइन्स
जयपुर (राज.)

कार्यालय / पूर्व मु.मं. / 2019 / 434
जयपुर, दिनांक : 01 अक्टूबर, 2020

''संदेश''

श्री विजय कुमार जैन जी,

यह जानकर अच्छा लगा कि राजस्थानी कला, संस्कृति एवं विरासत को प्रसिद्धी देने वाली 'मेरा राजस्थान' पत्रिका द्वारा लूणकरणसर के इतिहास के साथ विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

आपकी इस पत्रिका ने सदैव समाज को एकजुटता एवं हमारी साझी विरासत को बनाए रखने की सीख दी है। मुझे खुशी है कि आपके द्वारा उल्लेखित लूणकरणसर का गौरवमयी इतिहास व जानकारियां आमजन के लिए मार्गदर्शक व उपयोगी साबित होगी।

मेरी अग्रिम शुभकामनाएं।

वसुन्धरा राजे

(वसुन्धरा राजे)

कर्नल राज्यवर्धन राठौड़
एवीएसएम (सेवा निवृत)
Col Rajyavardhan Rathore
AVSM (Retd)
Padma Shri, Khel Ratna, Arjuna Award

सत्यमेव जयते

सांसद (लोक सभा)
जयपुर ग्रामीण, राजस्थान
Member of Parliament (Lok Sabha)
Jaipur Rural, Rajasthan

23 नवम्बर, 2020

''संदेश''

श्री विजय कुमार जी जैन,

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि राजस्थानी कला, संस्कृति एवं विरासत को प्रसिद्ध करने वाली पत्रिका **'मेरा राजस्थान'** द्वारा लूणकरणसर के इतिहास पर विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। **'मेरा राजस्थान'** पत्रिका ने राजस्थान की विरासत, समाज को नई राह एवं एकजुट रहने का संदेश दिया है। यह हर्ष का विषय है कि आपके द्वारा उल्लेखित लूणकरणसर का गौरवमयी इतिहास व जानकारियां आमजन के लिए मार्गदर्शक व उपयोगी साबित होगी।

मैं **'मेरा राजस्थान'** पत्रिका विशेषांक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

राज्यवर्धन

(कर्नल राज्यवर्धन राठौड़)

Delhi: 12, Sunheri Bagh Road, Near Udhyog Bhawan Metro Station, New Delhi- 110011
Ph.: 011-23062060 | Mob.: 9460996611 | E-mail office :- sansad.sewakendra@jaipurgrameen.com
Jaipur : 510, Nemi Sagar Colony, Vaishali Nagar, Jaipur, Rajasthan - 302021 | Ph.: 0141-2355966 | Mob.: 9460996612
/Rathore | Ra_THORe | /ra_rathore | website : www.rajyavardhanrathore.in

स्वर्णकार समाज द्वारा गोल्डस्मिथ ज्वेलरी शो का आयोजन

भारतीय स्वर्णकार संघ द्वारा स्वर्णकार समाज हितार्थ कई प्रकल्प निरन्तर सहयोग से चलाए जा रहे हैं। उसी कड़ी को आगे बढ़ते हुए हमारी स्वर्णरजत कला को एक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाने हेतु यह एशिया का प्रथम 'गोल्डस्मिथ ज्वेलरी शो' जो वर्चुअल EXHIBITION के रूप में होने जा रहा है ताकि लोकल फ़ॉर वोकल को मजबूती मिले।

हम सभी के लिए यह देश का ऐसा प्लेटफॉर्म होगा जहां हम अपनी कला को उचित स्थान दिलाते हुए उसे पूरे विश्व में स्थापित कर सकेंगे।

अभी तक हमने देखा है कि अपने समाज में स्वर्णरजत कला के क्षेत्र में यथा योग्य स्थान कई बाधाओं तथा कारणों से नही मिल पाता है जिससे हमारी उत्कृष्ट कलाएं भी अन्यथा हाइजैक कर स्वयं के नामपर उसका लाभ उठा लिया जाता रहा है। हम जहां हैं वहीं रह जाते हैं एवं हमारी मेहनत को दूसरों द्वारा लाभ उठाए जाने को ठगे से देखते रह जाते हैं, फिर भी कर कुछ नहीं पाते।

अतः अब हमें वर्तमान समय को देख समझ कर, उसी के अनुकूल स्वयं को ढालते हुए भविष्य के लिए आगे आकर खुद की कला को यथोचित पहचान द्वारा स्वयं को ही स्थापित करना होगा और इसी श्रृंखला में भारतीय स्वर्णकार संघ द्वारा आयोजित VIRTUAL EXHIBITION में सहभागिता निभाते हुए सबका साथ सबका विकास को चरितार्थ करना होगा, ताकि अपने स्वर्ण रजत कला में निपुण बंधुओं सहित हमारे इस क्षेत्र से जुड़े सभी लोगों को इसका लाभ मिल सके और इसके माध्यम से हमारी कला तथा व्यवसाय का भविष्य संवारा जा सके।

BSS
भारतीय स्वर्णकार संघ
IGSJS Virtual Exhibition-By BSS

इस उचित अवसर का हम अधिक से अधिक स्वर्णकारों को लाभ लेना चाहिए ताकि हम हमारे द्वारा निर्मित आभूषणों को पूरी दुनिया के सामने प्रदर्शित कर सकें और हमारी भी एक विशिष्ट पहचान बन सके जिससे हम भी अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय व्यवसाय से लाभान्वित हो सकें।

सनद रहे - एक व्यक्ति का विकास भी राष्ट्रीय विकास की ही कड़ी होता है और हमारे प्रयास से न केवल राष्ट्र का हित होगा बल्कि स्वरोजगार भी प्रोत्साहित होगा एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय वृद्धि से भारत को वैश्विक पूंजी का लाभ भी मिल सकेगा।

आइये अंतर्राष्ट्रीय स्वर्णकार ज्वेलरी शो से लाभ भी जानें -

चूंकि यह एशिया का प्रथम 'गोल्डस्मिथ' ज्वेलरी शो है और जो अंतर्राष्ट्रीय स्वर्णकार ज्वेलरी शो के रूप में प्रदर्शित होने जा रहा है अतः विदेशी ग्राहकों से सीधे संवाद के माध्यम से एक बेहतर लाभ सहित निर्यात प्रोत्साहित होना निश्चित है।

इसके फलस्वरूप आय ज्यादा तो स्वरोजगार प्रोत्साहित तो निर्यात में बढ़ोत्तरी के जरिये देश के विदेशी पूंजी श्रोत में विस्तार निश्चित होगा क्योंकि यह सीधे निर्माता और विदेशी क्रेता के बीच एक सम्पर्क का जरिया बनने जा रहा है।

चूंकि इस शो में स्वर्णकार, रजतकार, जवाहरात निर्माता और मशीन वाले भी जुड़ेंगे, अतः एक ही शो से बहुउद्देश्यीय लाभ प्राप्त हो सकेंगे।

बिंदुवार लाभ: १. कौन किस प्रकार के आभूषण से जुड़ा है या बनाता है ताकि ज्वेलरी उद्योग से जुड़े लोगों में सीधे सम्पर्क हो सकेगा तथा इससे प्रॉफिट बढ़ेगा और भिन्न-भिन्न तरह की ज्वैलरी निर्माताओं के मध्य आपसी उत्पाद की जानकारी के प्रसार से भी व्यापार में वृध्दि हो सकेगी।

२. आपके द्वारा स्वयं राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार करने की जानकारी के साथ आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा और व्यवसाय भी।

३. पारंगत कारीगर अपने कौशल को राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर स्थापित कर व्यापार बढ़ा सकेगा और उचित मुनाफा मिलने से गुणवत्ता में और भी प्रसार हो सकेगा।

४. व्यवसायिक लाभ वृद्धि न केवल आय बढ़ाएगी बल्कि युवा पीढ़ी भी आकर्षित होगी, जिससे स्वरोजगार में भी वृद्धि हो सकेगी।

५. क्राफ्ट की गुणवत्ता में इजाफा होना लगभग तय है क्योंकि निर्यात में गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण विषय है और उचित मूल्य प्राप्ति से जेवरों की गुणवत्ता एवं सौंदर्य में निखार में वृद्धि अवश्य होगी।

६. प्रतिस्पर्धा के चलते नव डिजाइनों में प्रसार भी तेजी से हो सकेगा।

७. देश में और विदेश में ग्राहकों सहित विदेशी स्वर्णकारों और रजतकारों से सीधा आपसी संपर्क जिससे भविष्य में अनेकों लाभ सहित सम्पर्क सहित आपसी व्यापार में विस्तार और व्यसायिक उद्यम सहित आय में वृद्धि।

८. जेवर निर्माता की आय वृद्धि के लाभ वृध्दि का असर हस्तशिल्पी की आय पर भी निश्चित पड़ेगा।

९. निःसंदेह जब यह प्रदर्शनी एक अच्छे रूप में लाभ का साधन बनेगी तो युवाओं को भी आकर्षित करेगी तथा हस्तशिल्प से लेकर बिक्री तक से युवा वर्ग जुड़ेंगे और इस तरह स्वरोजगार प्रोत्साहित होगा।

१०. चूंकि इस प्रदर्शनी में देशी विदेशी नव तकनीकी तक की मशीन विक्रेताओं के स्टाल भी होंगे, जिससे स्वर्णकारों को या निर्माता को निर्माण के तकनीकी ज्ञान में वृद्धि का असर उत्पाद पर पड़ने से ग्राहकों की मनपसंद ज्वेलरी निर्माण और गुणवत्ता में अपेक्षित लाभ होगा।

११. लाभ प्रसार से सरकार का टैक्स लाभ बढ़ना स्वाभाविक है जो होगा ही।

सारांशतः बेरोजगारी समस्या निदान, हस्तशिल्पियों के जीवनस्तर में उत्थान, विदेशी पूंजी आय में बढ़ोत्तरी, ग्राहकों को लाभ, गुणवत्ता तथा अलंकार सौंदर्य में प्रसार, हस्तशिल्पियों के आपसी व्यापार में विस्तार, नव तकनीकी की जानकारी एवं उक्त मशीनों से भविष्य में लाभ और इसके साथ-साथ स्वर्णकारों सहित ज्वेलर्स को एक ही छत के नीचे बहुत से उत्पाद की जानकारी एवं व्यापार का लाभ।

विदेशों में भारतीय आभूषणों की ख्याति में विस्तार आदि अनगिनित प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभ होना निश्चित, अतः आइए हम अपने स्वर्णकार समाज की मजबूती और बढ़ाएं।

इच्छुक सामाजिक बन्धु जो इस विषय में रुचि रखते हैं वे संपर्क कर सकते है:

९७९९८८३२२६ - दुलीचंद कड़ेल, राष्ट्रीय अध्यक्ष
९२१५५०४९९६ - देवकरण जी कुलथिया, वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
९१७९००६००२ - दीपक सोनी, राष्ट्रीय सहसचिव
७९७७०१४५७१ - डॉ. प्रकाश सोनी, स्वर्णकार सेतु, राष्ट्रीय युवा प्रभारी
९३०००१०१२० - शुभम सोनी **-निवेदकः भारतीय स्वर्णकार संघ परिवार**

लूनकरनसर

आदर्श विद्या मन्दिर

जैन दादा बाड़ी

डॉ बी. आर. आंबेडकर राजकीय छात्रावास

बना पीर भैरू जी मन्दिर

कल्पवृक्ष

कालु सरदारशहर श्री डुंगरगढ़ रोड

खेल स्टेडियम

उरमूल हॅण्डीक्राफ्ट शोरूम

मेन बाजार लुणकरणसर

भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केन्द्र

राजीव गांधी सेवा केन्द्र

पावर हाऊस

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय

उत्तरी राजस्थान सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लि.

प्राचीन बावड़ी

दरगाह

प्राचीन बना पीर भैरू जी मंदिर

ऐतिहासिक गणगौर मैदान जंहा गौर पूजन व मेला भरता है

प्राचीन यती जी महाराज छतरी

आस्था हॉटेल

कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय

लूणकरणसर

राव लूणकरण को आधुनिक युग का कर्ण भी कहा जाता है

बीकानेर के यशस्वी शासक राव लूणकरण के दरबार में एक दरबारी हुआ करता था लाला चारण। एक बार किसी कार्य से जैसलमेर जाता है तो वहां के भाटी शासक रावळ जैतसी भाटी से मुलाकात करता है। रावळ जैतसी बातों ही बातों में लाला चारण के सामने मारवाड़ (जोधपुर) और बीकानेर के राठोड़ों का उपहास उड़ाता है। लाला चारण रावळ जैतसी से कहता है, हुकुम आप राठोड़ों के बारे में ऐसा मत बोलो, राठौड़ जब अपनी पे आते हैं तो बड़े बुरे होते हैं।

जैतसी लाला चारण से कहते हैं जा के कह दो अपने राव लूणकरण से की दम है तो मेरे राज्य (जैसलमेर) में अपने घोड़े दौड़ा के दिखा दे, जहां-जहां तक राठोड़ों के घोड़े दौड़ेंगे वहां वहां तक की भूमि मैं ब्राह्मणों को दान दे दूंगा। अपमान की पीड़ा में धधकता लाला चारण तुरन्त बीकानेर लौट के अपने राजा 'लूणकरण' को पूरा वृतांत सुनाया। राव लूणकरण अपनी विशाल फौजों के साथ जैसलमेर रावळ जैतसी पर चढ़ाई करते हैं, ना सिर्फ जैतसी को पराजित करते हैं बल्कि उसे बन्दी भी बना लेते हैं। क्षमादान मांगने पर लूणकरण जैतसी को क्षमा कर उसका राज्य वापस लौटा देते हैं, जैतसी अपनी सभी पुत्रियों का विवाह लूणकरण के सभी पुत्रों से करवा देता है।

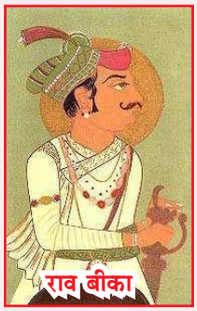

ईसवी सन १५०४ में बीकानेर शहर व रियासत के संस्थापक राव बीका के देहांत के पश्चात उनका ज्येष्ठ पुत्र नरा बीकानेर पर सत्ताशीन होता है, दुर्भाग्य से सत्तारूढ़ होने के कुछ माह बाद ही नरा का देहांत हो जाता है।

निसंतान नरा के देहांत के पश्चात उसका छोटा भाई और राव बीका का छोटा पुत्र लूणकरण २३ जनवरी १५०५ को बीकानेर का अगला शासक बनता है।

'लूणकरण' की रंग-कंवर पूंगलगढ़ (बीकानेर का एक ठिकाणा) के शासक राव शेखा की पुत्री होती है। एक ही वर्ष के अंतराल में नव-निर्मित विशाल साम्राज्य बीकानेर के संस्थापक राव बीका और अगले शासक राव नरा की मृत्यु और उसके बाद राव 'लूणकरण' की ताजपोशी के कारण बीकानेर में राजनीतिक अस्थिरता का दौर हो जाता है, विद्रोही जगह-जगह सर उठाने लगते हैं। महापराक्रमी व शूरवीर 'लूणकरण' अपनी वीरता, साहस, शौर्य, पराक्रम व सूझबूझ से ना सिर्फ अपने विरुद्ध हो रहे षड्यंत्रों को विफल कर देते हैं बल्कि समस्त विद्रोहियों का फन कुचलते हुए अपने पिता स्वर्गीय बीका के मार्ग पर चलते हुए अपने साम्राज्य का विस्तार दूर-दूर तक करते हैं।

२३ सितम्बर १५०९ को 'लूणकरण' ददरेवा (लोकदेवता गोगाजी चौहान की जन्मस्थली जिला चुरू) के शासक मानसिंह चौहान को पराजित कर विशाल ददरेवा परगने को बीकानेर रियासत में मिला दिया और ददरेवा में अपने थाणो (चौकियों) की स्थापना कर दी।

२२ अप्रैल १५१२ को 'लूणकरण' ने फतेहपुर (जैसलमेर) के कायमखानी मुस्लिम शासकों दौलत खां और रंग खां को परास्त करते हुए वहां के १२० गांवों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया और जगह-जगह अपने थाणे स्थापित कर दिए ताकि इस क्षेत्र में कायमखानी दुबारा मजबूत ना हो।

१५१३ में नागौर के शासक मुहम्मद खान ने जब अपनी विशाल फौजों के साथ 'बीकानेर' पर आक्रमण किया तो लूणकरण ने ना सिर्फ उसे करारी शिकस्त दी बल्कि मुहम्मद खान को गंभीर घायल कर वापस उल्टे पांव 'नागौर' लौटने पर मज़बूर कर दिया। १५१४ में लूणकरण ने चायलवाड़ा (सिरसा हिसार के क्षेत्र) के शासक पूना को परास्त कर वहां ४४० गांवों पर बीकानेर का आधिपत्य स्थापित कर लिया और जगह-जगह अपने थाणो की स्थापना कर दी। घायल पूना को भग के भटनेर (हनुमानगढ़/राजस्थान) में शरणागत होना पड़ा। राव लूणकरण की बढ़ती ताकत और बढ़ते साम्राज्य को देख राजपूताने अन्य शासकों के माथे पर चिंता की लकीरें उभरने लगी। कुछ शासक अब राव लूणकरण को रास्ते से हटाने की योजना बनाने लगे। राव लूणकरण का अंतिम सैन्य अभियान १५२६ में नारनोल के शासक शेख-अबीमीरा के विरुद्ध शुरू हुआ, इस युद्ध को ढोंसी अथवा ढोंसा का युद्ध कहा जाता है। राव लूणकरण की विशाल फौजों को देख शेख-अबीमीरा ने उनको संधि प्रस्ताव भेजा, जिसे लूणकरण ने ठुकरा दिया। लूणकरण की सेना के ही छापर/द्रौणपुर के शासक कल्याणमल, अमरसर के शासक रायमल शेखावत और पाटन के तंवरों एवं अन्य राजपूत शासकों ने इस युद्ध में लूणकरण से गद्दारी करते हुए अपनी फौजों को वापस पीछे हटा लिया और कुछ शासकों ने टोला बदल लिया। सैन्य शक्ति क्षीण होने के बाद अब लूणकरण के सामने ढोंसी की रणभूमि से पीछे हटने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं था, किन्तु शूरवीर लूणकरण ने रणभूमि से पीछे हटने के बजाय युद्ध करने का निश्चय किया और शत्रु खेमे के २१ योद्धाओं को गाजर मूली की तरह काटते हुए युद्धभूमि में वीरगति प्राप्त की।

राव लूणकरण को राजपूताने का आखिरी सांस तक युद्ध लड़ने वाला योद्धा कहा जाता है। दानशीलता एवं शूरवीरता के कारण राव लूणकरण को राजपूताने के आधुनिक युग का कर्ण भी कहा जाता है।

राव लूणकरण २८ जून १५२६ को ढोंसी की रणभूमि में खेत हुए थे कुछ जगह यह तिथि ३१ मार्च १५२६ भी लिखी हुई है।

संदर्भ: (१) पुस्तक :- बीकानेर राज्य का इतिहास लेखक :- महोपाध्याय गौरीशंकर हीराचंद ओझा
(२) पुस्तक :- राजस्थान का इतिहास लेखक :- पंडित गोपीनाथ शर्मा
(३) पुस्तक :- राव जैतसी रो छंद लेखक :- बिठु सूजा दरबारी
विदूषक :- राव जैतसी शासक बीकानेर
(४) पुस्तक :- कर्मचंद्रवंशौतकीर्तनकं-काव्यम: लेखक :- जयसोम दरबारी
विदूषक :- राव कल्याणमल शासक बीकानेर

(लूणकरण झील व लूणकरणसर कस्बे (वर्तमान बीकानेर की एक तहसील) की स्थापना राव लूणकरण द्वारा की गई है)

अतीत के आईने में लूणकरणसर

राजस्थान के जिले बीकानेर (छोटी काशी) की तहसील 'लूणकरणसर' जो रियासत कालीन महाराजा लूणकरण के नाम पर बसाया गया था, वैसे तो लूणकरणसर में लूण (नमक) की झील होने का कारण भी इतिहास विद बताते हैं कि नाम 'लूणकरणसर' पड़ा होगा। ऐसा भी समय रहा कि 'लूणकरणसर' में आने वाले व्यक्तियों को पानी की जगह घी पिलाने की बात भी सामने आती है। बताते हैं कि गांव में पीने के पानी का कोई स्रौत नहीं था व बरसाती पानी पर ही जीवन निर्भर था। कठिन समय में यहां पर अपनी बेटी देना काला पानी की सजा हुआ करती थी। समय ने करवट ली। अतीत से वर्तमान को शुरू करते हैं तत्कालीन महाराजा राज राजेश्वर गंगा सिंह जी बहादुर के दूरदर्शी चिंतन ने बीकानेर से कोयले वाली रेल गाड़ी (छूक:छूक गाड़ी) चलाई गई व गंग कैनाल को बीकानेर लेकर आए, तब से कैनाल से सटता इलाका समृद्ध होने लगा, 'लूणकरणसर' भी इससे अछूता नहीं रहा।

शेष पृष्ठ १२ पर...

लूणकरणसर में नमक झील

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

राजस्थान की शान 'लूनकरनसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

सती दादी मंदिर

SUDHIR KUMAR PUNAMCHAND BARDIA
Mob. : 9377729389 / 8905599717

Shree Suparswanth Polypack
Sandeep Trading Company

Shad No. 10/12, Yoheshwar Estate, Near Lalitesswar Mahadev Mandir, Amraiwadi, Ahmedabad, Gujarat, Bharat - 380026

Res. : B/2, Hira Anand Complex, Gordhan Wadi Char Rasta, Kankaria Road, Maninagar, Ahmedabad, Gujarat, Bharat - 380026

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान
नीम लगायें
भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
पर्यावरण बचाये

पृष्ठ ११ से... एशिया की सबसे बड़ी पंचायत होने के साथ ही उन्नत किस्म की मूंगफली की पैदावार ने 'लूणकरणसर' के नाम ने ख्याति अर्जित करवाई। तत्कालीन समय में गुजरात को पीछे छोड़ मूंगफली (सिंग दाना) की सबसे बड़ी मंडी होने का गौरव दिलवाया। 'लूणकरणसर' की समृद्धि के मार्ग खोल दिये, इसके साथ ही रबी, खरीफ, सरसों की पैदावार भी अच्छी होने लगी, 'लूणकरणसर' वर्तमान के आईने में झाँकने लगा। यहाँ पर का अभ्रक जो कि इंडस्ट्री व वायुयान बनाने के काम में आता है वो भी खूब निकलता था जो कि स्थानीय भाषा में (छीलौड़ी) नाम से विख्यात था। समय के साथ उद्योग ने भी अपने पैर जमाये और यहां छोटे-छोटे एक्स्पलर लगे, जिससे सरसों तेल, मूंगफली तेल व सिंग दाने का कार्य शुरू

लूणकरणसर के सरपंच गण

१९५६ से २०२० तक के कार्यकाल में

१.श्री गुमान मल बोथरा
२.हुकमा राम गौड़
३.झूमर दिन मालावत
४.छत मल बरड़िया
५.चंपा लाल चौपड़ा
६.उम्मेद सिंह शेखावत
७.यासीन खां मालावत
८.श्रीमती सरस्वती देवी कलकल
९.श्री पृथ्वीराज कुम्हार
१०.परिवर्तन रफीक मालावत

कपास उत्पादन

हुआ। कपास की फसल होने से रुई व बिनोल की खल का कार्य शुरू हुआ। मूलतः बरसाती पानी से होने वाली फसलें मूंग, मोठ, ग्वार, तिल, तारामीरा, जौ भी प्रचुर मात्रा में होता हैं। यूं तो मिनी डेनमार्क कहे जाने वाले इस क्षेत्र की मुख्य आजीविका कृषि एवं गौपालन पर निर्भर है देश की अनेक छोटी बड़ी डेयरियों ने दुग्ध संयंत्र स्थापित केंद्र बनाए है जो प्रतिदिन ग्रामीण क्षेत्रों से लगभग सवा लाख लीटर दूध

जैतून रिफाइनरी (ऑलिव ऑइल)

का संकलन करती हैं। देश की बड़ी डेयरीयों के साथ मोदी व उरमूल डेयरी का कार्य वृहद है। स्थानीय विकास पर भारत भर की प्रथम व देश की एकमात्र जैतून रिफाइनरी (ऑलिव ऑइल) को इजराइल की पद्दति पर स्थापित की गई जिसमें तेल का उत्पादन होता है, जिसका उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के कर कमलों द्वारा हुआ था। यहां पर ऑलिव के वृक्ष भी लगाए गए, जिनसे मिलने वाले फलों से तेल उत्पादन होता है। तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अलख जगाते हुए महाविद्यालय विद्यार्जन के लिए बनाया गया, जिसमें उपखण्ड मुख्यालय के साथ ही दूर दराज के छात्र भी विद्यार्जन करने आते हैं। छात्र-छात्राओं के लिए यहां राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं व छात्राओं के लिए राजकीय शारदे बालिका में छात्रावास व्यवस्था है जिसमें दूसरे गांवों की ८वीं से लेकर १२ वीं तक की छात्राओं के रहने व अन्य समस्त व्यवस्थायें निःशुल्क हैं। स्थानीय स्तर पर खेल की सुविधाओं

पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूणकरणसर

के लिये भगत सिंह खेल स्टेडियम है। चिकित्सा सुविधाओं के लिये सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र है। पशु अनुसन्धान प्रजनन केंद्र खारिया कुंआ व पशु अस्पताल है। ग्राम पंचायत होने के बावजूद कस्बे में सीवरेज व रोड इत्यादि की माकूल व्यवस्था है। औद्योगिक क्षेत्र में धान मंडी, रीको एरिया, विश्वकर्मा मार्केट व वेयरहाउस प्रमुख

हैं। रेलवे स्टेशन, उपधीक्षक, पुलिस स्टेशन, सीआईडी, तहसीलदार कार्यालय, उपखण्ड अधिकारी कार्यालय, विद्युत विभाग सहायक अभियंता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, जलदाय विभाग, परिवहन विभाग इत्यादि स्थानीय शोभा बढ़ा रहे हैं। वहीं लूणकरणसर क्षेत्र में मीले पोटाश के भण्डार की खबर ने लोगो को आल्हादित किया हैं।

-श्रेयांस बैद
लूणकरणसर

समता भवन लूणकरणसर में

आप सब को अवगत करवाते हुए हर्ष हो रहा है कि परम पूज्य आचार्य भगवन एवम् महापुरुषों की असीम अनुकम्पा से श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के तत्वाधान में लूणकरणसर में समता भवन निर्माण कार्य प्रगति पर है। भूमि का क्रय कर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गौतम जी रांका व श्री जयचन्द लाल जी डागा द्वारा भूमि पूजन होने के उपरांत नीचे की मंजिल के भवन निर्माण का प्राथमिक कार्य प्रगति पर है।

'लूणकरणसर' श्री साधुमार्गी जैन परिवारों की संख्या बहुत कम होते हुए भी अच्छे सहयोग की घोषणा हुई है।

समता भवन में ३६५दिन ही कुछ न कुछ धार्मिक व मानव सेवा की गतिविधि चलाकर भवन की उपयोगिता को सार्थक करने का संकल्प स्थानीय श्री संघ सदस्यों द्वारा किया गया है जिसमें विशेषकर

- समता संस्कार पाठशाला का कार्य
- धार्मिक गतिविधि पौषध संवर सामायिक व समता शाखा आदि का कार्य
- हर वर्ष चातुर्मास एवम् शेष समय में महापुरुषों से ज्ञान ध्यान बढ़ोतरी का अवसर
- धार्मिक संस्कार हेतु ५ से १५ साल तक के बालक-बालिकाओं का सर्वांगीण विकास के साथ जीवनोपयोगी टिप्स व जैन दर्शन के संस्कार देने की नियमित व्यवस्था।
- जन स्वास्थ्य में मूलभूत सुधार हेतु नियमित व्यवस्था। छोटी-छोटी बातों को जीवन शैली में शामिल करवाने के लिए आवश्यक कार्य, जैसे अहिंसक खेती से उत्पन्न अन्न व वनौषधि का उपयोग कर भोजन शैली में बदलाव द्वारा गंभीर बीमारियों से बचाव।
- महिला स्वरोजगार के द्वारा शुद्ध सात्विक सामग्री उपलब्ध करवाने की व्यवस्था। पीड़ित परिवारों में महिलाओं द्वारा गरिमा पूर्ण तरीके से जीवन यापन में सहयोग करते हुए आर्थिक स्वावलंबन में भवन का उपयोग करना, जिससे उनके स्वाभिमान को ठेस न पहुंचे।
- शिक्षण प्रशिक्षण में सहायक बनने में इ-कोचिंग की योजना पर कार्य।
- धार्मिक व सामाजिक कार्यों को गति प्रदान करने वाले समूहों की शक्ति के लिए सेमिनार प्रवचन, व्याख्यान आदि के आयोजन समता भवन में होते रहेंगे। उपरोक्त सभी प्रकार के सेवा कार्यों की भविष्य की आर्थिक संरचना लगभग स्वावलंबी आधार पर होगी, ऐसी रुपरेखा तैयार की गयी है।

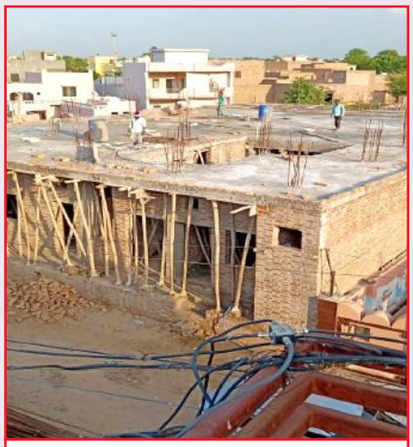

निर्माण कार्य प्रगति पर

-श्रेयांस बैद
लुणकरणसर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है
भाईचारा राजस्थान की गोद में
राजस्थान की शान 'लूणकरणसर' के
ऐतिहासिक प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनाएं

Nikesh Saria

Mob. : 9734111677 / 9733333026

NIKESH ENTERPRIRES

Deal in All Kinds Of Hardware Merchant, Furniture & Govt. Materials Supplier

Pokhriabong Bazar, Darjiling, West Bengal, Bharat - 734216

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान नीम लगायें पर्यावरण बचायें

जैतून की रिफाइनरी की स्थापना के कारण लूणकरणसर का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचा

लूणकरणसर (बीकानेर): लूणकरणसर की स्थापना सन १६०० में बीकानेर के शासक लूणकरण द्वारा की गई थी। यह संयोग ही था कि यहां खारे पानी की झील भी थी और नमक पैदा होता था। नमक को स्थानीय भाषा में 'लूण' भी कहा जाता है, इसलिए कालांतर में इस स्थान का नामकरण झील के कारण होना भी माना गया है। वस्तुस्थिति यह है कि अन्य नगरों की तरह इस नगर का नाम भी राव लूणकरण के नाम से ही पड़ा और सरोवर के कारण 'सर' कहलाया। 'लूणकरणसर' को राजकीय समय में अधिक तहजीब कभी नहीं मिली, इसका बड़ा कारण यह भी रहा कि मलसीसर तक का इलाका बीकानेर राजा के अधीन था, इसलिए यहां 'लूणकरणसर' में कोई अलग शासक नहीं रहा। महाजन अलग रियासत थी इसलिए वहां के अलग राजा थे। 'लूणकरणसर' के विकास की नींव की इमारत तत्कालीन विधायक भीमसेन चौधरी ने रखी और सिंचाई के लिए नहर लाने का सपना देखा, जो मूल रूप से किसान होने के कारण इसकी गंभीरता को समझ सके और तत्कालीन मुख्यमंत्री से संपर्क कर 'लूणकरणसर' इलाके में सिंचाई के सपने को साकार करने में लग गए। कुंवरसेन नामक इंजीनियर को तत्कालीन सरकार ने नहर के सर्वे के लिए लगाया, उसने जो सर्वेक्षण किया उसको भीमसेन चौधरी जी ने आधार बनाया और १९६० के दशक में नहर के सपने को सार्थक बनाते हुए इसके मूल में कार्यरत रहे। कुंवरसेन के नाम पर इसका नामकरण करवाया। प्रचंड रेगिस्तानी इलाके में नहर आने के कारण इलाके की तस्वीर और सूरत बदल गई, जो कि किसानों के लिए वरदान साबित हुई। इंदिरा गांधी मुख्य नहर की २४३ आरडी के बिरधवाल हैड से उद्गम ५५० क्यूसेक क्षमता वाली १५२ किमी. लंबी और राजस्थान की प्रमुख लिफ्ट नहरों में शुमार इस नहर में राजियासर पंपिंग स्टेशन से ५८ फीट, मलसीसर पंपिंग स्टेशन से १९ फीट, खारा पंपिंग स्टेशन से ४८ फीट तथा हुसंगसर पंपिंग स्टेशन से ६२ फ़ीट पानी लाया गया है। इस नहर से बीस माइनरों और ५१ सीधे मोघो से हजारों हेक्टेयर कृषि भूमि की सिंचाई होती है जो कि किसानों की जीवन रेखा कही जाती है।

नहर के पानी के साथ-साथ विकास की अद्भुत इबारत लिखी जाने लगी। लोगों में शैक्षिक जागृति के साथ-साथ आर्थिक समृद्धि भी आई। श्री भीमसेन चौधरी ने स्वामी केशवानंद से संपर्क कर शिक्षा संस्थान खुलवाये, जिसमें उस समय लड़कियों के लिए अद्भुत शैक्षणिक प्रबंध **शेष पृष्ठ १५ पर...**

पृष्ठ १४ से... थे। 'लूणकरणसर' में किसान छात्रावास की स्थापना कर ग्रामीण क्षेत्र के गरीब बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने में अग्रणी भूमिका निभाई। भीमसेन चौधरी के समय में चूंकि संसाधन सीमित थे फिर भी विकास को गति तो मिली, उन्होंने बीकानेर में उरमूल डेयरी व लूणकरणसर में दुग्ध संकलन केन्द्र (चिल्ड पलांट) की स्थापना करवाकर ग्रामीण क्षेत्र में पशुपालकों को आय का स्रोत उपलब्ध करवाया, जिससे उत्तर पश्चिम राजस्थान में स्वेत क्रांति आई। रेगिस्तानी इलाके 'लूणकरणसर' में पेयजल प्रबंध के शालीन प्रयास किये और बड़ी आबादी तक पेयजल पहुंचा कर जनता को लाभान्वित किया। आज भी 'लूणकरणसर' में पेयजल आपूर्ति के प्रकरणों में भीमसेन चौधरी का नाम आदर से लिया जाता है। 'लूणकरणसर' को औद्योगिक व मंडी बनाने में भी उनका योगदान अग्रणी रहा। चौधरी साहब के अधुरे सपनों को युवा नेतृत्व के रूप में भीमसेन चौधरी के पुत्र वीरेंद्र बेनीवाल जी जब राजनीति में आये तो शिक्षित होने के कारण उन्होंने यहां के विकास की रूपरेखा बनाई और इसको सच करने में संलग्न हो गए।

विधायक रहते हुए बेनीवाल जी ने राज्य सरकार से पेयजल एवम विद्युत संबंधी सुविधाओं के विस्तार के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया। मंत्री बनने के बाद बेनीवालजी ने 'लूणकरणसर' में जैतून रिफाइनरी, कृषि विज्ञान केन्द्र, राजकीय महाविद्यालय, बालिका छात्रावास, उपखंड कार्यालय, परिवहन कार्यालय, रोडवेज बस स्टैंड, कस्बे में वाचनालय एवं पुस्तकालय, नरेगा योजना में रेलवे अण्डर ब्रिज, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में ब्लड बैंक व आईसीयू वार्ड की स्थापना एवं खारे पानी से शेष पृष्ठ १८ पर...

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा
राजस्थान की गोद में राजस्थान की
शान 'लूनकरनसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Hiralal Bothra
Mob. : 9379515070

Vinay Bothra
Mob. : 9448735259

Manav Medicare

12 & 12/1, 1st Floor, P.S. Lane, Police Road Cross,
In Front Super Talkies, Ranasingpet,
Bangalore, Karnataka, Bharat - 560053
Phone : 080 - 41304877

Res. : Svasa Homes, Flat No. 1002, 10th Floor,
Tower 2, #13, 15th Main Road, Matha Sharada Devi Road,
K. G. Nagar, Behind BSNL Office,
Bangalore, Karnataka - 560019 Ph. : 080 - 29540045

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

लूणकरणसर के विकास में बोथरा परिवार का योगदान

स्वर्गीय सेठ श्री कोडामल जी बोथरा मेहनती, दूरदर्शी व दयावान व्यक्तित्व के धनी थे, जो सदैव अपने परिवार, गांव के लिए हमेशा तन-मन-धन से सेवा के लिए तत्पर रहते थे। आपका जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। आपके ३ पुत्र थे यथा १. जेठमल २. ठाकुरसीदास ३. नथमल।

नथमल जी बोथरा (स्व.)

स्वर्गीय श्री कोडामल जी बोथरा को एक समय परिस्थितिवश धन उपार्जन के लिए परदेश की ओर रूख करना पड़ा, पहले बंगाल में सिलीगुड़ी गए, वहां श्रीडूंगरगढ़ के पारख परिवार के कारोबार में नौकरी शुरू की, मगर सपना कुछ कर गुजरने का था तो उन्होंने नौकरी छोड़ कर स्वयं का व्यापार करने का दृढ़ निर्णय लिया, यह उस समय की बात है जब संसाधनों का अभाव था, नाममात्र के साधन उपलब्ध थे। व्यवसाय को मूल रूप देने हेतु 'कालिंपोंग' जाने का निर्णय किया, उस वक्त वहां पहुंचना बहुत जटिल व मुश्किल बात थी, क्योंकि वहां जाने का रास्ता पहाड़ों की पगडंडी से ही था। लगभग ४००० फीट ऊंचाई पर पूरा मार्ग, घने जंगल से भरा हुआ था। आबादी बहुत ही कम थी, आदिवासी लोग ज्यादा थे, विकट परिस्थितियों की परवाह न करते हुए अपने जुनून को साकार करने की प्राथमिकता थी। तापमान भी उस समय आज की तुलना में अधिक न्यूनतम रहता था, उस समय तिब्बती

बोथरा हवेली

समुदाय के लोग व्यापार करने के लिए कालिंपोंग आया करते थे। लोग तिब्बत से ऊन आदि का सामान लाते, बदले में कपड़ा, घड़ियां, खाने-पीने के सामान ले जाया करते थे। कोडामल जी सभी व्यापारिक सामान का लेनदेन 'सिलीगुड़ी' से करते थे। पहले वे मात्र एक मन (४० किलो) का पार्सल बनाकर अपनी पीठ पर लाद कर लाते थे। ऐसा कुछ समय तक चलता रहा, कुछ अंतराल के बाद कमाई करके सामान ढुलाई के लिए एक खच्चर खरीदा और उस पर २ भारी पार्सल लाते, एक बोरी अपनी पीठ पर डालकर ले जाते थे। कोडामल जी पूरी ईमानदारी व समर्पित भाव से कार्य करते, जिसका परिणाम कालिंपोंग में उनके नाम का दबदबा व प्रभाव बढा।

भूटान नरेश के साथ श्री जेठमल जी

एक बार पड़ोस की दुकान से कोडामल जी को कुछ शोर सुनाई दिया, उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति लिये गये सामान के पैसे देने से मना कर रहा है, वह बहुत नशे में था और उसने दुकानदार को डराने के लिए चाकू निकाल लिया, जैसे ही वह व्यापारी पर वार करने लगा तभी कोडामल जी वहां पहुंचकर उस व्यक्ति का हाथ पकड़ लिया, इतना जोर से हाथ दबाया कि उसके हाथ से चाकू नीचे गिर गया और नाखूनों से खून आने लगा, जैसे तैसे वह हाथ छुड़वा कर वहां से भाग निकला, उसका सारा नशा रफूचक्कर हो गया, यह दृश्य उस गांव के सभी लोगों ने देखा। कोडामल जी की निडरता व बहादुरी से बहुत प्रभावित हुए, इससे उनकी ख्याति चारों ओर फैल गई, दबदबा कायम हो गया। स्थानीय लोग यह देख कर इतने प्रभावित हुए कि सोचने पर मजबूर हो गए कि एक मारवाड़ी परदेसी ने इतनी निर्भयता और बहादुरी से उसको भगा दिया। कुछ समय पश्चात कोडामल जी ने अपने बड़े पुत्र जेठमल जी को व्यापार में हाथ बंटाने हेतु अपने पास बुला लिया। व्यापारिक गतिविधि बढ़ने लगी, तिब्बत से माल बहुत आने-जाने लगा। तिब्बती ऊन लाते, बदले में खाने-पीने का सामान कपड़ा, घड़ियां, रंग इत्यादि ले जाते। श्री जेठमल जी ने अथक परिश्रम से व्यापार को बहुत ऊंचाई दी। बढते कार्य को देखते हुए अपने बड़े पुत्र गुमानमल जी को भी कारोबार में हाथ बंटाने के लिए बुला लिया। धीरे-धीरे इतना व्यापार बढ़ गया कि गांव से और भी जरूरतमंद भाई-बंधुओं को बुला लिया गया। श्री जेठमलजी व्यापार के साथ-साथ अपने गांव की बहुत चिंता करते थे। तिब्बती लोगों का व्यापार में लेनदेन, हर चीज का लेखा-जोखा मन (४०किलो) के हिसाब से होता था। जेठमल जी ने उस समय खूब जमीनें खरीदी, जिसमें 'लूणकरणसर', बीकानेर, गंगाशहर, सरदारशहर, सिलीगुड़ी, कालिंपोंग, फारबिसगंज आदि स्थानों पर जमीन खरीदी। राजस्थान में अकाल पड़ा तो बीकानेर के तत्कालीन महाराजा गंगा सिंह जी ने जेठमल जी को दरबार में बुलाया और अपनी प्रजा के पालन हेतु जेठमल जी को सुपुर्द कर दिया, कहा कि जब तक अकाल रहे तब तक इनका भरण पोषण करने की जिम्मेदारी आपकी रहेगी। श्री जेठमल जी ने उस वक्त उन ४०० लोगों के लिए दो हवेलियां व एक बावड़ी खोल दी, जिसकी ३०फीट चोड़ाई व लंबाई ४५फीट और गहराई ६ फीट थी।

गांव के कुएं की आपातकाल में मरम्मत करवाई। बावड़ी में बरसात का पानी भर जाता था और वैशाख व जेठ महीने में जरूरतमंद लोगों में बांट दिया जाता था। आसपास के चारों ओर गांव में भी पानी की किल्लत जब होती थी यूं भी कह सकते हैं कि पानी की कीमत दूध से ज्यादा थी, इसके लिए श्री जेठमल जी ने बीकानेर से रोज दो टैंकर पानी मंगवाने शुरू कर दिए, जो कि मालगाड़ी से आते और गांव में बांट देते थे। टैंकर स्टेशन पर पहुंचने से पहले ही बहुत लंबी कतार लग जाती थी। कभी कबार भीड़ के लोग आपस में भीड़ भी जाते थे, इन सबको देखकर महाराजा करणीसिंह जी ने (बीकानेर का वीडियो बनाकर) लोकसभा में पानी की किल्लत पर भारत सरकार का ध्यान आकर्षित किया, समस्या की आवाज बुलंद की। इस प्रकार समय का पहिया अपनी गति से घूम रहा था। गांव के साथ-साथ व्यापारिक स्थल पर भी श्री जेठमल जी की खूब प्रसिद्धि फैल रही थी। कालिंपोंग का काम चल ही रहा **शेष पृष्ठ १७ पर...**

पृष्ठ १६ से... था, इस बीच भुटान राजदरबार में भी मधुर संबंध बन गए। राजा एस.डी. दोरजी लड़की की शादी भुटान महाराजा के साथ तय हुई, दोनों तरफ से राजतिलक के समय भूटान आने का बहुत दबाव रहा, न्योता मिला, जिसमें जेठमल जी ने स्वीकृति दे दी और श्री गुमानमल जी, नारायणचंद जी, नानकराम जी बोथरा व केसरी चंद जी बांठिया को भेजने का तय हुआ, जिसके साथ बीकानेर से रसोडे, हलवाई व काम करने वाले नौकर-चाकर भिजवाने व खाने-पीने का सामान उन पहाड़ी रास्तों से खच्चर में भेजा गया। भूटान की राजधानी पहुंचने में लगभग ३० दिन का समय लगा। व्यक्तित्व के अनुरूप बहुत ही अच्छा इंतजाम था। अपनी तरफ से भी एक भोज का कार्यक्रम रखा गया था, जिसमें सब लोग आए और मारवाड़ी भोजन का आनंद लिया।

पूरा कार्यक्रम भूटान की राजधानी पारो में हुआ। वापसी में श्री गुमानमल जी का पूरे राजकीय सम्मान के साथ सिंहासन पर बिठाकर राजकीय ड्रैस (बखु) व मुकुट पहनाया गया, जो वहां के राजा पहनते हैं तथा आपस में काफी उपहारों का आदान-प्रदान हुआ। श्री नारायण चंद जी, श्री नानक राम जी व श्री केसरी चंद जी को भी भूटान की ड्रेस पहनाई गई व उपहार दिए गए। चारों को चांदी की कटार भेंट की गई। कालिंगपोंग से कुछ समय बाद गुमानमल जी 'लूणकरणसर' आए, गांव के लोगों ने उन्हें सरपंच के रूप में नवाजा। गुमानमलजी ने अपने कार्यकाल में बहुत ही उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण कार्य किए, जो गांव कभी नहीं भुला सकता। इस दौरान पंचायत भवन जो आज भी स्टेशन से अपनी गौरवगाथा बयां कर रहा है। ऊपर से अनुमति लेकर लोगों को पट्टे दिए गए। कुछ लोगों के पास असुविधा होने के कारण गुमानमल जी ने स्वयं पेमेंट कर उन्हें पट्टे दिए। पूरे परिवार द्वारा गांव के विकास में अथक सहयोग दिया गया।

सरकारी स्कूल, हॉस्पिटल, ओसवाल पंचायत, तेरापंथ भवन, हॉस्पिटल में नर्स क्वार्टर आदि उल्लेखनीय योगदान, सरपंच कार्यकाल की आज भी बहुत प्रशंसा होती है। श्री जेठमल जी के छोटे भाई श्री ठाकुरसी दास जी हमेशा 'लुणकरणसर' में ही रहे। तीनों भाइयों के परिवार की देखभाल के साथ पूरे गांव की सेवा में तत्पर रहते थे। देसी दवाई निशुल्क देते थे। असहाय रोग व आसपास गांव के लोग आकर बीमारी की दवाई लेकर आराम पाते थे, इसके अलावा आसपास के गांवों के लोगों को किसी भी समारोह के लिए रजाई बिस्तर बर्तन इत्यादि उपलब्ध करवाते थे। शादी विवाह इत्यादि श्री जेठमल जी के छोटे भाई श्री नथमल जी व छोटे पुत्र श्री सोहन लाल जी दोनों काका भतीजा बड़े सरल स्वभाव में समाज, धर्म व महाराज की सेवा आदि का कार्य करते थे। वैसे 'लूणकरणसर' एक पावन धरती रही है यहां तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य तुलसी तीन बार, आचार्य महाप्रज्ञाजी महाश्रमण जी अपने धर्म संघ के साध्वियाँ के साथ कई बार पधारना हुआ। साधु-साध्वियों का चातुर्मास लगभग बहुत लंबे समय से निरंतर 'लूणकरणसर' में होता रहता है। बोथरा परिवार तेरापंथ धर्म संघ और सर्व समाज के प्रति आस्थावान रहा है और आज भी आस्थाशील है। एक विशेष उल्लेख आचार्य श्री तुलसी की प्रथम मुंबई यात्रा के समय रास्ते की सेवा में पूरे परिवार द्वारा दो गाड़ियां बराबर बम्बई तक चली, जो उस वक्त के हिसाब से बहुत बड़ी बात थी। आचार्य श्री लूणकरणसर प्रवास में सदैव हवेली में ही विराजित रहे। वे बहुत ही कट्टर धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आचार्य श्री तुलसी के साथ उनका बहुत अच्छा तालमेल था और उनके दालिम चरित्र में गुरूदेव ने नथमल जी पर दो छंदों को समर्पित किया है।

बोथरा परिवार के कुलदेवता श्री जैतसी दादोसा महाराज की समाधि, तकरीबन २५० वर्षों से भी पुरानी है, जिसका सन २००५ में जीर्णोद्धार श्री सोहन लाल जी बोथरा के पुत्र उमेद मल जी बोथरा के द्वारा एक भव्य मंदिर के रूप में करवाया गया। जिसमें भाई सुरेंद्र जी बोथरा पुत्र श्री दुलीचंद जी बोथरा का पूर्ण सहयोग रहा। २००५ भादवा सुदी सप्तमी को वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जाने लगा। दादोसा महाराज की कृपा से आज भी वह वार्षिक उत्सव गतिमान है। बोथरा परिवार का हर सदस्य समाज सेवा के लिए तैयार रहता है। लुणकरणसर में १९४२ में मुंशी पट्टी बोर्ड का गठन किया गया था। जिसमें चेयरमैन स्थानीय तहसीलदार व श्री जेठमल जी बोथरा को वाइस प्रेसिडेंट नियुक्त किया गया था। इसके अलावा सब असिस्टेंट सर्जन खेतसीदास जी बूचा, सेठ तोलराम जी बरडिया व सेठ गुमानमल जी बाफना, सेठ कालूराम जी राखेचा, सुगन चंद जी अग्रवाल, पंडित कुशल रामजी आदि लोग थे।

राजस्थान कैनाल आने से पहले 'लूणकरणसर' के एक थान पर हर परिवार ने अपनी-अपनी कुईयां बनाई हुई थी गायों को पानी पिलाने के लिए, लेकिन गायों के आने के बाद बहुत ख्याल रखना पड़ता था। एक कूई का पानी पीने के बाद अगर वह गाय गल्ती से उसी दिन अगर दूसरी कूई का पानी पी ले तो वहीं उसकी मृत्यु सुनिश्चित थी अर्थात् एक टाइम में एक ही कूई का पानी पीना पड़ता था, यह भी प्रभु की एक विचित्र लीला नहीं तो और क्या है?

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को हिन्दी ही बोला जाए

शहीदों की पावन भूमि 'लूनकरनसर' के इतिहास प्रकाशन पर 'मेरा राजस्थान' परिवार को धन्यवाद
Mukesh Bucha Mob. : 7304096714 / 9511801581
Vinod Bucha Mob. : 9832438385 / 9932413963
Vikas Bucha Mob. : 9372397829 / 7020870814
SHREE JAIN PLYWOOD
Student Shop
Mangalam Tea Company
Office :- Shop No. 2, Opp. Coal Depot, Nikalas Mandir Road, Itwari Bhaji Mandi, Nagpur, Maharashtra, Bharat - 440002
Rangli Bazar, Sikkim, West Bengal, Bharat - 737131
Godawan :- Plot No. 140, Kohle Lay- Out, Khadgoan Road, Wadi, Nagpur, Maharashtra, Bharat - 440023
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

सोन सुरजियो कविता

सोन सुरजियो देश आपणों, चानणियों चमकाणों है।
उढ, भारत रा जो धनवान (२) फिर भारत देश बणाणो है।।

रोजीना रा रगड़ा झगड़ा, उत्पात्यांने भगाणों है।
वोटा रा सौदागर, बाँने, देश रो हित समझाणो है।।
गोमाता री करणी सुरक्षा, दुध नदी बहाणो है।
खाल बाल गौपाल रो भारत, फिर इक बार बणाणों है।
उढ भारत रा जवान (२) फिर भारत देश बणाणो है।।

मन्दिर नहीं अब भाई म्हारा, राम राज ही लाणो है।
आदर्शा री अलख जगा, भाई चारो बढ़ाणो है।।
जात पाँत और सम्प्रदाय रो, रगड़ो झगड़ो मिटाणो है।
देश रे हर इक नागरिक ने, भारतीय बणाणो है।।
उढ भारत रा जवान (२) फिर भारत देश बणाणो है।।

दुनिया ने शुन्य देने वालो, फिर विश्व गुरू बणाणो है।
हीराँ री पहचान कराई, देश ने हीरो बणाणो है।
सादा जीवन उच्च विचार, विवेकानंद बण जाणो है।
देश भक्ति सू ओत प्रोत, फिर सुभाष प्रकटाणो है।
उढ भारत रा जवान (२) फिर भारत देश बणाणो है।।

ओ कलाम से देश ऑपाणो, नहीं कोई सूं डरणो है।
महाराणा सी आन राखणी, ओर जुल्म नहीं सहणो है।।
रंग दे बासन्ती चोलो ऐ मॉय, फिर इक बार गुज्जाणो है।
भगत सिंह री देश भक्ति, बो बायरियो बहाणो है।
उढ, भारत रा जवान (२) फिर भारत देश बणाणो है।।

महावीर री सत्य अहिंसा वालो देश बणाणो है।
पण कोई आँख दिखावे तो, गाण्डीत चारण करणो है।।
कबीर नानक तुलसी दास रो, खर सरगम लहराणो है।
जो जुल्म होवण लागे तो, महाभारत रचाणो है।
उढ, भारत रा जवान (२) फिर भारत देश बणाणो है।।
उढ रहा भारत रा जवान 'इंडिया' हटाणो है
उट रहा भारत रा जवान 'भारत' देश बणाणो है

- नेमीचन्द सिपानी
उदयरामसर/बेलुड़, हवड़ा

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

पृष्ठ १५ से... निजात दिलाने के लिए सरकार से शुद्ध पानी के लिए आरो प्लांट स्वीकृत करवाने सहित ऐतिहासिक कार्य अपने नाम किया और श्री बेनीवाल जी ने 'लूणकरणसर' का नाम राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया।

५६ गांव के अवाप्ति आदेश को निरस्त करवाया। श्री वीरेन्द्र बेनीवाल ने 'लूणकरणसर' विधानसभा सहित जिले के ५६ गांवों की भूमि को सेना के उपयोगार्थ अवाप्ति प्रस्ताव को वर्ष २००७ में २८ जुलाई के दिन ही केन्द्र सरकार से निरस्त करवाए। बेनीवाल जी के अथक प्रयासों से क्षेत्र के ५६ गांवों के हजारों लोगों को उजड़ने से बचाकर ऐतिहासिक कार्य किया, उन्होंने अवाप्ति आदेश रदद् करवाने से पहले राज्य की भाजपा सरकार द्वारा प्रस्तावित

रेलवे अण्डर ब्रिज

५६ गांवों के विकास कार्य पर लगाई गई रोक भी हटवाकर विकास कार्य चालू करवाये थे।

जानकारी हो कि सन् १९८४-८५ में तहसील के ३४ गांव सेना के लिए अवाप्त हुए थे।

'लूणकरणसर' में पुलिस ट्रेनिंग सेन्टर भी स्वीकृत करवाया गया। क्षेत्र के युवाओं को रोजगार के प्रति जागरूकता व आम लोगों की आय बढाने की सोच के साथ ही 'लूणकरणसर' कस्बे में पुलिस ट्रेनिंग सेन्टर (पीटीएस) प्रस्तावित कर जमीन भी आरक्षित की गई थी लेकिन २०१४ में प्रदेश में सरकार बदलने व बेनीवाल जी के हारने के कारण पीटीएस को बीकानेर में स्थापित कर दिया गया।

लूणकरणसर
मूंगफली की मण्डी

राव लूणाजी के नाम पर बीकानेर स्टेट के तृतीय राव (राजा) लूणाजी सोलहवीं सदी में हुए थे। पुख्ता जानकारी तो नहीं मिल पाई है लेकिन अधिकांश लोगों का यही मानना है कि 'लूणकरणसर' उन्हीं के नाम पर सोलहवीं सदी में बसा था। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि पहले यहां लूण (नमक) निकलता था, इसलिए इसका नाम 'लूणकरणसर' पड़ गया। पहले पीने के पानी की यहां भयंकर समस्या थी, लेकिन सन् १९७५ में कवरसेन लेफ्ट का पानी 'लूणकरणसर' क्षेत्र के कुछ गांवों को पीने तथा सिंचाई के लिए उपलब्ध होने से क्षेत्र का कायाकल्प होने लग गया। नहर का पानी आने के पहले लोग घरों में बरसात का पानी इकट्ठा करने के लिए बावडीया बनाते थे, इसके अलावा पीने के पानी के लिए बीकानेर से रोजाना रेल से एक टंकी पानी आता था, जिससे गांव के लोगों को घरों में पानी का वितरण किया जाता था। यहां के पुराने मंदिरों में जैन मंदिर, ठाकुर जी मंदिर व शिवजी का मंदिर है, जिनके पुजारियों को पूजा-पाठ करने हेतु मंदिर की जमीन मिली हुई है। इसके अलावा भोमियाजी मंदिर, राणीसति मंदिर, गोगाजी मंदिर व हनुमान जी का मंदिर भी स्थापित है। यहां २००-२५० साल पुरानी मस्जिद भी है, पिछले पचास वर्षों में करीबन ३-४ मस्जिदें और बन गई है।

सन् १९४२ में बीकानेर स्टेट द्वारा यहां नगरपालिका घोषित की गई थी। १९५६ तक पंचायत व्यवस्था लागू होने तक क्रियाशील थी। सन् २००८ में नगरपालिका घोषित की गई जो २००९ में फिर ग्राम पंचायत बना दी गई। सन् २०११ की

कार्यालय
मिनी सचिवालय मुख्यमंत्री आदर्श ग्राम पंचायत

जनगणना में पंचायत की जनसंख्या तीस हजार थी जो वर्तमान में चालीस हजार करीबन है। राजस्थान में सबसे बड़ी पंचायत है।

अन्तिम सांस लेती राजस्थान की मूंगफली की मण्डी

चूंकि पहले नहर के पानी की बारी लूणकरणसर में ७ रोज से आती थी लेकिन अब पानी की बारी १५-२१ रोज में आती है। एक बारी में जिसके पास २५ बीघा जमीन है मुश्किल से ५ बीघा ही सिंचित हो पाता है, इसलिए पानी की कमी से मुंगफली उत्पादन में भी कमी आयी है।

मूंगफली की मण्डी

हरिरामजी मंदिर

शिव जी मंदिर

गणेश मंदिर, मण्डी

श्री गोगाजी मंदिर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

राजकीय महाविद्यालय

'लूनकरनसर'
के इतिहास प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान'
परिवार को धन्यवाद

Manish Kamalji Rakhecha
Mob. : 9341175725

Dagas Shop

Shop # 53, 4th Floor, Ajitnath Complex, O.T.Pet,
Bengaluru, Karnataka, Bharat 560053

Res.# 67, 2nd Floor, 4th Cross, 1st phase,
2nd Stage, Chandra Layout, Vijayanagar, Attiguppe,
Bengaluru, Karnataka, Bharat 560040
e-mail : manishrakhecha 11@gmail.com

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पधारो सा

दर्शनार्थ

श्री जैतसी धाम लूणकरणसर

धरम अर दर्शन रो समाज में हमेसा प्रमुख स्थान रैयो है। धरम समाज में ही आगै बढे है क्यूं कै धरम नै पाळै-पोसै अर बढ़ोतरी समाज ई करै। इण सूं स्वाभाविक है कै धरम स्थल समाज सूं अळग नी रैय सकै।

जैन धरम री प्रमुख विशेषता आ रैयी है कै औ चतुर्विध संघ रै अधीन रैय नै आपणो काम करै। चतुर्विध संघ में साधु-साध्वी अर श्रावक-श्राविका रो समावेश व्है है। इ कारण जैन धर्म अर मिन्दरां रै मांय चतुर्विध संघ री गतिविधियां इ शिल्पांकन रा विषय रह्या है।

किणी भी सम्प्रदाय रो देवप्रसादां रो निर्माण करावण वाळा अर करण वाळा मिनख ही'ज तो है। अर मिनख अेक सामाजिक प्राणी है। मिन्दरां अर धाम रै बणवां रै बाद मिनख ई'ज पूजा, अर्चना, उपासना करण रै वास्तै उठे आवै है। इणी तरयां सूं ई मिन्दर मानव समाज रा केन्द्र बिन्दु रैया है। इण भांत मिन्दर सामाजिक जीवन सूं बच्यो किण भांत रैय सकै। मिन्दर मात्र भगवान री उपासना करण रा केन्द्र ईज नीं है, अपितु शिक्षा रा मोटा केन्द्र भी रैया है। समाज मांय धर्म गुरू अर आचार्य आदि रो पर्याप्त मान अर प्रतिष्ठा रैवण सूं इणा री मूर्तियां अर पगल्यां ई जैन मिन्दरां मांय प्रतिष्ठित हुया है। इणी भांत परम श्री जैतसी दादोजी महाराज, जिका जैन समाज में बोथरा परिवार रा कुलदेव है, उणां ने समर्पित, उणा री समाधि स्थल पर 'श्री जैतसी धाम' बणायो गयो है। उणा री किरपा सूं बोथरा समाज फल-फूल रैयो है। अबै तो बोथरा परिवार इत्तो सम्पन्न अर विगसाव कर लियो है के समाज में उणा री प्रतिष्ठा है। औ परम 'श्री जैतसी महाराज' रो प्रताप है। सगला उठता-बैठता, सोंवत्ता-जागता हर बगत दादोजी रो स्मरण करता रेवै। उणा री किरपा री याचना करता रेवै। बोथरा परिवार रा जिका लोग-बाग बारै आपरो काम-धन्धो करे बै भी जद अठै पधारै तो इ धाम रो धोक जरूर लगावै अर आशीर्वाद मांगै। ओ बोथरा परिवार रो बड़प्पन है कै उणा आपरै कुलदेव रो धाम अठे बणायो है। आ सांची है कै आवणवाळी पीढ़ियां दादो जी री किरपां सूं ओर भी फल-फूलसी।

'मेरा राजस्थान' पत्रिका (पोथी) जिकी परम कुलदेव श्री जैतसी महाराज नै समर्पित है। मांय दादो सा री मैमां (महिमा) प्रकाशन सूं समझ सकां हां। दादो सा रो आशीर्वाद आर किरपा चाहीजै। प्राचीन इतिहास री पिछाण हुवै। श्री सरदार बाघ जी चौहान जैन धरम धारण करयां पछै बाघमल जी बोथरा रै नाम सूं प्रसिद्ध हुया।

म्हानैं घणो हरख हुयो के 'लूणकरणसर' रा बोथरा परिवार इण पोथी बाबत दो आखर लिखण रो अवसर दीनों। म्हानैं भरोसो है कै परम श्री जैतसी महाराज आपरी दिव्य शक्ति सूं उणा री शरण में जावण वाढ्णं री बिनती स्वीकार करैला अर दुखड़ा मिटावैला। आपां सगला दादो सा नै नमन करां अर उणा रो आशीर्वाद लेवां। जय श्री जैतसी दादोसा, जय श्री जैतसी धाम।

-रामजी लाल घोड़ेला
लूणकरणसर

कुरजां को भी अच्छा लगता है लुणकरणसर

साइबेरियन सारस, क्रौंच (कुरजां)

कुरजां: एक अप्रवासी पक्षी, पर राजस्थान की संस्कृति व लोकगीत-संगीत में रचा बसा एक अपना सा नाम। विगत काल में घर के पुरूष रोजी-रोटी के लिए परदेश चले जाते थे। तत्कालीन समय में आवागमन व संचार के माध्यम बहुत सीमित थे, इस कारण महीनों-बरसों लग जाते थे, परदेशियों से संदेश-समाचार प्राप्त होने में। अनिश्चितता बनी रहती थी कि न जाने कब लौटेंगे वो, जो परदेश गये हैं।

जब सूरज की किरणें शीतल होने लगती है, गांव के तालाब पर कुरजां के आगमन की सुगबुगाहट होने लगती है तो अपने साजन से बिछड़ी, विरह वेदना में विकल होती सजनी, कुरजां से अपने साजन का सन्देश लाने को कहती है, क्योंकि वह जानती है कि कुरजां हजारों कोसों दूर से आती है और उसके साजन भी घर से हजारों कोस दूर रहते हैं।

'सपनो जगाये आधी रात में
तने मैं बताऊं मन री बात रे,
कुरजां रे म्हारे भंवर से मिला दे
सन्देश म्हारे पिऊ ने पुगा दे'

रूस का ठण्डा प्रदेश कुरजां का मूल आवास है, जब इन इलाकों में जाड़ा अपने उच्च बिन्दु पर पहुंच जाता है तो ये पक्षी हजारों किलोमीटर की यात्रा कर एशिया के कम ठण्डे इलाकों में आकर अपना अस्थायी निवास बनाते है। बसंत ऋतु के आसपास जब यहां गर्मी दस्तक देने लगती है तब कुरजां अपने मूल घर को लौटने लगता है। राजस्थान में जोधपुर, फलौदी, बीकानेर व अन्य स्थानों पर झीलों के किनारे, सर्दियों के मौसम में यह अप्रवासी पक्षी 'कुरजां' को विचरण करते देखा जा सकता है। वी के आकार में विचरण करने वाले इन पक्षियों का पूरी रात कोलाहल सुनाई देता है।

बीकानेर की 'लुणकरणसर' तहसील में कृत्रिम झील पर कुरजां का अच्छा खासा जमावड़ा देखा जाता है। थोड़ी बहुत संख्या में कोलायत व गजनेर की मीठे पानी की प्राकृतिक झील पर भी इनको देखा जा सकता है।

लुणकरणसर में दर्शनार्थ श्री लक्ष्मी नारायणजी का मंदिर

लूणकरणसर को १५०५ से १५२६ के बीच राव लूणकरण जी ने बसाया। तत्कालीन बीकानेर रियासत में लूणकरणसर केंद्र शासित था व सीधे राजशाही से जुड़ा था। कस्बे में श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर जो की प्राचीन है व आस्था व विश्वास का केंद्र है, जिसकी पूजा अर्चना का कार्य गौड़ ब्राह्मण कर रहे हैं, जिनको पंडा पदवी मिली है। मंदिर के प्राचीन स्वरूप की जगह जन सहयोग से नूतन स्वरूप ने लिया है।

पंडा परिवार द्वारा नियमित सेवा पूजा अर्चना बारी के अनुसार की जाती है जो निम्नानुसार है।

श्री लालचंद गौड़, श्री अश्विनी गौड़, श्री शिव कुमार गौड़, श्री धनपत गौड़, श्री शुभकरण गौड़, श्री सुभाष गौड़ (दादा), श्री गौरव गौड़।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
!! श्री करणी कृपा !!

'लूणकरणसर'
के इतिहास प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान'
परिवार को शुभकामनायें
श्री पार्वती ऑयल इण्डस्ट्रीज
५१ ब्राण्ड तेल, मूंगफली दाना के निर्माता
भ्रमणध्वनि : ९४१४४५०३२४ (बी) ९४१४४५००६८(एस)
९४१४४६८६२६ (पी) ९४१३६८२७८९ (एम)
एफ-५४,५७ आधौगिक क्षेत्र, लूणकरणसर,
बीकानेर, राजस्थान, भारत - ३३४६०३
टेलीफैक्स : ०१५२८ - २७२०७३
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान
भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

धर्मस्थल लुणकरणसर

शनिदेव मंदिर

श्री शीतला माता मंदिर

गुरु जम्भेश्वर मंदिर

श्री करणी माता मंदिर

श्री करणी माता

श्री संतोषी माता

बाबा रामदेव मंदिर

श्री भैरव मंदिर

नखत बन्ना सा मंदिर

श्री गोगा मेडी

श्री ब्रह्माणी माता मंदिर

दादी महाराज का पोता रामायो जी गायों को खेतों में चरा रहे थे, तब नाग देवता ने उनको डसा, दादी महाराज ने अपने पोते के साथ अग्नि में प्रवेश किया, उनके साथ रामायो जी की माँ छोटी दादी महाराज ने भी अग्नि में प्रवेश ले लिया। रुणेचा धणी पर परम आस्था रखने वाले इस परिवार पर बाबा रामदेवजी महाराज की बड़ी अनुकंपा रही और रामसा ने इनको अपने चरणों में स्थान दिया।

'उद्देशिया' गांव के पहले निज मंदिर के पिछे बसा था। गांव में आये दिन आग लग जाती थी, तब गांव वाले छोड़ कर जाने लगे, तब दादी ने फ़रमाया कि गांव को मंदिर के आगे बसाओ, फिर गांव वालों ने मंदिर के आगे गांव को बसाया, उसके बाद कभी भी गांव में आग नहीं लगीं। दादी महाराज के मानने वालों को आज भी पर्चे मिलते रहते हैं। प्रमुख धार्मिक स्थल मंडी परिसर में बने भव्य श्री गणेश जी मंदिर के साथ रियासत कालीन बने शिव मठ, श्री ठाकुर जी राधा कृष्ण भगवान मंदिर, श्री हनुमानजी मंदिर, श्री जैन मंदिर, श्री करणी माता मंदिर, श्री क्षेत्रपाल भैरव नाथ मंदिर, प्राचीन श्री गोगा मेडी, गुरु गोरक्ष नाथ मंदिर, जुझार दादा मंदिर, नखत बन्ना सा मंदिर, श्री रामदेव बाबा मंदिर, ब्राह्मणी माता मंदिर, जसनाथ जी मंदिर, गुरु जम्भेश्वर मंदिर आदि दर्शनार्थ है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

लूणकरणसर निवासी सरिया परिवार की पूजनीय सती दादीजी की संक्षिप्त जीवनी

लूणकरणसर में श्री सती दादीजी का आगमन शुभ संवत १८५५ शुभ मिति सावन बदी छः (छठ) को हुआ था। श्री सती दादीजी का विवाह झीलोत ग्राम निवासी डाडमजी के पुत्र श्री जसमलजी के साथ करीब आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व हुआ था। दादीजी का नाम नौरंग दादीजी था। विवाह के करीब छः माह बाद घरवालों तथा कुलपुरोहित के काफी मना करने पर भी उनकी बात अनसुनी करके जसमलजी अपने ससुराल बहु को लिवाने के लिए प्राणों से प्यारी सफेद घोड़ी पर सवार होकर चल दिये।

लेकिन भाग्य का लिखा कौन टाल सकता है ? अनहोनी घटना हो ही गई। रास्ते में दुश्मनों से भेंट हुई, काफी युद्ध होने के बाद भी उन्होंने जसमलजी का कत्ल कर दिया। कत्ल होते ही जसमलजी की सफेद घोड़ी पर लाल खून की धारा बह चली। उसी हालत में घोड़ी जसमलजी के ससुराल पहुँची और दीवारों से सिर फोड़-फोड़ कर रोने लगी। दादीजी ने अपने पीहर में घोड़ी की ये दशा देखी तो उनका हृदय भय से काँप उठा और उन्हें यह पहचानते देर नहीं लगी कि यह घोड़ी और किसी की नहीं बल्कि उनके पति जसमलजी की है। अतः दादीजी ने आर्त स्वर में घोड़ी से पूछा कि उसकी यह हालत किसने की है? तब उस घोड़ी ने सबको आश्चर्य चकित करते हुए दादीजी तथा उनके पीहरवालों के सामने मनुष्य की भाषा में सारी घटना कह सुनाई कि किस प्रकार जंगल में जसमलजी का दुश्मनों ने कत्ल कर दिया। दादीजी ने इतना सुनते ही विचार किया कि "मैं भी अपने पति के साथ सती हो जाऊँगी" और उनमें सतीत्व जागृत हो उठा। उन्होंने घरवालों को रोने-धोने से मना किया और सांत्वना प्रदान कर सती दादीजी और उनके पीहरवाले, सब घोड़ी के साथ श्री जसमलजी के मृत शरीर के पास पहुँचे, फिर दादीजी ने जंगल में लकड़ी इकट्ठा करवा कर चिता बनवाई और उस चिता में पति के सिर को अपनी गोद में रखकर सावन सुदी छठ को सती हो गई। दादीजी के सती होने के बाद दादी के पीहर वाले घोड़ी को अपने साथ घर ले आये और उसे अपने अस्तबल में बाँध दिया। घोड़ी अपने मालिक की हत्या के बाद इतनी दुःखी थी कि उसने अन्न-जल त्याग दिया और दिन-रात अश्रुपात करती रही। अचानक भादवा कृष्ण पक्ष की अष्ठमी को घोड़ी के बन्धन अपने आप खुल गये। बन्धन खुलते ही घोड़ी दादीजी के ससुराल जसमलजी की माँ के पास दौड़ते-दौड़ते आई। घोड़ी को इतने दिनों के बाद इस अवस्था में और वह भी जसमलजी के बिना अकेली को देख बूढ़ी दादीजी भयभीत हो गई और बिलख-बिलख कर घोड़ी से पूछने लगी "तू मेरे पुत्र को कहाँ छोड़ आई हो, मेरी पुत्रवधु कहाँ है? उनके इस प्रकार विलाप करने पर घोड़ी ने रोते-रोते फिर मनुष्य की भाषा में सारा वृतान्त कह सुनाया कि किस प्रकार उनकी बहु श्रीजसमलजी के संग सती हो गई। इतनी सब बातें सुनने के बाद बूढ़ी दादीजी का हृदय भी सती होने के लिये पसीज गया। अतः उन्होंने हाथ जोड़कर अति कातर स्वर में प्रभु से अपने पुत्र तथा पुत्रवधु के साथ सती होने के लिये प्रार्थना की। कृपालु भगवान ने उनकी प्रार्थना उसी वक्त सुन ली और उनको सत् की शक्ति प्रदान हो गई।

बुढ़ी दादी के घर एक जाट पुत्री रहा करती थी। उसका भी अपने मालिक के प्रति बड़ा स्नेह था। उसने सोचा कि यदि मेरे मालिक ही नहीं रहे तो मैं अकेली किसके सहारे जीऊँगी? अतः उसने भी करुण पुकार से प्रभु को शीघ्र ही प्रसन्न कर लिया और प्रभु ने उन्हें भी मालिक के संग सती होने के लिये सत् की शक्ति प्रदान कर दी। जाटनी घोड़ी के संग जंगल में पुत्र जसमलजी और पुत्रवधु के पास जाने लगी शेष पृष्ठ 24 पर...

लुणकरणसर में ब्राह्मण समाज व भवन

ब्रह्मणी मंदिर

लूणकरणसर का क्षेत्र भडांन के नाम से प्रसिद्ध रहा है। यहां के मतीरे, काकड़ीये, गवार, बाजरी, मोठ प्रसिद्ध रहे हैं। यहां का क्षेत्र कृषि प्रधान व पशुधन के लिये जाना जाता है व यहां की राठी नस्ल की गायें भारत प्रसिद्ध है। लूणकरणसर के चौतीस गांव सेना द्वारा आवाप्त किये गये है, जहां के लिए कहा जाता है कि यह जगह एशिया की सबसे बड़ी फिल्ड फायरिग रेन्ज के रूप में काम आ रही है। 'लूणकरणसर' में ठाकुरजी का भव्य मन्दिर है व पुराना शिव मठ भी है, जिसके शिलालेख की भाषा समझ नहीं आ रही है। बीकानेर से पहले लूणकरणसर बसा हुआ है। यहां पर लगभग सभी समाज की धर्मशाला व भवन बने हुए है। ओसवाल समाज, जाट समाज, विश्नोई, समाज, गुसाई समाज, नाथ समाज, जसनाथी समाज, कुम्हार समाज, जीनगर समाज, ब्राह्मण समाज। ब्राह्मण विकास संस्थान में उन सभी की भागीदारी है जो ब्राह्मण केटेगरी में आते हैं जैसे सारस्वत, गौड़, गुजर गौड़, खण्डेलवाल, सेवग, पुस्करणा सभी को शामील किया है। अच्छा भवन बना हुआ है। समाज सेवी सीताराम जी सारस्वत कालू निवासी द्वारा माता का भव्य मन्दिर बनाया जा रहा है, जिसके पहले अध्यक्ष समाज सेवी श्री जगदीश जी पारिक थे व दूसरे अध्यक्ष श्री हजारीप्रसाद सारस्वत व तीसरे अध्यक्ष अजय गौड़ बने, जिनके कार्यकाल में माताजी के मन्दिर का भूमि पूजन हुआ जो आज सर्म्पुणता की तरफ है। चौथे अध्यक्ष श्री प्रभुदयाल सारस्वत हैं।

पृष्ठ 23 से... तो गाँव वाले उनके साथ हो लिये और जंगल में जसमलजी और पुत्रवधु की चिता के पास गाँव वालों की मदद से समिधा इकट्ठा कर अपनी अलग-अलग चिता बनवा ली और सूर्य भगवान से प्रार्थना कर अग्नि प्राप्त कर ली और सती हो गई। अन्त में घोड़ी भी बूढ़ी दादीजी (नौरंग दादीजी) की जलती चिता में समा गई और सती हो गई।

सती होने बाद गाँव वालों को आकाशवाणी हुई कि आज के पाँचवें दिन हमारी चिताएं सम्भालना, यहाँ पर तीन देवरी (शिलाएँ) मिलेगी, उन्हें कच्चे दूध सें स्नान करा कर एक मन्दिर बनवाना है उसमें बीच में एक दिवाल लगा कर दोनों देवरी को अलग-अलग स्थापित करना है। जाटनी दादीजी को मन्दिर के बाहर की तरफ चबूतरे पर दाहिनी तरफ स्थापित करना है। सभी बातें गुरु वशिष्ठ के परामर्श लेने के बाद ही स्थापना करनी है, उसी दिन परिवार की एक पाँच साल की कन्या के मुख से दादीजी ने सभी को कहा कि "आज से गर्ग गोत्र परिवार वालों की कुलदेवी (श्री सती दादीजी) के रुप में जानी-मानी जाउंगी। उसी दिन से गर्ग परिवार वालों ने श्री सती दादीजी की पूजा अर्चना शुरु कर दी। "प्रत्येक महीने की चाँदनी छठ और अंधेरी अष्ठमी तिथि को मेरी पूजा होगी।"

दर्शनार्थ मंदिर

विदीत हो कि झीलोत गाँव में दादीजी के प्राकट्य के करीब २५० साल बाद अकाल पड़ गया, पीने का पानी मिलना भी दूभर हो गया तो सरिया परिवार वालों ने श्री सती दादीजी से प्रार्थना की, कि हमारी रक्षा करें, हम आपकी शरण में हैं हमें रास्ता सुझायें। तब सती दादीजी ने कुँवारी कन्या के मुख से कहा कि "तुम लोग पश्चिम दिशा की तरफ जाओ वहाँ 'सर' नाम की भूमि तुम लोगों के लिए वरदान साबित होगी और तुम लोगों को वहीं बसना है। उस गाँव के नाम से तुम लोग गर्ग गोत्री 'सरिया' जाने जाओगे। "उस दिन बैलगाड़ियों (बलधा) में सामान लदवा कर गर्ग परिवार वाले पश्चिम दिशा की तरफ रवाना हो गए। रवाना होने के समय सती दादीजी ने फिर कुँवारी कन्या के मुख से कहा कि "तुम लोग तो जा रहे हो, हमारी सेवा-पूजा कौन करेगा, हमें भी साथ ले जाना होगा, हम भी साथ-साथ जायेंगी और तुमलोगों की रक्षा करूंगी। इसी बीच किसी बच्चे ने मजाक किया कि "दादीजी की देवरियाँ तो बहुत भारी है उनको गाड़े में कैसे ले चलेंगे"।

दादीजी ने फिर कन्या के मुख से कहा कि "बच्चों घबराओ मत, मैं फूल के सामान हल्की हो गई हूँ, मुझे भी गाड़े में आराम से बैठा लो। परिवारवालों ने दादीजी की देवरियों को फूल के सामान हल्की देखी तो खुशी के मारे फुले ना समाये और झटपट गाड़े में बैठा लिया और शाम को गाड़ा अपने आप पश्चिम दिशा की ओर चल पड़ा। रातों रात सूर्योदय से पहले ही 'लूणकरणसर' गाँव से २ किलोमीटर पहले ही पहुँचकर रुक गया। गाड़ा रुकते ही देवरिया गिर गई, अत: वे चिल्ला उठे कि दादाजी-दादाजी गाँव तो दूर है और देवरिया गिर गई इसलिये इन्हें फिर से गाड़े बैठायें, अभी तो जंगल है। दादीजी ने फिर कुँवारी कन्या के मुख से कहा कि मेरा निवास स्थान आ गया है। मैं मेरे स्थान पर आ पहुँची हूँ। यहीं पर मेरा मन्दिर बनवा दो और मेरी स्थापना कर दो। इतनी दूर तो मैं आपलोगों के साथ आ गई, अब गाँव से थोड़ी दूर तुम सभी को मेरी पूजा करने के लिये चलकर आना पड़ेगा। सूर्योदय के बाद सभी ने सलाह की, कि गाँव से थोड़ा दूध लाकर सती दादीजी को स्नान करा कर उनकी पूजा कर के ही हम कुछ खायेंगे, पीयेंगे। उसी समय उनके घर की एक बहू ने गाँव वालों से थोड़ा दूध माँगा तो उन्होंने उसे गर्म दूध दे दिया, उसने गर्म दूध ही चढ़ा दिया तो दादीजी ने तुरन्त कन्या के मुख से कहा कि "आज तो गर्म दूध ही चुल्हे पर चढ़ा दिया, आईन्दा याद रहे मुझे कच्चा या बासी दूध या बासी खीर का ही भोग लगेगा और मेरी बहुएं (माँ बनने के बाद) भी कच्चा दूध या बासी खीर ही खायेंगी। शुभ संवत् अट्ठारह सौ पचपन, शुभ मिति सावन वदी छठ को पंडिया श्री चोख चन्दजी के साथ सेठ गोविन्द रामजी सरिया बलधा गाड़ी पर सती दादीजी के साथ 'लूणकरणसर' पधारीं।

विदित हो कि झीलोत गाँव में शुभ संवत् १६०० से १६०५ (सोलह सौ से सोलह सौ पाँच) के भीतर ही सती दादीजी प्राकट्य हुआ था। 'लूणकरणसर' में शुभ संवत् दो हजार चालीस में मन्दिर का निर्माण हुआ तथा मन्दिर में कलश स्थापना २०५० में हुई थी।

।।श्री श्री सती दादीजी की जय।।

राजस्थानी विशेषताएं

'लुणकरणसर' के राजपुरिया रोड पर स्थित रामदेव गौशाला व ढाणी भोपाला राम में गौशाला कार्यरत है। स्व. सीताराम सारस्वत ने गौशाला का निर्माण करवाया था, जहां गौवंश की सेवा का कार्य जनसहयोग द्वारा अनवरत जारी है। गोपाष्टमी पर्व पर विशेष आयोजन भी किये जाते हैं। लुणकरणसर में सुंदरकांड मंडलियां भी घर-घर जाकर गौ सेवार्थ सुन्दकाण्ड का आयोजन करती हैं, जो भी चढ़ावा राशि प्राप्त होती है, वो आवारा गौवंश व इन्हीं गौशालाओं को सुपुर्द कर सेवा कार्य किया जा रहा है।

वैसे तो राजस्थान में विविध स्वरुप देखने को मिलते हैं, जल-जंगल-पहाड़ और जमीन उसी में तेज धूप में सोने से दमकते रेतीले धौरों की छटा एक अलग ही अहसास करवाती है। पूनम के चांद में उजली रेत के धोरे मानों स्वर्ग को जमीं पर उतार लाए हैं, ऐसा प्रतीत होता है। स्थानीय लोग धोरों पर सुबह चलना खूब पसंद करते हैं।

'लुणकरणसर' उपखण्ड में ही देव भूमि कतरियासर में जसनाथ जी महाराज का मंदिर हैं। जहां धधकते अंगारों पर नृत्य विश्व प्रसिद्ध है। जसनाथ जी महाराज की कृपा से उनका बाल भी बांका नहीं होता, इसे देखने के लिए स्थानीय लोगों के अलावा विदेशी पर्यटक भी आते हैं। यहां के प्रसिद्ध धोरों में 'केमल सफारी' का आनंद लेते हैं, यहां की ऊंट दौड़ भी प्रसिद्ध हैं ।

'लुणकरणसर' में रेबारी जाति के लोग भी गांवों में निवास करते हैं, जिनका मुख्य कार्य राज्य पशु यानी रेगिस्तान के जहाज ऊंट पालन का मुख्य कार्य समीपव्रति गांव बड़ेरण में हैं, चूंकि ऊंटनी के दूध में अनेक पोषक तत्व विद्यमान होते हैं, अगर इनको संरक्षण मिले तो इनकी काया पलट सकती है।

जैन मंदिर

'लूणकरणसर' का जैन मंदिर सोलहवीं सदी में बना हुआ प्रतीत होता है। इसका कोई पुख्ता प्रमाण तो नहीं मिला लेकिन इसमें जो धातु की मूर्ति पायी गई हैं उसमें सोलहवीं सदी अंकित है। अति पुराना मंदिर २१ जुलाई २००० को आयी भारी बारिश के कारण क्षतिग्रस्त हो गया।

यहॉ के स्थानीय समाज के लोगों ने चंदा इकट्ठा कर मंदिर का पुर्न-निर्माण सन् २००५-०६ में करवाया, जिसमें मुनि जयानन्द जी महाराज व मुनि दिव्यानन्दजी महाराज ने गांव के बाहर से भी जैन समाज के लोगों को दान राशी हेतु प्रेरित किया। मुनि नित्यानन्द जी महाराज की प्रेरणा से बाहर से धन राशि उपलब्ध कराई गयी, जिससे मंदिर के बाहर गुंबज का भव्य निर्माण संगमरमर से कराया गया। इस निर्माण कार्य में समाज के श्री चम्पालाल चोपड़ा, श्री श्रीचन्द राखेचा, श्री बाबूलाल दुग्गड़, श्री हनुमानमल दुग्गड, श्री रतनलाल बोथरा, श्री आसकरण बाफना, श्री शुभकरण दफ़्तरी व श्री राकेश कुमार बोथरा आदि के अलावा सम्पूर्ण ओसवाल समाज का सहयोग प्राप्त हुआ है।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

राजस्थान का एक सिपाही चला माटी की सुगंध लेके
जय-जय राजस्थान, जय-जय राजस्थान कहते हुए
बिजय कुमार जी आप आगे बढें, हम राजस्थानी आपके साथ हैं

Chandra Prakash Changoiwala
Mob: 9820012100
National Petrol Co.
(BPCL Petrol Pump)
Gokhale Road North, Dadar,
Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400028
Ph. : 022-24224449/24314915

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचायें

श्री मुरलीधरजी के भक्त
गारबदेसर गांव में सब बातन का सुख
प्रातः उठ देखिए मुरलीधर का मुख

गारबदेसर: भक्त श्री किसनदासजी महाराज का जन्म वि. स. १६४७ में हुआ। अपने भ्राता बाघसिंह जी के मरणोपरांत २५ साल की उम्र में जागीरी का भार सम्भाला, इस पद से ४५ साल तक संसार की सेवा प्रदान की। तत्पश्चात वि. स. १७१७ में शरीर छोड़ दिया और दिव्यलोक चले गए। ७० वर्षों तक इस संसार यानी मृत्यूलोक में रहे। ठाकुर पद से पहले आपको अपने ननिहाल उदयपुर में भगवान श्री कृष्ण के चतुर्भुज रूप में साकार दर्शन हुए और स्वयं भगवान की कृपा से सालगरामजी की दिव्य मुर्ति शालिगराम शिला प्राप्त हुई, जिसमें से प्रात: सन्ध्या वन्दन के बाद सवामाशा सोना प्राप्त हुआ करता था। यह सोना ब्राह्मणों को दान में दिया जाता था, आज भी यह मुर्ति मंदिर के गर्भगृह में पुजनीय है। श्री किसनदासजी के समय में बिकाणो की राजगद्दी पर राजा सूरजसिंहजी विराजमान थे। श्री किसनदासजी के हम उम्र ही थे। श्री सूरजसिंहजी सन १६८८ में देवलोक हो गए और इनके तेजस पुत्र श्री कर्णसिंह जी वि. स. १६८८ में कातिक बदी तेरस को राजसिंहासन पर बैठे। श्री किसनदासजी द्वारा जागीरदारी ग्रहण करने के ९ साल बाद श्री चैतननाथजी महाराज के सम्पर्क में आए और अपना गुरू बनाया। वि. स. १६८९ में दिक्षा लेकर समाज को एक गुरूप्रथा प्रदान की। वि. स. १६८४ में अलौकिक मंदिर का निर्माण कराया, जिसमें भगवान लला बिराजमान हैं। श्री चैतननाथजी महाराज वि. स. १७०५ में समाधी ली। श्री किसनदासजी और श्री चैतननाथजी २५ वर्ष साथ रहे। श्री चैतननाथजी महाराज भी इस मृत्यूलोक में ७० साल रहे। श्री चैतननाथजी का जन्म १६३५ में हुआ, १२ साल के अन्तराल से दोनों महापुरूष इस लोक से विदा लेकर परलोक सिधार गए।

भारत का प्रसिद्ध मन्दिर मुरली मनोहर जी गारबदेसर (बीकानेर)

श्री चैतननाथजी महाराज की किर्ती चारों और प्रकाशित हो रही है। गारबदेसर आपका मुख्य धाम है, यहां वृक्षों के बीच में श्री भोलेनाथ देवों के देव महादेव की पूजा अर्चना होती है। श्री भैरूजी महाराज की भी यहां पुजा होती है। श्री चैतननाथजी पीरजी महाराज की भी सेवा पुजा होती है। शिवरात्री को विशेष जागरण एवं परम्परा के अनुकूल आयोजन होता है, जिसके श्री पृथ्वी व श्री बालूसिंह चौहान मुख्य पुजारी हैं। सम्पूर्ण व्यवस्था एवं पुजारीजी का वेतन एवं साल भर की पूजा सामग्री श्री चैतननाथ चेरीटेबल ट्रस्ट जोगीया आसन गारबदेसर की ओर से किया जाता है।

चमत्कारी श्री मुरलीधरजी की प्रतिमा

दिव्य मुर्ति शालिगराम शिला

ट्रस्ट द्वारा कोई कमजोर, गरीब जिसको कहीं से कोई सहारा ना हो, सत्यता प्रगट करने पर सहारा दिया जाता है।

'चेतन चमत्कार' किताब के लेखक श्री पृथ्वीसिंह चौहान गारबदेसर हैं। पृथ्वीसिंह चौहान जी 'बेरागी महन्तगाथा' किताब पहले भी लिख चुके हैं, जिसके प्रकाशक महन्त श्री मोहनदास जी गारबदेसर हैं। 'चेतन चमत्कार' किताब की खर्च राशी श्री धरमदास, डॉ. श्री दोलदासजी थालोड़ ने खर्च किया। श्री धरमदासजी थालोड़ के पुत्र श्री गणपत दासजी थालोड़ पुर्व सरपंच ग्राम पंचायत थे। श्री धरमदासजी थालोड़ धार्मिक विचारों वाले साधू-संतों का मान-सम्मान करने वाले, गौ सेवा व माता-पिता की सेवा करने वालों को श्रेष्ठ एवं महान पुरूष मानते हैं। श्री मुरलीधरजी के पुजारी श्री किसनलालजी, श्री चून्नीलालजी शर्मा गारबदेसर मुख्य पूजारी हैं, जो चारों समय मुरलीधरजी की पूजा करते हैं।

गारबदेसर और राठौड़ परिवार

पैतृक गांव के ही प्रतिष्ठित राठौड़ परिवार का राजस्थान को बहुत बड़ा योगदान रहा है। स्टेट टाइम में सूबेदार श्री शार्दूल सिंह जी को १९१४ में सेज कैनाल पर तुर्की से युद्ध रत रहे, उन्हें आई डी एस एम वीरता पदक प्राप्त हुआ। उनके परिवार में श्री उदय सिंह राठौड़ सेना में मेजर थे, उनके पुत्र कर्नल लिछमन सिंह राठौड़ १९६५ की लड़ाई में लाहौर के पास इछुगल कैनाल के युद्ध रत रहे एवं १९७१ की लड़ाई में बाड़मेर में युद्ध रत रहे। मेजर एवं ब्रिगेडियर जगमाल सिंह राठौड़ को १९७१ की लड़ाई के बाद वीर चक्र मिला जो भगवान मुरलीधर जी कृपा का जीता जागता उदाहरण है। विशाल सिंह राठौड़ चिकित्सा सेवा से डॉक्टर रहते सेवानिवृत्त हुए हैं। जुगल सिंह राठौड़ पंचायत समिति सदस्य एवं २०१० में सरपंच रहे।

देश भर में निशानेबाजी में पदक व अर्जुन अवार्ड प्राप्त कर जयपुर ग्रामीण से लोकसभा में प्रतिनिधित्व करते हुए देश के दूरसंचार व खेल मंत्री रहे वर्तमान जयपुर ग्रामीण सांसद व भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़ को पैतृक भूमि से अत्यंत लगाव है। उनकी धर्मपत्नी डॉ गायत्री देवी ने सेना में मेजर पद से निवृत्ति ली है।

परिवार में डॉ मोनिका राठौड़ जयपुर एस एम एस हॉस्पिटल में सेवाएं दे रही हैं ।देवल राठौड़ एवं उनके पति भी डॉक्टर हैं। वहीं शक्ति सिंह राठौड़ की सुपुत्री सुश्री डॉ नेहा राठौड़ जोधपुर एम्स हॉस्पिटल में पीजी कर रहीं हैं, सही मायनों में इस परिवार ने गांव में शिक्षा का रुतबा कायम रखा है व देश में अलग पहचान कायम की है।

लुणकरणसर में श्री हनुमान मंदिर

श्री हनुमान मंदिर की स्थापना अब से ७० वर्ष पूर्व श्री बालू राम कुम्हार द्वारा एक पत्थर रख कर स्थापना की गई। तत्पश्चात मंदिर के अध्यक्ष व अध्यापक स्व. श्री भैरा राम शर्मा द्वारा अथक परिश्रम से (छोटा) भवन का निर्माण करवाया गया। १९८८ में इसका विधिवत ट्रस्ट बनाकर रजिस्टर्ड करवाया गया और सन २००५ तक श्री भैरा राम शर्मा के सानिध्य में न्यास की गतिविधियां संचालित होती रहीं। २००५ में श्री देवीराम खाती को न्यास द्वारा व्यवस्थापक बनाया गया। तत्पश्चात भवन का जीर्णोद्धार शुरू हुवा। पुराने जर्जर भवन को तोड़कर भवन में दो मंजिल का निर्माण लगभग पूर्ण करवा दिया गया है।

वर्तमान में भवन में दो शादियों के जनवासे का पूर्ण इंतजाम है। वातानुकूलित भवन के साथ अनेक कमरों में आधुनिक सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। मंदिर १५० फिट ऊँचा व २५० फिट पर बना हुआ है। बाहर से पधारे यात्रियों के लिये निशुल्क ठंडा पानी व अस्थायी आवास हेतु कमरों की सुविधा दी जाती है। जन कल्याण, जन हितार्थ व विविध कार्यक्रमों हेतु भवन में हर वक्त सुविधा उपलब्ध रहती है। स्वास्थ्य शिविरों का समय-समय पर आयोजन किया जाता है। पौराणिक परम्पराओं को जीवित रखते हुए हर साल रामलीला एवं महावीर जयंती मेला विस्तृत रूप से संपन्न किया जाता है। कस्बे की सबसे बड़ी संस्था होने के साथ मंदिर में पूजा अर्चना का काम धर्मदास जी के सानिध्य में किया जा रहा है।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

पलक पर जगमग है अनेकों तारे स्वर्ग सा मनोरम हमारा गांव 'लूनकरनसर'

मिस्त्री चेतसिंह
दलीप सिंह
भ्रमणध्वनि : ९९२९३०५३५०

विश्वकर्मा एग्रो इण्डस्ट्रीज

हमारे यहां हेरो, बिंजाई मशीन, ट्रोली, कल्टीवैटर करवा व जिन्दरी आदि कृषि बनाये जाते है।

कृषि विभाग द्वारा अनुदानित

पुराना बस स्टेण्ड के पास, लूणकरणसर, बीकानेर, राजस्थान, भारत - 334603

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान नीम लगायें पर्यावरण बचायें

गर्व है मुझे कि मैं बोथरा वंश से हूँ

अरविंद कुमार बोथरा
भ्रमणध्वनि- ९४१३८०८१३०
८५२९७०३३३१

'लुणकरणसर' का इतिहास तो बहुत ही प्राचीन है, मिले उल्लेख के अनुसार लुणकरण जी के नाम पर रखा गया। लुणकरणसर, जिसका अर्थ यह भी है कि ऐसा तालाब जो पानी को नमक में बदल देता है। किसी समय यह व्यापार का केन्द्र हुआ करता था, इस वक्त नमक भी बहुत कम मात्रा में होता है। लुणकरणसर में सर्वप्रथम तीन परिवार यानी बोथरा, बुचा, चौहान राजपूत ने आकर इस रेतीले धोरे पर अपना डेरा डाला था। लुणकरणसर के दक्षिण में देशनोक, पूर्व में कालू और उत्तर में भाडेंरा और पुर्वाचल में रामनगर गांव हुआ करते थे, बाद में डुंगरगढ़ आदि गांव बसे, व्यापार होने के कारण 'लुणकरणसर' व्यापार केन्द्र बना। मुगलों ने इस पर आक्रमण कर लूटा। आस-पास के कई गांव जैसे मुकलरों, व्याडेरा आदि उजड़ गए, तब यहां के लोगों ने यहॉ-वहॉ शरण ली। कुछ रामबाग की तरफ चले गए। मुगलों ने यहां के जैन मंदिर की मूर्तियों को तलवारों से खंडित की। आज भी कुछ प्रतिमाओं पर तलवारों के निशान देखे जा सकते हैं,

सेठ श्री जेठमल जी बोथरा

ठाकुरदास जी बोथरा

नथमल जी बोथरा

जिन्हें उस वक्त जमीन में गाढ दिया था जो बाद में खुदाई के समय मिली।

'लुणकरणसर' के इतिहास के वर्णन में तीन भाईयों का जिक्र ना हो तो यह इतिहास अधूरा लगता है। लूणकरणसर की माटी के तीन सपूत यानी तीन रतन स्वर्गीय श्री जेठमल जी बोथरा, स्वर्गीय ठाकुरसिदास जी बोथरा और स्वर्गीय नथमल जी बोथरा हैं, इनका यों तो अपना व्यापार कालिंपोंग नामक कस्बे से शुरू हुआ और इतना अधिक व्यापार फैला कि ३८ देशों में इनकी तूती बोलती थी।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के व्यापारिक संबधों की वजह से बड़े-बड़े लोग इनसे मिलते थे। तत्कालीन महाराजा स्वर्गीय श्री गंगासिंह जी से इनका दोस्ताना रिश्ता था। स्वर्गीय जेठमल जी को अपने बड़े भाई समान समझते थे और मुंह बोला भाई बनाया हुआ था। राज-काज में भी राय लेते रहते थे। विक्रम संवत १९५६ के समय सेठजी दिल खोल कर खजाने के द्वार खोल दिए थे।

'लुणकरणसर' रेलवे लाईन बिछाते समय व गंगाशहर के निर्माण में अकाल की विभिषिका से 'लूणकरणसर' को बचाने में पूरा सहयोग दिया। स्वर्गीय जेठमल जी ने लुणकरणसर की शान कही जानेवाली हवेलियों का निर्माण करवाया। नथमल जी ने दोस्तों की सहायता से जनता को आठ रूपए के पट्टे में जमीन का वितरण किया। लूणकरणसर को विद्यालय की सौगात श्री जेठमल जी ने दी। महामारी की दस्तक जब पड़ी तब ठाकुरसिदास जी ने अपने अनुभव के आधार पर रोग का निदान करवाया, लोगों को काल कवलित होने से बचाया।

तीनों भाईयों ने मिलकर एक बावड़ी का निर्माण भी करवाया, जो आज कालू रोड में है। इसी बावडी में रेल से पानी यानी बीकानेर से मंगवाकर इक्कठा किया जाता था और फिर गांव में वितरण किया जाता था, आज भी पूरी तहसील में कहावत प्रचलित है, " तू कौनसो जेठमल बोथरा है, जो तेरी बात माननी पड़सी" जेठमलजी बोथरा की हवेली में दरबार लगता था, हर फरियादी यहां फरियाद कर सकता था और उसको सही न्याय मिलता था।

पूरे गांव में पानी, दवाई की व्यवस्था मुफ्त थी। कोई खाली हाथ नहीं लौटता था। राजकीय विद्यालय भी लूणकरणसर में सेठजी जी की देन थी, पूरे गांव के विरोध को दरकिनार करते हुए अपनी दूरदर्शी सोच को ध्यान में रखकर कालू रोड पर स्थापित किया। गांव वालों के आग्रह पर दोबारा सरपंच पद पर आसीन हुए। नथमल जी बोथरा साधु-साध्वी की सेवा में कभी भी पीछे नहीं रहे। साल के ६ महीने साधु-साध्वी की सेवा करते और साल के ६ महीने खेतों में गोठ करते थे, जिसके लिए आज भी नथमल जी को 'लुणकरणसर' के लोग याद करते हैं। जनमानस के अंदर आज भी तीनों भाईयों का नाम आदर से लिया जाता है। मुझे इनके कुल में जन्म लेकर बहुत ही गर्व है।

आई विलिज गाड़ी

लुणकरणसर के रेतीले धोरों में जब किसी के जहन में इस बात का मलाल न था कि कोई वाहन भी होता है। नगर सेठ जेठमल बोथरा ने इंग्लैंड से १९५३ मॉडल विलिज कम्पनी की जीप को लुणकरणसर लाकर कीर्तिमान स्थापित किया, तब के जमाने में पूरे जिले में राजपरिवार को छोड़ कर एक आध लोगों के पास ही गाड़ी हुआ करती थी।

:-: कोरोनाकाल में बेचारी हिन्दी :-:

कोरोनकाल में
हिन्दी का प्रयोग घटा है।
'दहशत' की जगह
'पैनिक' शब्द आ डटा है।
वायरस देखकर -
हिन्दी शब्दों की ख़पत घटी है।
अब हमारी बातचीत में,
विटामिन-सी, जिंक,
स्टीम और इम्यूनिटी है।
उधर 'सकारात्मक' की जगह,
'पॉजिटिव' शब्द ने हथियाई है।
इधर 'नेगेटिव' होने पर भी,
खुशी है, बधाई है।
अब ज़िन्दगी में 'महत्वपूर्ण कार्य' नहीं
'इम्पोर्टेन्ट टास्क' हैं।
हमारे नए आदर्श
अब हैंडवॉश, सेनिटाइजर और मास्क हैं।
हिन्दी के अनेक शब्द
सेल्फ क्वारेन्टीन हैं।
कुछ आइसोलेशन में हैं,
कुछ बेहद ग़मगीन हैं।
मित्रों, इस कोरोनकाल में,
हमारे साथ,
हिन्दी की शब्दावली भी डगमगाई है।
वो तो सिर्फ 'काढ़ा' है,
जिसने हिन्दी की जान बचाई है।

लुणकरणसर में ब्रह्मकुमारी विश्व विद्यालय द्वारा किए जा रहे मानवीय सेवार्थ कार्यक्रम

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का भी केन्द्र लुणकरणसर में स्थापित है, जिसमें राजयोग, मानसिक, शान्तियोग का निशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। यहां पर ब्रह्मकुमारी सत्यवती जी की देखरेख में यह केन्द्र चल रहा है। सात दिनों का निशुल्क शिविर भी लगता है।

प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय लुणकरणसर के द्वारा सेवा केन्द्र की संचालिका ब्र.कु. सत्यवती बहन के दिशा निर्देश में अनेक कार्यक्रम किये जा रहे हैं। सेवा केन्द्र की ओर से शहर में स्वच्छता तथा प्रेम का वातावरण बना रहे इसके लिए नियमित रुप से राजयोग मेडिटेशन तथा अध्यात्मिक कक्षाएं भी कराई जाती हैं।

सेवा केन्द्र की और से किए जा रहे मानवीय सेवार्थ कार्यक्रम

१. शिवरात्री पर आध्यात्मिक रहस्य तथा शिवरात्री को मनाने के लिए एक भव्य शोभायात्रा तथा सार्वजनिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

२. विद्यार्थियों में नैतिक चरित्र निर्माण के लिए ब्र.कु. अरुण भाई (पंजाब) ने बाल व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम में संबोधित किया। ब्र.कु. बालू भाई की और से भी स्कूल-कॉलेज में कार्यक्रम हुए।

३. श्रीमदभगवदगीता के ७ दिवसीय प्रवचन माला का लाभ शहरवासियों ने लिया।

४. आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जाता है।

५. महिला दिवस पर महिलाओं के लिए कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

६. गहन राजयोग शिविर का कार्यक्रम ब्र.कु. उर्मिला बहन के द्वारा किया जाता है।

७. १० दिवसीय तनाव बिदा कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया जाता है।

८. सेवा केन्द्र की ओर से शहीदों की शांति के लिए ११०० दिपक प्रज्वलित किये गये हैं।

९. जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण की भव्य झांकीयों का आयोजन व कलश यात्रा भी निकाली जाती है।

ब्र.कु. सत्यवती बहन के संचालन में हर वर्ग, हर आयु के लोगों के लिए सेवा केन्द्र की ओर से अन्यान्य कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

-ब्र.कु. सत्यवती बहन

लूणकरणसर में कुट्टू प्लांट

आसाम के पहाड़ी एरिया में नवम्बर माह में बोई जाने वाली फसल कुट्टू के बीजों का मगज गिरी निकाल कर पूरे भारत वर्ष में इसकी सप्लाई की जाती है। लुणकरणसर में लगी एक मात्र प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में १५ वर्षों से उत्पादन हो रहा है। व्रत में उपयोगी कुट्टू का अनेक फायदों के लिये जाना जाता हैं, ये ग्लुटोन फ्री, शुगर फ्री, प्रोटीन, फाइबर, एनर्जी का बहुत बड़ा सोर्स है। डायबिटीज, ह्रदय रोग, वेट लोस, जरूर एमिनो एसिड भरपूर मात्रा इसमें पाया जाता है। ये जानकारी हेल्थ प्लस के मैनेजिंग डायरेक्टर सुरेश ढूढ़ाणी द्वारा प्राप्त हुई है, उन्होंने बताया कि 'लुणकरणसर' में अखरोट प्लांट में छिलके को अलग कर गिरी की पेकिंग की जाती है।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

!! जय श्री दादोजी महाराज !!

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा
राजस्थान की गोद में राजस्थान की शान 'लूणकरणसर' के
ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

अरविंद कुमार बोथरा

भ्रमणध्वनि : ९४१३८०८१३० / ८५२९७०३३३१

लूणकरणसर, बीकानेर,
राजस्थान, भारत -३३४६०३

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान
नीम लगायें
भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
पर्यावरण बचाये

ओसवाल भवन

लुणकरणसर में ओसवाल समाज के भवनों में यह भवन सबसे पुराना है। पहले यहाँ जैन उपासरा हुआ करता था, जहाँ गुरान्जी निवास करते थे। दो उपासरे थे जहाँ समाज के लोगों ने गुरान्जी (जैन गुरु) से समझौता करके एक उपासरा उनको दे दिया। इस उपासरे की जगह में समाज से राशि एकत्रित कर विक्रम सम्वत् २०२५, सन् १९६८ में भवन का निर्माण करवाया गया। भवन बनने पर तेरापन्थ साधु का चातुर्मास भी इसी भवन में होता था। तेरापन्थ भवन बनने पर तेरापन्थ संतो का चातुर्मास दुसरे भवन में होने लग गया। बाकी समय में भवन समाज हित के कार्यों में उपयोग किया जाता है।

भवन पुराना होने के कारण श्री रतनलालजी बोथरा, बाबूलालजी दुगड़ आदि अन्य लोगों के सहयोग से भवन की मरम्मत का कार्य करवाया गया। छगनलालजी बोथरा के सहयोग से उनके स्व. पुत्र श्री बिजयचन्द की स्मृति में एक कमरे का निर्माण करवाया गया, दुसरे कमरे का निर्माण रेवंतमलजी की स्मृती में बना। श्री लुणकरणरजी बोथरा ने अपने पिताश्री के नाम पर कमरा बनवाया। वर्तमान में श्री बाबूलालजी दुगड़ अध्यक्ष हैं।

ओसवाल भवन (योग क्षेमभवन)

इस भवन की जगह गुरान्जी को दे दी गई थी, जो बाद में समाज द्वारा धन राशि देकर दिनांक २८/६/८३ को खरीद ली गई। विक्रम २०४२ में श्री पुरणमल जी रांका भीनासर निवासी ने लुणकरणसर में अपने स्व. सास-ससुर श्री भवरलालजी बोथरा का यहाँ पर स्थित मकान बेचकर उसकी धन राशि से उनकी स्मृति में एक हाल का निर्माण करवा दिया, बाकी के कमरे भी स्थानिय लोगों ने व्यक्तिगत रुप से बनाये तथा कुछ हिस्सा समाज से प्राप्त धन राशि से बनवाया गया।

-चंपालाल चोपड़ा
लुणकरणसर

तेरापंथ भवन

लूणकरणसर में तेरापंथ भवन का निर्माण कार्य सन् २००० के आसपास सबसे पहले समाज के कुछ एक दान-दाताओं के सहयोग से शुरु हुआ, उसके बाद धीरे-धीरे भवन का निर्माण कार्य चलता रहा। आज जो भवन का रुप है उसी का प्रमाण है, इसमें कुछ लोगों के व्यक्तिगत व बाकी कार्य तेरापन्थ समाज द्वारा राशि एकत्रित कर निर्माण करवाया गया। भवन की कुछ भूमि स्व. भूरामलजी बोथरा की स्व. पत्नी द्वारा दान दी गई बाकी समाज की राशि से खरीद की गई। वर्तमान में पिछले ७-८ वर्षों से तेरापन्थ समाज की साध्वियां जी विराजमान हैं। वर्तमान में श्री सन्तोकचन्द भुरा अध्यक्ष हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

भारत का एक राज्य
सबको प्यारा राजस्थान

लुणकरणसर का संयुक्त सरिया परिवार

सरिया परिवार के आराध्य

स्वर्गीय सुगन चंद जी सरिया

स्वर्गीय सुगन चंद जी सरिया करीब सौ साल पहले राजस्थान के 'लूणकरणसर' से दार्जिलिंग के पोखरियाबंग आकर बसे। इनके बेटे परतापमलजी यानी मेरे दादाजी, उनके दो पुत्र हुए वर्दीचंद जी और डालचंद जी। वर्दीचंद जी हमारे पिताजी जिनके चार बेटे हुए। डालचंद जी के तीन बेटे घनश्याम, बालकिशन और शिव कुमार जी हुए। आज भी हमारे पिताजी व चाचा जी का संयुक्त परिवार है शुरू में जब हम सभी लोग पोखरीयाबंग आए, यहां चाय के बागान में ट्रांसपोर्ट आदि का काम करते थे। बाद में हमारे चाचा जी ने एक-एक करके बागान खरीदे, जिसका विस्तृत स्वरूप आज 'सोनागाछी चाय' उद्योग है। आज यह चाय ना सिर्फ पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग में प्रसिद्ध है बल्कि विदेशों में भी इसका निर्यात होता है।

-जगदीश सरिया

सरिया परिवार के चारों भाई अपनी माताजी और पत्नियों के साथ रहते हैं। हमारी माताजी के आगे और पीछे हमारे छोटे भाई मोहन की बेटियाँ है। माताजी के दायीं ओर मेरी फ़ोटो है माताजी के बायीं तरफ़ मेरा छोटा भाई गोरधन है। मेरे दायीं तरफ़ मेरा तीसरा भाई अशोक है तथा गोरधन के बायीं तरफ़ मेरा सबसे छोटा भाई मोहन है, यह जानकारी जगदीश जी सरिया ने दी है।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है
भाईचारा राजस्थान की गोद में राजस्थान की शान
'लूणकरणसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Rakesh Bothra
भ्रमणध्वनि : 9414450051

Vinit Bothra
भ्रमणध्वनि : 9351547607

Vishal Kumar Bothra
भ्रमणध्वनि : 7230095904

DHANRAJ RAKESH KUMAR
JAIN ACCOUNTING AND STATIONARY

New Anaj Mandi, Po. Lunkaransar,
Dist Bikaner, Rajasthan, Bharat - 334603

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचायें

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

'लूनकरनसर' के इतिहास प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान' परिवार को शुभकामनाएं

Sri Rekhchandji Bothra
Rinku Rekhchand Bothra
Mob. : 9043485745

Pawan Putra Refrigeration

All Brand A/C, Refrigrators, Washing Machine Spares & Accessories

223A, M.T.H.Road, Nathamuni Complex, Villivakkam,
Chennai, Tamil Nadu, Bharat - 600049
email:pawanputrarefrigeration@gmail.com

No20/27, Ground Floor, 36th Street, Thirunagar,
Villivakkm, Chennai, Tamil Nadu, Bharat - 600049

DAIKIN AIRCONDITIONING IFB SAMSUNG LG Whirlpool Panasonic ideas for life

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचायें

भारत को भारत ही बोला जाए

भारत का एक राज्य सबको प्यारा राजस्थान

मेरी धरती-मेरा बाना

भीमसेन चौधरी
(स्व.) गांधी वादी नेता

श्री भीमसेन चौधरी का जन्म ५ जनवरी, १९२५ को बीकानेर तहसील के बंधा ग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। तीन वर्ष की अल्प आयु में ही आपकी माता का निधन हो गया। गाँव में शिक्षा की सुविधा प्राप्त न होने पर भी आपने अध्ययन के प्रति अपनी लगन और गहरी जिज्ञासा के कारण घर से दूर रह कर ट्यूशन आदि द्वारा अपनी आजीविका का निर्वहन करते हुए एम.ए., एल.एल.बी. तक की शिक्षा प्राप्त की।

चौधरीजी में घर से दूर रहकर शिक्षा अर्जित करते हुए भी अपने गाँव के प्रति गहरा आकर्षण बना रहा और उन्होंने खेतीहरों के दुःख-दर्द को समझा और उनके साथ मिल-बैठ कर उनकी समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास भी किया। इसी समय भारतीय राजनीति के पटल पर महात्मा गाँधी का प्रभामण्डल छाया था, उनसे प्रेरणा और आशीर्वाद प्राप्त कर युवा भीमसेन ने 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लिया और गाँधी जी के अनुयायी के रूप में पहचाने जाने लगे।

किसानों के हमदर्द और कर्मठ जननायकः किसान परिवारों के प्रति अपने सहज स्नेह और उनके प्रति अपने कर्त्तव्य बोध से प्रेरित होकर चौधरी जी ने सन् १९४८ में किसान छात्रावास में गरीब काश्तकारों और किसानों के बच्चों को शिक्षा देने के लिए शिक्षक के रूप में इस क्षेत्र को चुना। किसान परिवारों के बीच अपनी कर्मनिष्ठा से लोकप्रियता के कारण श्री भीमसेन १९४९ से १९५२ तक जिला कांग्रेस कमेटी के प्रथम महासचिव चुने गए। कृषकों की कानूनी समस्याओं के निवारण के लिए आपने १९५४ में वकालत प्रारम्भ की।

भीमसेन चौधरी किसान छात्रावास, लूणकरणसर

आमजन के साथ गहरा जुड़ाव होने के कारण आपने १९५७ में प्रथम बार कांग्रेस पार्टी द्वारा विधान सभा का उम्मीदवार बनाया गया और बीकानेर जिले से एकमात्र पार्टी विधायक के रूप में विधान सभा में प्रवेश किया तथा जमींदारों के जुल्मों से त्रश्त आमजन को मुक्ति दिलवाते हुए जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन करवाया। किसानों को उनकी कब्जे की जोत पर मालिकाना हक दिलवाकर जागीरदारों के डर को खत्म किया एवं डाकुओं के भय से त्रस्त जनता को पुलिस का उचित संरक्षण प्रदान करवाया।

दूरदर्शीः अपनी दूरदर्शी सोच का परिचय देते हुए पलाना में कोयले से विद्युत उत्पादन हेतु थर्मल पावर प्लांट लगवाने के लिए भारत सरकार से विशेष अनुरोध कर सोवियत संघ की तकनीकी टीम से सर्वेक्षण करवाया। कांग्रेस पार्टी द्वारा 'बीकानेर' क्षेत्र को महत्व प्रदान करने हेतु तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया, जिनमें से एक श्री भीमसेन चौधरी भी थे। उनके प्रतिनिधित्व में मेडिकल कॉलेज, आई. टी. आई. पोलिटेक्नीक कॉलेज, बीकानेर के लिए वाटर वर्क्स प्रोजेक्ट, नोखा सुजानगढ़ हाईवे एवं डूँगर कॉलेज की नई बिल्डिंग बनवाने की स्वीकृति प्रदान करवाई गई।

अपनी कर्मशक्ति के कारण ही श्री चौधरी राजस्थान के 'लूणकरणसर' क्षेत्र से प्रदेश कांग्रेस कमेटी के एवं १९५८ से १९६२ तक 'नॉर्दन रेल्वे जोनल यूजर्स कंसलटेटिव कमेटी' के सदस्य रहे।

बीकानेर जिला परिषद् के १९५८ से १९६२ तक प्रथम चैयरमेन बजे, अपनी कार्य शैली और निष्ठा से आमजन के हृदय में स्थान बना लिया और १९६२ में पुनः विधायक बने। किसानों के प्रति अपने सहज स्नेह और उनके हितों के लिए कानूनी लड़ाई लड़ने के कारण श्री भीमसेन को 'भारत कृषक समाज' का बीकानेर जिले का प्रभारी बनाया गया।

बीकानेर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में पेयजल के गंभीर संकट को दूर करने के लिए आपने अपने भरसक प्रयत्नों द्वारा १९६५ में केन्द्र सरकार से विशेष बजट आवंटित करवाकर राजस्थान नहर से 'कंवरसेन लिफ्ट योजना' मंजूर करवाई जिससे अकाल व पेयजल की समस्या का स्थाई समाधान हुआ और क्षेत्र के लोगों को आर्थिक मदद के साथ-साथ 'सर्विस कांट्रेक्ट लेबर यूनियन' द्वारा रोजगार प्राप्त हुआ, इससे किसानों को अकाल की त्रासदी से मुक्ति मिली और उनके लिए सुखद भविष्य के द्वार खुले। नहरी जल की विपुलता से क्षेत्र हरा-भरा और खुशहाल हुआ और पेयजल की किल्लत खत्म हुई।

'भूमि विकास बैंक' की स्थापना कर श्री चौधरी ने गरीब व कमजोर वर्ग के किसानों को सूदखोरों से बचाया और भूमिहीन किसानों को सरकारी बंजर पड़ी भूमि आवंटित करवाकर सरकार के राजस्व को बढ़ाते हुए किसानों को घर बैठे जोत दिलवाई और एक वर्षीय व त्रिवर्षीय भूमि आवंटन को 'शूओमोटो' द्वारा स्थाई आवंटन में परिवर्तित करवाकर किसानों का राहत दिलवाई।

उद्योग जगत के प्रणेताः श्री भीमसेन १९६७ से १९७२ तक खनिज एवं उद्योग विभाग उपमंत्री रहे और इस पद पर रहते हुए उद्योग जगत के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन देते हुए अनेक योजनाएं बनवाई और नये औद्योगिक क्षेत्रों का विकास करते हुए खनिज उत्पाद की नई संभावनाओं और तकनीक का शोध परक अध्ययन करवाकर खनन उद्योग को एक नई दिशा प्रदान की। बीकानेर क्षेत्र में सिरेमिक उद्योग की विपुल संभावनाओं को देखते हुए विशेष प्रयास कर सिरेमिक उद्योग को इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम से जोड़ा।

ग्रामीण विकास के संरक्षकः ग्रामीण विकास के संरक्षक बन श्री चौधरी ने १९७२ से १९७७ तक इंदिरा गाँधी नहर परियोजना क्षेत्र में काश्तकारों को रिकार्ड सिंचित करवाई और लूणकरणसर विधान सभा क्षेत्र के समस्त गाँवों के विद्युतीकरण और पेयजल की परियोजना भारत सरकार से स्वीकृत करवाई।

पशुधन का संरक्षण करते हुए जहां एक ओर श्री चौधरी ने १९७२ में 'उरमूल डेयरी ट्रस्ट' की स्थापना कर दुग्ध उत्पादक सहकारी संस्थाओं से घर बैठे किसानों के लिए पशुपालन के धन्धे को व्यापार बना दिया, इससे दूर दराज तक के क्षेत्रों से उचित मूल्य पर दूध खरीदकर इसकी आपूर्ति दिल्ली **शेष पृष्ठ 33 पर...**

पृष्ठ ३२ से... तक की गई। इससे आय के स्त्रोत बढ़े और दूध की रिकार्ड बिक्री हुई, वहीं दूसरी ओर भेड़ पालन को प्रोत्साहन देकर 'ऊन' को लाभप्रद एवं लोकप्रिय व्यवसाय बना दिया।

जीव हत्या के घोर विरोधी: चौधरी साहब ने मंदिरों में पशु एवं पक्षी बलि समाप्त करवाने के लिए 'पशु-पक्षी बलि विरोधी' विधेयक तैयार कर इसे विधान सभा में पारित करवाकर जीव हत्या को रोका।

गाँधीजी के सच्चे अनुयायी: गाँधीजी ने गाँवों को भारत की आत्मा मानते हुए स्वतंत्रता आंदोलन मुख बनाया था। उनके अनुयायी श्री भीमसेन ने गाँवों में प्राथमिक शिक्षण संस्थाएं स्थापित की तथा अनेक विद्यालयों को क्रमोन्नत करवाकर ग्रामीण शिक्षा के स्तर को बढ़ाया ताकि ग्राम जन शिक्षा प्राप्त कर एक तो अपना महत्व, अपने अधिकार और कर्त्तव्य पहचान सकें, दूसरे राष्ट्रीय विकास की धारा के साथ जुड़ कृषि आदि के उपयोग के लिए सभी प्रकार के विकसित साधनों को अपना सके, इस हेतु इन्होंने प्रौढ़ शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, लोक जुम्बिश, राजीव पाठशाला एवं शिक्षा विभाग की सहायता से गाँव-गाँव तक शिक्षा का विस्तार किया और नारी शिक्षा एवं पिछड़ी जातियों के कल्याणार्थ अनेक प्रयास किए।

आप बीकानेर में बहुसंकायी विश्वविद्यालय खुलवाने के लिए भी सदैव प्रयासरत रहे।

विकास के प्रेरक: अपने प्रदेश में सड़कों, कृषि उपज मंडियों, सहकारी समितियों, भूमि विकास बैंक, ग्रामीण बैंक की स्थापना, बिजली, पानी, स्वास्थ्य केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र, डाक सेवा, दूर-संचार सेवा तथा यातायात व्यवस्था का पुख्ता इंतजाम करवाते हुए अपने क्षेत्र की टेलीफोन एक्सचेंज सेवा को बढ़वाते हुए, खाजूवाला को ऑप्टीकल फाईबर केबल से जुड़वाया।

राज्य के सर्वाधिक मत प्राप्त विधायक: विधान सभा चुनाव १९९८ में राज्य में सर्वाधिक ८४६७३ रिकार्ड मत प्राप्त कर छठी बार विधायक चुने गए। अपने ७५ वर्ष के जीवन काल में भीमसेन जी लोकप्रिय जननायक और कर्मठ एवं सजग राजनेता के रूप में पहचाने जाते थे। किसानों, दीन दुःखियों व मानवता की सेवा हेतु वे प्रतिपल कटिबद्ध व संघर्षरत रहे। ५२ वर्ष के अपने सार्वजनिक जीवन में चौधरी साहब व्यक्तिवाद, परिवारवाद, जातिवाद एवं दलीय राजनीति से ऊपर उठकर सम्पूर्ण निष्ठा से जिले के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित होकर कार्य करते रहे। एक सच्चे कर्मयोगी, कर्मठ, मृदुभाषी, किसानों व पिछड़े वर्ग के सच्चे हमदर्द थे। इसी कारण इन्हें लोग इस क्षेत्र का 'गाँधी' कह कर सम्मान व भावना प्रकट करते रहे हैं।

समाज सेवा में अग्रणी कर्मठ राजनेता वीरेन्द्र बेनीवाल

वीरेंद्र बेनीवाल

वीरेंद्र बेनीवाल जी का जन्म १३ मई १९६० को प्रसिद्ध समाजसेवी व पूर्व कांग्रेसी विधायक भीमसेन चौधरी के निवास बीकानेर में हुआ, आप का मूल निवास स्थान बीकानेर जिले स्थित बंधा गांव है। आपने वाणिज्य संकाय से स्नाकोत्तर की शिक्षा राजस्थान यूनिवर्सिटी जयपुर से ग्रहण की। पारिवारिक पृष्ठभूमि राजनीति से होने के कारण आपकी भी छात्र जीवन से ही राजनीति में गहन रुचि रही। विद्यार्थी जीवन में ही आप छात्र संगठन का ने प्रतिनिधित्व के रूप में कार्य किया। यूथ कांग्रेस के उपाध्यक्ष के रूप में भी रहे। विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए २००३ में विधायक के रूप में चुने गए। लूणकरणसर के विधायक के रुप में आपने लगातार १० वर्षों तक कार्य किया। अपने कार्यकाल के दौरान अपने पिता श्री भीमसेन जी के नक्शे कदम पर चलते हुए 'लूणकरणसर' की मौलिक जरूरतों पर विशेष ध्यान दिया और उसी के लिए सतत प्रयत्नशील रहे। वर्तमान में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। राजनीति के साथ-साथ आपने सामाजिक क्षेत्रों में भी विशेष भूमिका निभाई, जब-जब आपको मौका मिलता है तो आप सामाजिक कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

'भारत कृषक समाज' संगठन में विशेष सक्रिय हैं। आपके पिता द्वारा निर्मित लोक कल्याण परिषद में भी सतत सक्रिय रहते हैं, जिसके माध्यम से छात्रावास रिलीफ कैंप व अन्य कई सामाजिक कार्य करते हैं। 'लूणकरणसर' को अपनी कर्मभूमि मानते हुए यहां के विकास के लिए आप विशेष रूप से सक्रिय रहते हैं, आजीविका के साधनों में वृद्धि, बेहतर स्वास्थ्य, हॉस्पिटल, जीवन स्तर में सुधार हो इस पर आप विशेष जोर देते हैं, इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु यहां हॉस्पिटल, ब्लड बैंक, सरकार माननीय आईआईटी कॉलेज, अंडर ग्राउंड रेलवे क्रॉसिंग, कृषि विज्ञान केंद्र, मंडी की व्यवस्था, समय-समय पर ब्लड डोनेशन कैंप, पशुपालन की पूर्ण व्यवस्था, पशु चिकित्सालय आदि की उत्तम व्यवस्था, साथ ही दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हो इस विषयों पर आप कार्यशील रहते है। सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों को उच्चतम सुविधाएं उपलब्ध हो, इसके लिए भी आपने विशेष प्रयास किया है। अंग्रेजी माध्यम का सरकारी विद्यालय, रोडवेज बस स्टैंड आदि की उत्तम व्यवस्था आपने अपने कार्यकाल के दौरान की है। अपनी कर्मभूमि 'लूणकरणसर' के संदर्भ में कहते हैं कि यह बहुत ही सुंदर कस्बा है। सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से 'लूणकरणसर' बहुत ही उत्तम है, यहां के लोग बहुत ही उत्तम व मिलनसार है। यहां के निवासी देश के विभिन्न भागों में बसे हैं, मुख्यता: कपड़ों के कारोबार में अहम भूमिका निभा रहे हैं। यहां सभी धर्म समाज के लोग आपस प्रेम भाव के साथ रहते हैं सभी में सद्भावना बनी हुई हैं। 'लूणकरणसर' मूंगफली के उत्पादन के लिए पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है साथ ही 'लूणकरणसर' में अन्य कई विशेषताएं हैं।

ट्रोमा सेंटर ओर फायर ब्रिगेड के अभाव में होती मौतें

वैसे तो लूणकरणसर धीरे-धीरे प्रगति की ओर बढ़ रहा है लेकिन चिकित्सा व्यवस्था में अब भी काफी पिछड़ा हुआ है। बड़े क्षेत्र का मुख्यालय व व्यस्त राजमार्ग ६२ पर स्थित होने के कारण सड़क हादसे भी काफी संख्या में होते हैं, लेकिन हादसों में घायल हुए लोगों का समय पर इलाज नहीं होने से होने वाली मौतें भी गम्भीर विषय बना हुआ है।

सीएचसी होने के बावजूद भी प्राथमिक उपचार के अलावा कोई व्यवस्था नहीं होना प्रगतिशील कस्बे पर सवालिया निशान है।

वहीं फायर ब्रिगेड के अभाव में बहुत सी आगजनी की घटनाओं में जान माल की हानि हो जाती है, और आगजनी में बीकानेर से फायर ब्रिगेड के आने का या स्वतः आग बुझने तक का इंतजार करने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। कस्बे को ट्रोमा सेंटर व फायर ब्रिगेड महती आवश्यकता है।

-मनोज पूरी

मानव सेवा का स्थल गुरुद्वारा कलगीधर सिंग सभा लुणकरणसर

लूणकरणसर: सेवा भाव के लिए सिक्ख (पंजाबी) समाज जग प्रसिद्ध है, सिक्ख समाज जहाँ भी रहता है 'लंगर' का आयोजन जरुर करता है वैसे तो सिक्ख समाज का 'लंगर' जग प्रसिद्ध है फिर भी संक्षिप्त परिचय यह है कि समाज के अंतिम पंक्ति में बैठा व्यक्ति साथ-साथ भोजन यानी 'लंगर' खाता है ऐसा ही मानव सेवार्थ आयोजन 'लूणकरणसर' में बना विशाल व सुंदर गुरुद्वारा कलगीधर सिंग सभा के प्रांगण में ३६५ दिन 'लंगर' चलता है। गुरुद्वारा के पूर्व प्रधान (अध्यक्ष) रहे चेतसिंह जी के सुपुत्र दलीप सिंग जी ने बताया, जिनका जन्म 'लुणकरणसर' में ही १४ जुलाई १९८० को हुआ।

दलीप सिंह जी ने 'मेरा राजस्थान' को बताया कि सन १९५६ में बना गुरुद्वारा करीब ८० फुट ऊंचा, तीन तल्ले का बना है जहाँ हम पंजाबी समाज के करीब ४०-५० परिवार मिलकर सेवा करते हैं। गुरुद्वारा में मानव सेवार्थ सब कुछ उपलब्ध है। बाहर से आने वाले सभी भाईयों

दरबार साहेब
यानि जहां श्री गुरू ग्रंथ साहिब का हर रोज प्रकाश होता है

'गुरू का लंगर' यहां लंगर यानि खाना बनाया जाता है

मुख्य ग्रन्थी बाबा मोदन सिंह जी

लंगर हाल यहां खाना खिलाया जाता है

राहगीरों के रहने के लिए कमरे

को नि:शुल्क रहने व खाने की व्यवस्था रहती है। शादी-ब्याह के लिए सब जरुरती समान हमारे यहाँ उपलब्ध रहता है। 'लंगर' के लिए हमें यहाँ के स्थानीय परिवार गेहूं उपलब्ध करवा देते हैं। श्री दलीप जी ना भूलते हुए यह बताते हैं कि गुरूद्वारा के भवन निर्माण में संपूर्ण योगदान पुहला निवासी जो कभी 'लुणकरणसर' में ही रहते थे सरदार इकबाल सिंह जी का रहा है वर्तमान में गुरुद्वारे प्रमुख प्रधान भी है, वे मुख्य सेवादार रहे, ट्रक युनिट संघ के भी प्रधान रहे गुरूद्वारा भवन निर्माण में सरदार इकबाल सिंह जी का मुख्य सहयोग रहा, वर्तमान में गुरूद्वारा प्रधान दर्शन सिंह जी भुल्लर हैं।

-दलीप सिंग
लुणकरणसर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९२९३०५३५०

यशस्वी भव:

अक्षत द मीना संजयजी बलदवा इंदौर (एमपी) जिन्होंने क्लैट-२०२० परीक्षा दी है और पी. डब्ल्यू. डी. (विकलांग) श्रेणी में ३ और सामान्य श्रेणी के छात्रों में ऑल इंडिया रैंक (AIR) - १११८ हासिल की है। एआईईटीईटी-दिल्ली में भी उन्होंने पीडब्ल्यूडी में रैंक-१ हासिल की है। यह गर्व का क्षण है। अक्षत बलदवा को बचपन से ही दिखाई नहीं देता फिर भी उसकी पढ़ाई में रुचि थी और परिवार वालों ने उसकी रुचि को ध्यान रखते हुए उसको शिक्षा दिलवायी, अक्षत अपनी मेहनत से इस मुकाम को हासिल किया। आज भारतवर्ष में रैंकिंग में स्थान है। परिवार के सदस्य, माहेश्वरी समाज व 'मेरा राजस्थान' परिवार के लिए गौरव की बात है।

नमस्कार! मेरा राजस्थान

शंकर केजरीवाल
व्यवसायी व समाजसेवी
राजस्थान निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२१०१८८३२

शंकर लाल जी कोरोना काल में लॉकडाउन जैसी परिस्थिति में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि पिछले ८ महीनों से कोरोना महामारी से पूरा विश्व त्रस्त है। ८ माह बीत चुके हैं पर यह नहीं समझ में आ रहा है कि यह एक दो महीने में समाप्त होगा या इसकी दोबारा पारी झेलनी पड़ेगी। अगर यह कुछ ही समय में समाप्त हो जाए तो ही हम इससे उबर सकेंगे, अन्यथा सम्पूर्णत: समाप्ति के कगार पर आ जाएंगे। इसका विशेष प्रभाव निम्न वर्ग व मध्यम वर्ग वालों पर पड़ा है। दैनिक जीवन की वस्तुएं भी खरीदना उनके लिए मुश्किल सा हो जायेगा। कोरोना का लाभ दवा, किराना, सब्जी, ऑटोमोबाइल जैसे बड़े व्यापारियों को हुआ है। ईश्वर से अनुरोध है कि कि इस महामारी से व आर्थिक समस्या से सभी को लड़ने की ताकत प्रदान करें।

भारत को 'भारत' बोला ही जाए यह एक अच्छा अभियान है। मैं विश्व के कई देशों में घुमा हूं, प्रत्येक देश का नाम हिंदी और अंग्रेजी दोनों में एक समान उच्चारण होता है, पर एकमात्र हमारा देश है जो ३ नाम से पुकारा जाता है इंडिया, भारत और हिंदुस्तान। हमारे देश का एक ही नाम होना चाहिए वह है 'भारत' क्योंकि इंडिया शब्द तो अंग्रेजों का थोपा हुआ है, जो कि हमें नहीं अपनाना चाहिए। इस अभियान के लिए किसी व्यक्ति विशेष का प्रयास ही काफी नहीं होगा, बल्कि पूरे देश में इस विषय पर जनजागृति लानी होगी तो ही यह कार्य संभव हो सकेगा। २०२१ में इस विषय पर पूरे व्यवस्थापन व कार्यप्रणाली के साथ प्रयास करना चाहिए कि हमारे देश का नाम दो क्यों? **भारत व इंडिया**

शंकर लाल जी १९६८ से मुंबई के प्रवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा-दीक्षा बिहार के मुजफ्फरपुर में संपन्न हुई। मुंबई में आप कपड़े के व्यवसाय से जुड़े हैं। मुंबई स्थित हिंदुस्तान चेंबर ऑफ कॉमर्स के मंत्री, उपाध्यक्ष व अध्यक्ष पद पर सेवारत रहे हैं। भाजपा के व्यापार प्रकोष्ठ के भी अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में 'परोपकार' संस्था के अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं, साथ ही अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

मुंबई में कपड़ों के कारोबार का वर्णन करते हुए कहते हैं कि पिछले लगभग २० वर्षों में कपड़े व्यापार की चमक खत्म सी हो गई है, जबसे कपड़े मिलों की हड़ताल हुई थी तब से मुंबई का कपड़ा व्यापार जगत आर्थिक संकट में आ गया, जबकि भारत में सबसे ज्यादा कपड़े निर्माण करने की कंपनियां मुंबई में ही है, आज इन कंपनियों में ताला लग रहा है, जो स्थान कपड़ा जगत में कभी मुंबई का हुआ करता था आज वह स्थान सूरत ने ले लिया है।

जगदीश प्रसाद सरिया
व्यवसायी व समाजसेवी
लूणकरणसर निवासी-सिलीगुड़ी प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३४०४८१६८

२२ दिसम्बर १९५१ को राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'लूणकरणसर' के प्रतिष्ठित सरिया परिवार में जगदीश जी का जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा 'लूणकरणसर' में होने के पश्चात आगे की सम्पूर्ण शिक्षा दार्जिलिंग में हुई, जहां आपका परिवार १०० वर्षों से भी अधिक समय पहले से बसा हुआ था, शिक्षा समाप्त करने के पश्चात पारिवारिक कारोबार चाय बगान से जुड़े। आपका परिवार कई व्यवसायों में रत है, दार्जिलिंग के पोखरियाबंग के प्रवासी रहे हैं, वर्तमान में 'सिलीगुड़ी' के वासी हैं। दार्जिलिंग स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में भी कार्यरत हैं।

जगदीश जी अपनी जन्मभूमि 'लूणकरणसर' की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यहां का पानी खारा होने से पूर्व में यहां खेती नहीं के बराबर होती थी और जो होती भी थी वह पूर्णत: वर्षा के पानी पर निर्भर थी, कुछ वर्ष पूर्व यहां इंदरा गांधी नहर परियोजना आयी, जिससे यहां नहर से पानी आने लगा, अब यहां खेती में सभी उपज होती है। मुख्यत: यहां मुंगफली की खेती अधिक होती है।

यहां सभी समाज के लोग आपसी प्रेम-भाव व भाई चारे के साथ रहते हैं। रेल्वे नजदीक है, स्कुल कॉलेज, अस्पताल, रोडवेज आदि सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं की सुविधा उत्तम हैं, यहां हमारी कुल देवी 'सती दादी' का भी मंदिर भी है, जहां भादवा माह की पूर्णिमा को विशाल मेला लगता है, जिसमें देश भर में बसे 'लूणकरणसर' वासी व अन्य सभी लोग दर्शन के लिए अवश्य पधारते हैं। सबसे बड़ा मंदिर हनुमान जी का मंदिर है, इसके साथ ही अन्य कई मंदिर व दरगाह है। 'लूणकरणसर' बहुत ही उत्तम कस्बा है, यहां की प्रकृति हमें हमेशा आकर्षित करती है अत: व्यस्तता के बावजूद वर्ष में १ बार अवश्य 'लूणकरणसर' जाता हूँ।

समस्त राजस्थानी समाज की एकमात्र पत्रिका 'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को विश्वनाथ भरतिया परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

मुकेश बुचा
व्यवसायी व समाजसेवी
लूणकरणसर निवासी-नागपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७३०४०९६७१४

अपनी जन्मभूमि 'लुणकरणसर' को विशेषताओं का वर्णन करते हुए मुकेश जी कहते हैं कि यहां सभी धर्म व समाज के लोग निवास करते हैं, सभी में आपसी भाईचारा व सहयोग की भावना है। यहां के लोग बहुत मिलनसार है, 'लूणकरणसर' खारे पानी की झील व जिप्सम के खदान के लिए जाना जाता था। पूर्व में यहां बरसात के पानी पर निर्भर रहना पड़ता था। जिप्सम की खदान मात्र १०-१५ प्रतिशत रह गई है। यहां कई हवेलियां हैं, जिसमें ठाकुर दास जी बोथरा की हवेली की भव्यता दर्शनीय है। तत्पश्चात जेठमल बोथरा जी के पुत्र पूर्व सरपंच श्री गुमानमलजी की हवेली, जिन्हें नगरसेठ की उपाधि बीकानेर के राजा से प्राप्त हुई। बीकानेर के राजा उनका बड़ा आदर सम्मान करते थे।

यहां धार्मिक स्थल कई हैं, जिनमें हनुमान जी का मंदिर सबसे पूराना व भव्य है। यहां पर हर चैत्र सूदी पूर्णिमा को विशाल मेला लगता है। यहां गणगौर का मेला भी भव्य रूप में लगता था। रामदेव जी का मंदिर भी अपनी भव्यता प्रस्तुत करता है। यहाँ बहुत बड़ा कृषि फर्म व उरमूल डेरी ट्रस्ट है जो सरकारी नियंत्रण में आता है। यहां कई स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल आदि की सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हैं।

मुकेश जी का जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'लूणकणसर' में हुई। पूर्व में आपके दादाजी सिक्किम के प्रवासी रहे हैं। आपका तीन भाईयों का परिवार है। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात कुछ वर्षों तक आप सिक्किम में रहे। वर्ष २०१२ से आप सह परिवार महाराष्ट्र के नागपुर के प्रवासी हैं। आप यहां प्लायवुड के कारोबार से जुड़े हैं। आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ सभा में कार्यकारिणी व तेरापंथ युवक परिषद में सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही अन्य कई संस्थाओं से जुड़े हैं।

दीनदयाल मुदगल
पूर्व उपसरपंच
लूणकरणसर
भ्रमणध्वनि: ९४१३२६५४५२

अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि के संदर्भ में दीनदयाल जी कहते हैं कि 'लूणकरणसर' की आबादी लगभग ४५००० है। विधानसभा में यहां का वोट दो लाख के करीब है, यह जाट बाहुल्य क्षेत्र है, यहां से स्व. भीमसेन चौधरी छह बार विधायक व मंत्री रहे हैं और उन्हीं के सुपुत्र श्री वीरेंद्र बेनीवाल जी भी दो बार विधायक व मंत्री रहे हैं, यहा जो भी विकास कार्य हुए उसमें मुख्यतः श्री बेनीवाल जी की विशेष भूमिका रही है। यह उपखंड कार्यालय भी है, यहां इंदिरा गांधी नहर परियोजना, स्नातक की शिक्षा उपलब्ध कराने की पूर्ण व्यवस्था श्री बेनीवाल द्वारा ही की गई है। पहले यहां मात्र माध्यमिक तक की शिक्षा उपलब्ध थी और आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए बच्चों को दूसरे गांव या बीकानेर जाना पड़ता था और बच्चियां आगे की पढ़ाई नहीं कर पाती थी। श्री बेनीवालजी जी द्वारा ही आज इन समस्या का निराकरण हो सका है। यहां सभी समाज के लोग परस्पर सामंजस्य प्रेम पूर्ण व्यवहार के साथ रहते हैं, सद्भावना हमेशा बनी रहती है, सभी मिलनसार हैं। अंग्रेजों के समय नमक की खेती होती थी और जिप्सम की खदानों के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता था। यहां ऑलिव ऑयल, जैतून तेल की रिफाइनरी फैक्ट्री है जो सरकार द्वारा लगाई गई है, यहां जैतून के सरकारी फॉर्म है, जो बेनीवाल जी की ही देन है। यहां कई धार्मिक स्थल हैं जिनमें शिव जी का मंदिर सबसे पुराना है जो मठ के नाम से जाना जाता है, इसके अलावा ठाकुर जी का मंदिर, जैन मंदिर, गणेश मंदिर, हनुमान जी का मंदिर है। व्यापार की दृष्टि से यहां मूंगफली, सरसों, गेहूं, कपास आदि की खेती अधिक मात्रा में होती है। यहां अनाज की बहुत बड़ी मंडी है जिससे सुविधा संपन्न गांव बना हुआ है। यहां कई पुरानी हवेलियां हैं जो 'लूणकरणसर' की शोभा बढ़ाती है। यहां स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, रेल बस आदि की सुविधा भी अच्छी है।

दीनदयाल जी का जन्म स्थान पश्चिम बंगाल का कोलकाता रहा व सम्पूर्ण शिक्षा राजगढ़ के मोहता कॉलेज से की। आप छात्र जीवन से ही राजनीति में विशेष रूचि रखते थे। मोहता कॉलेज में छात्र युनियन के जनरल सेक्रेटरी भी रहे हैं। नेशनल स्टूडेंट यूनियन ऑफ इंडिया (NUSI) राजगढ़ के अध्यक्ष भी रहे। 'लूणकरणसर' तहसील के राजस्थान ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष हैं। लूणकरणसर के पूर्व उपसरपंच भी रहे है, वर्तमान में एक फोटोग्राफर के रूप में अपनी विशेष पहचान बनाए हुए हैं। बीकानेर देहात कांग्रेस में अभाव अभियोग प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष रहे हैं।

धनपतराय बुचा
व्यवसायी व समाजसेवी
लूणकरणसर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२७५८५६१७

'लूणकरणसर' गांव बहुत ही सुंदर है, यहां के लोग भी बहुत ही अच्छे व मिलनसार हैं, आपस में घुल-मिल कर रहते हैं, यहां का वातावरण बहुत ही शांत है, यहां सभी समाज के लोग आपसी सद्भावना व सामंजस्य के साथ रहते हैं। यहां जैन, अग्रवाल, ब्राह्मण, जाट, कुंभार, नाई, मुसलमान आदि सभी समाज के लोग निवासित हैं। लूणकरणसर तहसील हेडक्वार्टर भी है, यहां कई धार्मिक स्थल है जिनमें जैन मंदिर, हनुमान जी का मंदिर व अन्य कई मंदिर विशेष हैं। यहां एक कृषि फॉर्म भी है जिसकी अपनी विशेषता है, जो सरकार द्वारा लगाया गया है।

'लूणकरणसर' सभी दृष्टि से सुविधा संपन्न गांव है यहां के लोग व्यवसाय हेतु देश के विभिन्न भागों में बसे हैं, अपने कार्यों के माध्यम से अपना व 'लूणकरणसर' का नाम रोशन कर रहे हैं।

'लूणकरणसर' धनपत जी की पैतृक भूमि है। आपका जन्म रायसिंहनगर जिला श्रीगंगानगर में हुआ। आपकी मैट्रिक तक की शिक्षा 'लूणकरणसर' में हुई तत्पश्चात उच्च शिक्षा बीकानेर में हुई। शिक्षा प्राप्ति के बाद व्यवसाय हेतु आपका गुजरात के सूरत में आना हुआ। पिछले ३२ वर्षों से सूरत के प्रवासी हैं, यहां स्टेशनरी के व्यवसाय से जुड़े हैं। सूरत स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं, तेरापंथ सभा के सदस्य के रूप में कार्यरत हैं।

गणेश कुमार गौरीसरिया
अध्यक्ष
श्री अग्रसेन सेवा समिति, लूणकरणसर
भ्रमणध्वनि: ८२०९१५८०३६

गणेशजी अपनी जन्मभूमि 'लूणकरणसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'लूणकरणसर' बहुत ही सुंदर कस्बा है, यहां कई धार्मिक स्थान है। यहां का गोगा जी का मंदिर सबसे पुराना लगभग ६०० साल पुराना है। मूंगफली की खेती के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है, तीसरी मुख्य विशेषता जैतून तेल की एकमात्र फैक्ट्री 'लूणकरणसर' में ही लगी हुई है। पूरे बीकानेर में जिप्सम के लिए भी 'लूणकरणसर' प्रसिद्ध है। यहां का बालाजी मंदिर आसपास के कई क्षेत्रों में प्रसिद्ध है मंदिर की देखभाल 'बजरंग भवन धर्मार्थ ट्रस्ट' करता है। ऐतिहासिक ठाकुर जी का भी मंदिर है जिसकी स्थापना बीकानेर के महाराजा द्वारा की गई थी। 'लूणकरणसर' की ग्राम पंचायत एशिया की सबसे बड़ी ग्राम पंचायत के रूप में जानी जाती है। यहां की आबादी लगभग ४५-५० हजार है तथा २५,००० वोटों की संख्या है।

इनमें जैन अग्रवाल ब्राह्मण, जाट, कुम्हार, मुसलमान, नाथ व अनेक सम्प्रदाय के लोग निवास करते है। आपस में मिल जुलकर प्रेम भाई चारे के साथ रहते है। यहां के सरिया परिवार की कुलदेवी सती दादी का मंदिर आस्था का प्रमुख केंद्र है, जहां सरिया परिवार के लोग जाटजडूला उतारने के लिए आते हैं। लूणकरणसर विधानसभा के विधायक भारतीय जनता पार्टी के श्रीमान सुमित जी गोदारा हैं।

यहां सभी समाज के लोग आपसी प्रेम भाव के साथ रहते हैं इनमें जैन, अग्रवाल, ब्राह्मण, जाट, कुम्हार मुसलमान आदि समाज के लोग हैं। जैन समाज द्वारा निर्मित ओसवाल भवन है, जहां जैन मुनियों के आहार-विहार की पूर्ण व्यवस्था की जाती है। आकाश गंगा कूरियर के संस्थापक सुभाष गोयल जी यहीं के रहवासी हैं। ऐसे ही अन्य कई निवासी हैं जो अपने कार्यों के माध्यम से लूणकरणसर का नाम रोशन किए हुए हैं। 'लूणकरणसर' शिक्षा व आर्थिक दृष्टि से उत्तम गांव है। गणेश जी का जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'लूणकरणसर' में ही संपन्न हुई है। आप आयरन के कारोबार से जुड़े हुए हैं, विशेष रूप से सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जाने जाते हैं। 'कोरोना' काल के दौरान कोरोना राहत नागरिक सेवा समिति' का गठन किया गया, जिसके अंतर्गत हर गरीब परिवार को सुखा राशन उपलब्ध करवाया गया। 'लूणकरणसर' स्थित अग्रवाल समाज के 'श्री अग्रसेन सेवा समिति' के अध्यक्ष पद पर आप कार्यरत हैं। बजरंग भवन धर्मार्थ ट्रस्ट के ट्रस्टी भी हैं। आप राजनीति के क्षेत्र में भी कार्यरत हैं। भारतीय जनता पार्टी व्यापारी मंडल के महामंत्री के रूप में भी कार्यरत है और भी कई सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

अजय गौड़
उप प्रधान, लूणकरणसर
भ्रमणध्वनि: ९४१४४५०२४४

अजय जी का पैतृक निवास स्थान राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'लूणकरणसर' है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा लूणकरणसर व बीकानेर में ही संपन्न हुई है। 'लूणकरणसर' में आप एक समाजसेवी और राजनीतिज्ञ के रूप में विख्यात हैं। 'लूणकरणसर' स्थित विभिन्न सामाजिक संस्था में विशेष पदों पर कार्यरत हैं साथ ही आप राजनीति से भी जुड़े हैं व कांग्रेस में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में सेवारत हैं। क्रय-विक्रय सहकारी सं. लि. व कृषि उपज मण्डी संगठन के सदस्य के रूप में कार्यरत रहे। ब्राम्हण विकास संस्थान लूणकरणसर के अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे हैं। वर्तमान में 'लूणकरणसर' के उपप्रधान के रूप में कार्यरत हैं। जिलास्तर पर छ:न्याती ब्राम्हण संस्था के स्थायी सदस्य है।

अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'लूणकरणसर' के संदर्भ में कहते हैं कि राजशाही राजाओं की भूमि कहा जाता 'लूणकरणसर', की सबसे बड़ी विशेषता यह है की यहां राजस्थान की दूसरे नंबर की खारे पानी की झील है, साथ ही यहां जैतून की खेती होती है। यहां सरकार द्वारा ऑलिव ऑइल रिफाइनरी मशीन लगाई गई है, जो भारत का एकमात्र जैतून रिफाइनरी है। पहले के मुकाबले गांव में बहुत तेजी से विकास हुआ है। यहां के पूर्व विधायक भीमसेन चौधरी जी द्वारा नहर परियोजना लाई गई, जिससे यहां के लोगों को खारे पानी की समस्याओं से मुक्ति मिली। आज 'लूणकरणसर' सभी सुविधाओं से संपन्न है, यहां कई स्कूल, कॉलेज, अस्पताल व प्रशिक्षण संस्था स्थापित है। शैक्षणिक दृष्टि से आज 'लूणकरणसर' बहुत ही उन्नत है। यहां कई धार्मिक स्थल भी हैं, जिनमें हनुमान जी का मंदिर, गोगा जी का मंदिर, सती दादी जी का मंदिर व अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं। यहां भीमसेन पार्क, स्टेडियम आदि की उत्तम सुविधा है। आर्थिक दृष्टि से भी 'लूणकरणसर' काफी समृद्ध है। यहां कई पुरानी और नई अनाज मंडी है। मुख्यतः यहां मूंगफली की खेती होती है, यह भारत का सबसे अधिक मूंगफली उत्पादन क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। 'लूणकरणसर' के निवासी देश के विभिन्न भागों में निवासित हैं, जो अपने कार्यों के माध्यम से अपना व 'लूणकरणसर' का नाम रोशन कर रहे हैं। लूणकरणसर के बारे में जितना कहा जाए उतना ही कम होगा।

'लूणकरणसर' का क्षेत्र भडांन के नाम से प्रसिद्ध रहा है। यहां के मतीरे, काकड़ीये, ग्वार, बाजरी, मोठ प्रसिद्ध हैं। यहां का क्षेत्र कृषि प्रधान व पशुधन के लिये जाना जाता है। यहां की राठी नस्ल की गायें भारत प्रसिद्ध हैं। लूणकरणसर के चौतीस गांव सेना द्वारा आवाप्त किये गये हैं, जहां पर कहा जाता है कि वो जगह एशिया की सबसे बड़ी फिल्ड फायरिग रेन्ज के रूप में काम आ रही है। लूणकरणसर में ठाकुरजी का भव्य मन्दिर है व पुराना शिव मठ भी है जिसमें लिखे शिलालेख की भाषा समझ नहीं आ रही है।

बीकानेर से पहले 'लूणकरणसर' बसा हुआ है। यहां पर लगभग सभी समाजों की धर्मशाला व भवन बने हुए हैं। ओसवाल समाज, जाट समाज, विश्नोई समाज, गुसाई समाज, नाथ समाज, जसनाथी समाज, कुम्हार समाज, ब्राह्मण समाज। ब्राह्मण विकास संस्थान में उन सभी की भागीदारी है जो ब्राह्मण केटेगरी में आता है जैसे सारस्वत, गौड़, गुजर गौड़, खण्डेलवाल, सेवग, पुस्करणा इन सभी को शामील किया गया है। अच्छा भवन बना हुआ मेन रोड पर है। समाज सेवी सीताराम जी सारस्वत कालू निवासी द्वारा माता का भव्य मन्दिर है, जिसके पहले अध्यक्ष समाज सेवी श्री जगदीश जी पारिक, दूसरे अध्यक्ष श्री हजारीप्रसाद सारस्वत व तीसरा अध्यक्ष अजय गौड़ यानी मैं बना, मेरे कार्यकाल में माताजी के मन्दिर का भूमि पूजन हुआ जो आज सम्पूर्णता की ओर है। चौथे अध्यक्ष श्री प्रभुदयाल जी सारस्वत हैं।

संतोष चंद भूरा

अध्यक्ष तेरापंथ सभा
लूणकरणसर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१४४५००६८

संतोष जी अपनी कर्मभूमि और जन्मभूमि 'लूणकरणसर' के संदर्भ में कहते हैं कि यह ६०० साल पुराना कस्बा है। यहां की स्थिति खारा पानी होने के कारण पूर्व में बहुत ही विकट थी, पर जब से इंदिरा गांधी नहर परियोजना आयी है तब से यहां की कायाकल्प ही पलट गई है। यहां कई दाल मिलें, तेल मिलें स्थापित हैं। मूंगफली उत्पादन की दृष्टि में 'लूणकरणसर' राजस्थान में दूसरे नंबर पर आता है। यहां की कृषि मंडी भी बड़ी है, पहले यह देश की सबसे बड़ी तहसील हुआ करती थी, कालांतर में कुछ गांव में बनने के बावजूद आज भी राजस्थान की सबसे बड़ी तहसील के रूप में जानी जाती है। देश में अधिक दुग्ध उत्पादन करने वाला गांव भी यह है। आर्थिक दृष्टि से 'लूणकरणसर' आज पूर्णता: संपन्न और समृद्ध है, यहां सभी समाज व धर्म के लोग आपसी प्रेम भाव के साथ रहते हैं, यहां सबसे अधिक तेरापंथ समाज के घर हैं। यहां तेरापंथ ओसवाल भवन योग क्षेम का भी निर्माण किया गया है जहां संत साध्वी विहार हेतु आते रहते हैं, सद्भावना में यह क्षेत्र अग्रणी है।

संतोष जी का परिवार मूलत: राजस्थान के देशनोक का रहने वाला है। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'लूणकरणसर' में व उच्च शिक्षा बीकानेर डूंगर कॉलेज में सम्पन्न हुई। पिछले ७० सालों से आपका परिवार 'लूणकरणसर' का निवासी है। आप यहां तेल मील व अन्य कारोबार से जुड़े हैं। आप सामाजिक संस्थाओं में भी अग्रणी रहते हैं। 'लूणकरणसर' स्थित तेरापंथ सभा के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। सेवा भारती का प्रकल्प आदर्श विद्या मंदिर के कोषाध्यक्ष के पद पर आप कार्यरत हैं। 'लूणकरणसर' व्यापार मंडल के सह मंत्री रहे हैं तथा वर्तमान में सदस्य के रूप में कार्यरत है। ग्राउंडनट सीड्स एसोसिएशन के भी कोषाध्यक्ष हैं। अन्य कई सामाजिक संस्थाओं में भी विशेष पद पर कार्यरत हैं।

दिनेश बोथरा

व्यवसायी व समाजसेवी
कालिमपोंग प्रवासी-लूणकरणसर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९३३०९७९१९८

दिनेश जी अपनी पैतृक भूमि के संदर्भ में अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'लूणकरणसर' एक बहुत ही सुंदर गांव है जहां जाना हमें अच्छा लगता है। वहां के लोग, वहां का समाज सभी अच्छे हैं। पहले के मुकाबले आज 'लूणकरणसर' में काफी बदलाव आया है, प्रगति हुई है, पहले यहां पीने के पानी की दिक्कत होती थी, पर नहर आ जाने के कारण यहां विशेष रुप से प्रगति हुई है। यहां कई मंदिर ऐतिहासिक हैं जहां पर घूमना अच्छा लगता है। यहां के लोग सामाजिक क्षेत्रों में भी विशेष भूमिका निभाते हैं, जिस कारण आज 'लूणकरणसर' प्रगति के पथ पर है। लूणकरणसर में मूंगफली की सबसे अधिक खेती होती है, यहां जैतून की रिफाइनरी की भी मशीन लगी हुई है। दुग्ध उत्पादन में भी लूणकरणसर अग्रसर रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी आज लूणकरणसर अग्रणी है। यहां कई विद्यालय व कॉलेज स्थापित हैं, विशेषकर लड़कियों की स्कूली शिक्षा की व्यवस्था बहुत अच्छी है, हमारा 'लूणकरणसर' प्रत्येक दृष्टि से संपन्न है।

दिनेश जी का परिवार लगभग डेढ़ सौ सालों से 'लूणकरणसर' से स्थानांतरित होकर दार्जिलिंग के कालिमपोंग में निवासित है। यहां आपके परिवार की सातवीं पीढ़ी कार्यरत है। आपका जन्म १९५६ में 'लूणकरणसर' में ही हुआ। संपूर्ण शिक्षा यही संपन्न हुई है। अपनी पैतृक भूमि से लगाव आज भी है 'लूणकरणसर' वर्ष में एक दो बार अवश्य जाते हैं।

रिटेल शेयर कालिमपोंग में मार्केट कारोबार से जुड़े हैं। वर्तमान में आपके दोनों बेटे व्यापार संभाल रहे हैं। आप व्यक्तिगत रूप से सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं

हीरालाल बोथरा जैन

व्यवसायी व समाजसेवी
लूणकरणसर निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७९५१५०७०

हीरालाल जी अपनी पैतृक भूमि 'लूणकरणसर' के संदर्भ में कहते हैं कि पहले यह गांव बहुत ही सुहावना था। पैतृक निवास होने के कारण आज भी इस गांव से मुझे बहुत लगाव है। गांव की सादगी आज भी हमें आकर्षित करती है, पर समय परिवर्तन के साथ ही पहले की तुलना में गांव में काफी परिवर्तन आ गया है, यहां के लोगों का रहन-सहन आचार-विचार में भी काफी परिवर्तन हुआ है।

'लूणकरणसर' मूंगफली व दूग्ध उत्पादन के लिए जाना जाता है।

देश की एकमात्र सरकारी जैतून रिफाइनरी फैक्ट्री लूणकरणसर में ही है। आज यह गांव आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है, साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में भी अग्रणी है। यहां के निवासी देश के विभिन्न भागों में बसे है और व्यवसाय व सामाजिक कार्यों में उन्नति कर रहे है।

हीरालाल जी का जन्म वह प्रारंभिक शिक्षा 'लूणकरणसर' ही संपन्न हुई।

१९५७ में बीकानेर से आपने स्नातक की उपाधि प्राप्त की। लगभग ३५ वर्षों से बेंगलुरु के प्रवासी हैं। आपका जीवन काफी संघर्षपूर्ण रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में व्यापार के लिए प्रयास करने के पश्चात अंत में मेडिकल व्यापार से जुड़े, अपनी मेहनत व लगन से इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त की और नया मुकाम बनाया आज भी इसी व्यवसाय से संलग्न हैं। धार्मिक व सामाजिक कार्यों में आपकी विशेष पहचान है। आपको एक पुत्र व एक पुत्री है। पुत्र विनय का मेडिकल मार्केट में विशेष नाम है।

'मेरी माटी मेरा चन्दन जिन्हें बारम्बार वंदन'

श्रेयांस बैद
भ्रमणध्वनि: ९८२९६४८७६८

राजस्थान में विकसित 'लूणकरणसर' की उभरती तस्वीर, तत्कालीन बीकानेर राज्य में राव लूणकरण जी द्वारा बसाये गए गांव 'लूणकरणसर' जो कि केंद्र शापित था तब और अब में बहुत सारी भिन्नतायें हैं। 'लूणकरणसर' में पानी का अभाव था, जिस कारण लोग यहां रहना नापसंद करते थे व यहां बेटी देना एक सजा के रूप माना जाता था। समय ने करवट ली, इंदिरा गांधी नहर परियोजना ने 'लूणकरणसर' की काया पलट कर दी। एशिया की सबसे बड़ी तहसील, रिकार्ड मूंगफली के उत्पादन ने विशिष्ठ पहचान दिलाई। दलहन व तिलहन दोनो ही फसलों ने किसानों के चेहरों पर ऐसी खुशी दिलाई की 'लूणकरणसर' सम्पन्न होने लगा। आमतौर पर बीकानेर के सबसे शांतिप्रिय इलाके के रूप में शुमार क्षेत्र, जहां लोग इत्मीनान, प्यार-मोहब्बत से रहते हुए एक दूसरे के प्रति सद्भाव भी रखते हैं। त्यौहारों में मेलजोल की झलक देखने को मिलती है। समय के साथ सुविधाओं का भी विस्तार हुआ है। समय-समय पर केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं को अमली जामा पहनाने के लिये उपखंड मुख्यालय पर उपखण्ड अधिकारी तैनात हैं। अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट कार्यालय भी है।

'लूणकरणसर' को मिनी डेनमार्क भी कहा जाता है। यहां दूध का प्रचुर मात्रा में उत्पादन होता है। ग्राम विकास व लोगों की आजीविका का मुख्य स्रौत है। गांव-गांव में लगभग देश की सभी डेयरियों के दुग्ध कलेक्शन केंद्र बने हैं। यहां का दूध देश के अनेक हिस्सों में पहुंचता है। तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे द्वारा किसानों की आय को बढ़ाने के लिए इजरायल से किसानों को प्रोत्साहन देने के लिये देश का सबसे पहला जैतून तेल (ऑलिव ऑयल) शोधन संयत्र लगवाया गया जो किसानों की किस्मत चमकाने वाला है। 'लूणकरणसर' आने वाले दिनों में उभरती तस्वीर बन कर उभरेगा, यहां अनेक क्षेत्रों में विकास की विपुल सम्भभावनाएं हैं, जो यहां पर लोगों को खींच कर ले आती है, ये कहना है लूणकरणसर निवासी श्रेयांस बैद का।

'लूणकरणसर' में जन आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी विविध दायित्वों के निर्वहन के साथ जन समुदाय के लिए उल्लेखनीय कार्य करते हुए 'लूणकरणसर' के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील होकर गतिमान रहते हुए श्रेयांस जी ने 'मेरा राजस्थान' को दिए साक्षात्कार में बताया कि भारतीय जनता पार्टी के आंदोलनों से लेकर धारा ३७० खत्म करने तक के राष्ट्रव्यापी आंदोलन से 'लूणकरणसर' से एकमात्र आप जम्मू जेल गया व गिरफ्तारी दी। भारतीय जनता पार्टी के हर एक कार्यक्रमों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया व पार्टी के अनेक दायित्वों को श्रद्धा के साथ निभाते हुए भारतीय जनता युवा मोर्चा मंडल में पूर्व उपाध्यक्ष, महामंत्री व जिला कार्यसमिति में सदस्य रहा व वर्तमान में जिला देहात मीडिया प्रभारी हूँ। भाजपा किसान मोर्चा में पूर्व उपाध्यक्ष, भाजपा उपभोक्ता प्रकोष्ठ में मण्डल अध्यक्ष, भाजपा बुद्धि जीवी प्रकोष्ठ के जिला उपाध्यक्ष, भाजपा अंत्योदय प्रकोष्ठ में जिला संयोजक व लोकसभा चुनाव में विशेष संपर्क अभियान का जिला प्रभारी रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भाजपा संकल्प से सिद्धि नवभारत निर्माण महाअभियान के जिला संयोजक रहते हुए वर्तमान में महाभियान बीकानेर संभाग का दायित्व बखूबी निभा रहा हूँ। श्रेयांस जी राजस्थान सरकार के दिव्यांग जन आयोग में सदस्य, जिला एवं स्थानीय पुलिस की सीएलजी के सदस्य, विद्यालय विकास कोष समिति, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में सदस्य, स्वास्थ्य समिति सदस्य कार्यरत हूँ। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण एवं शेषन न्यायालय बीकानेर में पैनल सदस्य पीएलवी के रूप में सेवाएं दे रहा हूँ। अनेक बार सामाजिक कार्यकर्ता के लिये सम्मानित किया जा चुका हूँ। सामाजिक कार्यकर्ता के लिये जिला स्तर पर श्री करणी सिंह स्टेडियम बीकानेर में राजकीय समारोह में संभागीय आयुक्त श्री सुबीर कुमार व जिला कलेक्टर आरती डोगरा जी द्वारा सम्मान पत्र, लूणकरणसर उपखण्ड में राजकीय समारोह में उपखण्ड अधिकारी सुदर्शन भयाना द्वारा सम्मान पत्र 'शील्ड', बीकानेर सांसद श्री रामेश्वर डूडी, महापौर श्री भवानी शंकर शर्मा व विधायक श्री मंगला राम गौदारा द्वारा टाऊन हॉल में 'बीकानेर रत्न' अवार्ड से सम्मान प्राप्त, बीकानेर महापौर भवानी शंकर शर्मा व जिला कलेक्टर द्वारा नेशनल कंज्यूमर अवार्ड सम्मान, नगर निगम बीकानेर द्वारा राजकीय सम्मान समारोह में महापौर श्री नारायण चोपडा व आयुक्त श्री प्रदीप गावंडे (आईएएस) द्वारा सम्मान, भारत सरकार के केंद्रीय श्रम मंत्री श्री संतोष जी गंगवार व केंद्रीय मंत्री लघु उद्योग व संसदीय कार्य राज्यमंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल द्वारा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा सम्मानित किये जाने के साथ हाल ही में सुप्रीम कोर्ट प्रांगण में नेपाल के पूर्व उपराष्ट्रपति परमाननंद झा द्वारा अटल समरसता अवार्ड से नवाजा गया।

टेंपल बोर्ड नाथद्वारा श्री नाथ जी में भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुरेश भाई जैन, गौ वंश मंथन संयोजिका मोनिका अरोडा व राजस्थान प्रशाशनिक सेवा के अधिकारीयों द्वारा गौ मित्र सम्मान से सम्मानित किया जा चुका हूँ।

पूर्व में उपखंड अध्यक्ष पशु क्रुरता निवारण समिति पशु पालन विभाग राजस्थान सरकार, पीपुल्स फ़ॉर एनिमल्स दिल्ली के सदस्य, आखिल राजस्थान उपभोक्ता संगठन महासंघ में जिला सचिव, व उपभोक्ता संरक्षण समिति के उपखंड अध्यक्ष है। ओसवाल पंचायती के पूर्व सदस्य व अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य व तेयुप के सहमंत्री व मीडिया प्रभारी हैं। बीकानेर ब्यूरो के साथ 'गीतांजलि पोस्ट' साप्ताहिक में सेवाएं दे रहा हूँ।

महिला शिक्षा है जरूरी है पर भारतीय संस्कारों के साथ

श्रीमती इंदू बोथरा सिंघी
लुणकरणसर निवासी-बिलासीपाड़ा आसाम प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७००३४२४२५२

लुणकरणसर में २३ फरवरी १९६६ को जन्मी, लुणकरणसर के सम्पन्न शिक्षित जेठमल बोथरा परिवार में पली-बढ़ी श्रीमती इंदू बोथरा सिंघी का जन्म माता गुलाबी देवी जी की कुच्छी व पिताश्री उमेदमल जी बोथरा के प्रांगण में हुआ। आपकी कक्षा ८ वीं तक की शिक्षा 'लुणकरणसर' में ही हुयी। आपने बी.एस.सी, ग्रेजुएशन की शिक्षा जयपुर के प्रख्यात बनस्थली विद्यापीठ में पूरी की। इन्दूजी कहती हैं कि मैंने पायलट की भी ट्रेनिंग सन १९८४-८५ में ली, पर इस क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ पायी। मेरा विवाह बिलासीपाड़ा आसाम में बहुप्रतिष्ठित सिंघी परिवार में हुआ। मेरे पति श्री अशोक जी सिंघी भाजपा के विधायक हैं। मेरे तीन बच्चे हैं बेटा जयचंदलाल सिंघी लंदन में कम्प्यूटर इन्जीनियरिंग व बड़ी बेटी मल्लिका यू. के. से इंटरनेशनल मार्केटिंग में एम.एस. कर रही है व दूसरी बेटी चांदनी हमारे साथ है। इंन्दू जी 'मेरा राजस्थान' को बताती हैं कि मैं 'श्री गौतम कन्ट्रक्शन कम्पनी' की डायरेक्टर भी हूँ जो पिछले ५० सालों से हायवे के रास्ते, हास्पीटल, कॉलेज के लिए भवन निर्माण आदि का कार्य कर रही है। इस कम्पनी की स्थापना मेरे ससुर (स्व.) श्री जतनलाल सिंघी जी ने की थी।

इंदू जी से जब पूछा गया कि आप लुणकरणसर-जयपुर, कोलकाता-बिलासीपाड़ा आसाम की निवासी रहीं, कौन सी जगह ने आपको सुकून जैसा माहोल दिया, तो इंदू जी ने बताया कि वैसे तो सभी जगह ही अच्छे हैं, पर अच्छे पर्यावरण के हिसाब से तो मेरा 'लुणकरणसर' अति समृद्ध है, जीवन यापन व मानवीय सभ्यता के हिसाब से कोलकाता अति सुरक्षित है, कोलकाता के लोग सांस्कृतिक व शिक्षित हैं, मृदुभाषी है, एक-दूसरे को सम्मान देने वाले हैं, रही बात बिलासीपाडा की तो यहाँ शिक्षा की जरुर कमी है पर हमारा बिलासीपाडा भारतीय व विशेषकर आसामी संस्कृति व सभ्यता का परिचायक है।

इंदू जी स्वयं शिक्षित व सुदृढ पारिवारिक महिला हैं, जब उनसे नारी शिक्षा के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि महिला शिक्षा तो बहुत ही जरुरी है। एक महिला कई परिवारों को शिक्षित व भारतीय संस्कृति में ढालती है, शिक्षा के साथ-साथ महिला को भारतीय संस्कृति से सराबोर करना जरुरी है, शिक्षा मिल गयी पर भारतीय संस्कृति-रिश्तों-भावनाओं का ही ज्ञान नहीं तो शिक्षा बेकार हो जाती है, यदि महिला शिक्षित होगी तो आत्मनिर्भर बन सकती है, स्वाभिमानी बन सकती है, पारिवारिक व सामाजिक होने के लिए संस्कारों की जरूरत होती है।

युवा पिढ़ी को संदेश देते हुए इंदू जी कहती हैं कि आज की युवा पिढ़ी शिक्षित जरूर हो गयी है। आधुनिक तंत्रों के उपयोग हेतु भी सक्षम है पर रिश्ते-नाते से अनभिज्ञ है, जो कि जीवन के लिए बहुत ही जरूरी है। मैं मानती हूँ कि देश का भविष्य ही युवा हैं लेकिन पारिवारिक रिश्तों के लिए युवाओं को पारिवारिक संस्कारों से समृद्ध करना जरूरी है, इसलिए मैं 'मेरा राजस्थान' को सभी प्रबुद्ध पाठकों से कहना चाहती हूँ कि पारिवारिक संस्कारों व रिश्तों की जानकारी जन्म से ही देवें।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान के बारे में पूछने पर इंदू जी ने कहा कि किसी इंसान के नाम जब २ नहीं हो सकते तो हमारे देश का नाम २ क्यों? भारतीय संस्कृति का 'भारत' में और India में पाश्चात्य यानी अंग्रेजी संस्कृति का संदेश मिलता है। 'भारत' नाम के साथ भारत देश की भारतीयता का संज्ञान जब मंच पर बैठे नेताओं व आम जनता, जब एकसाथ चौपाल पर बैठकर चर्चा करेगी तो ही मिलेगा। विशाल मंच पर चंद नेता और मैदान में हजारों संख्या में आम जनता, ये तो अंग्रेजों के समय भी था और आज भी है। मात्र 'भारत' नाम भारत बोलने से कुछ नहीं होगा जब तक हमारे कार्य व सोच अपने आपको भारतीय कहलाने लायक नहीं बनेंगे।

चंपालाल चोपड़ा
समाजसेवी
लूणकरणसर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४६०६१४५२२

चंपालाल जी का जन्म ३ नवंबर १९३७ को लूणकरणसर में हुआ। आपकी कक्षा ८ तक की शिक्षा लूणकरणसर में, तत्पश्चात उच्च शिक्षा अर्थात मेट्रिक आपने १९५५ में बीकानेर से ग्रहण की। शिक्षा प्राप्त करने के बाद पारिवारिक व्यवसाय किराना के कारोबार से जुड़े। वर्तमान में आपके तीनों पुत्र भी इसी कारोबार से जुड़े हैं। आप सामाजिक कार्यों के लिए सतत सक्रिय रहते हैं। १९६१ में आपने पंच के रूप में चुनाव लड़ा। १९६१ से १९६५, १९७८ से १९८१ वार्ड पंच, तत्पश्चात १९८१ से १९८८ सरपंच रहे। सरपंच पद पर रहते हुए आपने विशेष तौर पर लूणकरणसर में स्थित हॉस्पिटल के नविनीकरण का कार्य किया। अपनी कर्मभूमि व जन्मभूमि लूणकरणसर के संदर्भ में कहते हैं कि पूर्व में यहां खारे पानी के कारण बहुत सी समस्याएं थी।

१९७५ में नहर आने के कारण यहां का जनजीवन सामान्य हुआ तथा आबादी भी बढ़ने लगी। २०११ की जनगणना के अनुसार यहां की आबादी ३०,००० है। वर्तमान में यहां की आबादी लगभग ४०,००० के आसपास है। १९४२-१९५६ तक यहां नगरपालिका रही। २०००-२००५ तक जिला परिषद के सदस्य रहे। २००५ से २०१९ तक ओसवाल पंचायत सभा के अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे (एक साल के बीच में कोई और अध्यक्ष रहा)। २००८ में पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के कार्यकाल में इसे नगरपालिका घोषित किया गया था, पर २००९ में कांग्रेस सरकार के आने से पुन: ग्राम पंचायत के रूप में प्रतिष्ठापित कर दिया गया। यह राजस्थान की सबसे बड़ी ग्रामपंचायत है। शिक्षा की दृष्टि से भी 'लूणकरणसर' आज काफी विकसित है। पूर्व में यहां कुछ गिने-चुने ही विद्यालय एवं बालिका विद्यालय थे। १९५८ में मेरी बहन धनी देवी राखेचा (स्वर्गीय) ने प्रथम बालिका विद्यालय का निर्माण करवाया, जिसका संपूर्ण कार्यभार मैंने संभाला। यहां स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, बस, रेलवे आदि की उत्तम सुविधा है। राजस्थान की अनाज मंडियों में से एक मंडी 'लूणकरणसर' भी है। यहां मूंगफली का उत्पादन सबसे अधिक होता है। परंतु अब कम नहर के पानी के चलते उत्पादन में भारी कमी आयी है।

रितू नौलखा
यंगेस्ट सीए इन भारत
लुणकरणसर निवासी

कहते हैं पूत के पांव पालने में दिख जाते है इसे सार्थक किया है, लुणकरणसर निवासी मालचंद जी नौलखा व मोनिका जी की पुत्रियां मनिषा, रुचिका, रितू व अक्षता जीने, आपकी तीनों कन्या सीए हैं व वर्तमान में प्रतिष्ठित विदेशी कम्पनी में उच्च पद पर कार्यरत हैं व चौथी कन्या अक्षिता अभी अध्ययनरत है।

आपकी तृतीय कन्या रितू ने न सिर्फ अपने परिवार का बल्कि 'लुणकरणसर', ही नही पूरे बीकानेर जिले का नाम रोशन किया है। रितू ने भारत की सबसे कम उम्र (१९) में सीए का खिताब अपने नाम किया है, आपकी इस उपलब्धि से आज पूरा बीकानेर अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

रितू अपनी सफलता का विवरण बताते हुए कहती है कि जब मैं १२वीं कक्षा में थी तो मेरी बड़ी बहन मनिषा सीए की तैयारी कर रही थी, उनकी किताबें देखकर मुझे उसे पढ़ने में रुचि जागी। १२वीं में पूरे बीकानेर जिले में टॉप १० में अपना स्थान बनाया, अपनी इच्छा व घरवालों के प्रोत्साहान से सीए की पढाई प्रारंभ की और प्रथम प्रयास में सीपीटी व आयपीसीसी की परिक्षा में सफलता प्राप्त की, तत्पश्चात नीजी फर्म में प्रैक्टिस करने के पश्चात वर्तमान में एक नीजी विदेशी फर्म में असिस्टेंट मैनेजर के पद पर कार्यरत हूँ।

रितू 'लुणकरणसर' के संदर्भ में कहती हैं कि लुणकरणसर एक बहुत सुंदर गांव है मेरा जन्म कालू में व सम्पूर्ण शिक्षा-दिक्षा लूणकरणसर में सम्पन्न हुई है, यहां के लोग बहुत ही सहयोगी व मिलनसार हैं, यहां लड़के व लड़कियों की शिक्षा समान रुप से देखी जाती है, जब मैंने यह सफलता प्राप्त की तो पूरा गांव व समाज के लोग बधाई देने पहुँचे थे, यहां के लोगों में अपनापन है, जब हम कहीं बाहर से आते हैं तो हमारे घरवालों से पहले हमारे पास पड़ोस के लोग खैर खबर लेने आ जाते हैं। लुणकरणसर प्राकृतिक दृष्टि से भी बहुत उत्तम है, यहां की कचोरी व समोसे प्रसिद्ध हैं।

-मे.रा.

श्री किशन दास करनानी धर्मशाला

लूणकरणसर: लगभग ११५-१२० वर्ष पूर्व 'लूणकरणसर' में रेल्वे स्टेशन के करिब श्री किशनदास करनानी द्वारा एक धर्मशाला बनाई गई थी। मूलत: श्री किशनदास करनानी सरदारशहर के निवासी हैं, सरदारशहर से कहीं भी जाने के लिए लूणकरणसर से ही ट्रेन पकड़नी पड़ती थी। आस-पास रूकने व ठहरने के लिए कोई स्थान न था। श्री किशनदास जी ने यहां धर्मशाला बनवायी। पिछले ४-५ पिढी द्वारा आज भी इस धर्मशाला की देखभाल की जा रही है। कुछ वर्ष पूर्व इस धर्मशाला का नविनीकरण भी करवाया गया है। धर्मशाला में रहने-ठहरने की पूर्ण व्यवस्था है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गवालों को ब्याह-शादी के लिए भी जगह उपलब्ध कराई जाती है। धर्मशाला में ५-६ कमरे है। ज्ञात हो कि धर्मशाला सुविधापूर्ण है।

करनानी धर्मशाला

-विवेक करनानी
सरदारशहर, भ्रमणध्वनि: ८९२७६२४५५७

BIYANI
GROUP OF COLLEGES

BIYANI
Where you can trust

Follow us

Accredited 'A' Grade by NAAC

ADMISSION OPEN FOR SESSION 2020-21

On Campus Hostel Facility (For Girls)

VISION : YOUTH EMPOWERMENT | MISSION : PROFESSIONAL EDUCATION

- **Biyani Girls College**
  (NAAC Accredited) www.biyanicolleges.org
- **Biyani Inst. of Science & Mgmt. for Girls**
  (NAAC Accredited) www.bisma.in
- **Biyani Girls B.Ed. College**
  (NAAC Accredited) www.biyanigirlscollege.com
- **Biyani School of Nursing & Paramedical Science for Girls**
  www.biyaninursingcollege.com
- **Biyani Ayurvedic Medical College & Hospital for Girls**
  www.biyaniayurvediccollege.com
- **Biyani College of Science & Mgmt. (Co-Ed.)**
  www.bcsmjaipur.com
- **Biyani Law College (Co-Ed.)**
  www.biyanilawcollege.com
- **Biyani Inst. of Pharmaceutical Sciences (Co-Ed.)**
  www.biyanipharmacycollege.com
- **Biyani Private ITI (Co-Ed.)**
  www.biyaniiti.com
- **Biyani Inst. of Skill Development (Co-Ed.)**
  www.bisd.in
- **Biyani Inst. of Yoga & Naturopathy (Co-Ed.)**
  www.biyanicolleges.org

GURUKPO No.1 Educational Web Portal in India .COM — www.gurukpo.com

BIYANI TV — www.youtube.com/BiyaniTv

बियानी टाइम्स BIYANI TIMES JAIPUR — www.biyanitimes.com

Radio Selfie 90.8 FM — www.radioselfie.in

BioSeeds Chance to Order, Random to Functional — www.bioseeds.jp

Campus 1 : Sector-3, Vidhyadhar Nagar, Jaipur, Rajasthan, India
Campus 2 : Kalwar-Jobner Road, Kalwar, Jaipur, Rajasthan, India
Campus 3 : Champapura, Kalwar Road, Jaipur, Rajasthan, India

Phone : 8890435298, 8290636942, 0141-2338591
E-mail : acad@biyanicolleges.org
Website : www.biyanicolleges.org

For more information visit our website : www.biyanicolleges.org & fill the enquiry/feedback form

बजरंग भवन धर्मार्थ ट्रस्ट

अध्यक्ष - पवन खेतान

जैतून रिफाइनरी की वजह से अपनी खास पहचान रखने वाला 'लूणकरणसर' धीरे धीरे विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। एशिया की सबसे बड़ी फायरिंग रेंज महाजन फील्ड फायरिंग रेंज के एक छोर पर बसा 'लूणकरणसर' अब हर दृष्टि से सक्षम होता जा रहा है। 35- 40 हजार की जनसंख्या वाले 'लूणकरणसर' में राजकीय कॉलेज और सैकड़ों की तादाद में खुले स्कूल विभिन्न प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने में अपना पूर्ण योगदान दे रहे हैं। लूणकरणसर व्यापारिक दृष्टि से भी संपन्न नजर आता है। सुजानगढ़ से लूणकरणसर आकर बसे शिवभगवान खेतान के पुत्र पवन खेतान यहां के प्रतिष्ठित व्यापारियों में अपनी अहम भूमिका रहे हैं। सामाजिक क्रियाकलापों में भी आपकी भूमिका सराहनीय है। इन दिनों बजरंग भवन धर्मार्थ ट्रस्ट में बतौर अध्यक्ष अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

पैतृक व्यापार को बुलंदियों पर पहुंचाने में लगे प्रवीण खेतान कहते है कि 'लूणकरणसर' अब धीरे-धीरे मुस्कुराने लगा है। खारे पानी की झील के किनारे बसे इस क्षेत्र को कभी काले पानी की सजा के लिए चुना जाता था, वहीं कंवरसेन लिफ्ट नहर के आने से यह इलाका अब सरसब्ज़ है। 'लूणकरणसर' सदियों पुराना है। यह क्षेत्र मूंगफली उत्पादन में 'राजस्थान का राजकोट' कहा जाता है। वहीं दूध उत्पादन में इसे 'डेनमार्क' की उपाधि भी दी गई है। मंगोलिया और साइबेरिया से यहां हर वर्ष हजारों किलोमीटर का सफर तय कर डेमोइसेल क्रेन पहुँचती है, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'कुरजां' कहते हैं। कुरजां सितंबर में आती है और अपना प्रजनन काल संपन्न कर फरवरी के अंत में यहां से उड़ान भर लेती है। कुरजां को लोक गीतों में बड़ा महत्व दिया गया है। 'लूणकरणसर' में ठाकुर जी का प्राचीन मंदिर है, जैन मंदिर भी स्थापित है। यहाँ की गोगामेडी की महिमा भी किसी से छुपी नहीं है। प्राचीन शिव मठ, हनुमानजी मंदिर और मण्डी का गणेश मंदिर अपनी महिमा बयां करते हैं। वहीं सर्वधर्म संप्रदाय की गाथा कहती नौगजा पीर की दरगाह भी स्थित है,यहां सभी धर्म-सम्प्रदाय के लोग मन्नत मांगते हैं।

प्रवीण खेतान
सुजानगढ़ निवासी-लूणकरणसर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९६०२५ ७७७००

अपने व्यवहार से सबके मन में जगह बनाने वाले ४४ वर्षीय प्रवीण खेतान मूल रूप के सुजानगढ़ से हैं। १९८६-८७ में आपके पिता स्व. शिव भगवान खेतान 'लूणकरणसर' आ गए थे। यहां आकर उन्होंने इमारती लकड़ी का कारोबार शुरू किया। सुजानगढ़ में जन्मे प्रवीण जी की संपूर्ण शिक्षा 'लूणकरणसर' में संपन्न हुई। अपने दो भाइयों के साथ कठिन मेहनत करते हुए आपने अपने व्यवसाय को बुलंदियों पर पहुंचाया है। अपने पिता द्वारा शुरू किए गए इमारती लकड़ी के कारोबार के साथ-साथ आप आजकल इलेक्ट्रॉनिक्स व बर्तन के कारोबार को नए रंग दे रहे हैं। सामाजिक कार्य में भी आपकी बराबर सक्रियता रहती है। अग्रवाल सेवा समिति से बराबर जुड़े हुए हैं। अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से आपका जुड़ाव है। सुजानगढ़ में स्थित अपने पैतृक घर से लगाव आपकी जमीनी स्तर का जुड़ाव दर्शाता है।

निकेश सरिया
व्यवसायी व समाज सेवी
लुणकरणसर निवासी-दार्जिलिंग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९७३४१११६७७

निकेश जी मूलत: राजस्थान के लूणकरणसर के निवासी हैं आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा-दिक्षा दार्जिलिंग में सम्पन्न हुई है, जहां पर आपका परिवार लगभग ७० वर्षों से निवासित है। आपके आपके दादा शुभकरण सरिया जी यहां सर्वप्रथम आए थे। आपके परिवार में आपकी माताजी, दो बहने व आपका भरा पूरा परिवार है। दार्जिलिंग व सिलीगुड़ी दोनो जगह आपका हार्डवेयर का कारोबार है, आप सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

अपनी पैतृक भूमि 'लूणकरणसर' के संदर्भ में कहते हैं कि केवल बचपन में ही मेरा लुणकरणसर जाना हुआ, लगभग पिछले ३० वर्षों से नहीं गया हूँ। इस वर्ष हमारा जाना तय था पर कोरोना महामारी के कारण कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा, अत: 'लुणकरणसर' के बारे में मैं आपको कुछ भी बता नही पाऊंगा, क्योंकि वहां के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है।

दिलीप बोरड

व्यवसाय व समाजसेवी
गारबदेसर निवासी
श्री गंगानगर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१४३८१३३५

दिलीप जी अपनी पैतृक भूमि गारबदेसर के संदर्भ में कहते हैं कि गारबदेसर एक धार्मिक व ऐतिहासिक स्थल है। यह गांव लगभग ८०० वर्ष पुराना कहा जाता है। यहां ४०० वर्ष पुराना श्री कृष्ण जी का मंदिर है, कहते हैं कि यहां के पुजारी द्वारा आव्हान करने पर स्वयं श्री कृष्ण जी पधारे थे वे जो भी कुछ मांगते थे श्री कृष्ण जी स्वयं कर देते थे। एक बार गांव में बहुत बड़ा अकाल पड़ा। पशु लोगों को खाने व पानी के लिए भी मोहताज होना पड़ रहा था, तो लोगों ने पुजारी जी से कहा कि आपके ठाकुर जी तो 'आपकी बात मानते हैं तो उन्हें कहें कि हमें पानी दे, अनाज दे, तो उसी दिन रात में बहुत तेज वर्षा हुई, वर्षा होने के पश्चात अब बुवाई के लिए लोगों को वीज की आवश्यकता पड़ी तो उन्होंने पुजारी जी से कहा कि आपके ठाकुर जी ने तो पानी दे दीया, अब बुवाई के लिए अनाज कहां से लाएं तो पुजारी ने कहा कि जब ठाकुर जी ने पानी दिया है तो बीज भी वही देंगे। उसी समय क्षेत्रों में बिजाई के लिए ऊंट पर अनाज आए तब पुजारी जी ने लोगों से कहा कि ठाकुर जी ने बीज भी भेज दिया है, अब आप लोग इतने ही अनाज पुनः उन्हें लौटाएंगें और यह कहानी आज भी लोगों के बीच प्रचलित है। मंदिर में स्थापित शालिगराम की प्रतिमा है जो श्री कृष्ण जी ने पूजारी को दिया था। कहते हैं कि इस शालिगराम में से प्रतिदिन १ किलो सोना निकलता था, जिसे पुजारी जी गांव वालों को दान कर देते थे। आज भी इस मंदिर में यह शालिगराम स्थित है और इसमें उपस्थित होल में सोने के दर्शन होते हैं, इस तरह जग प्रसिद्ध है हमारा 'गारबदेसर'। दिलीप जी का जन्म व संपूर्ण शिक्षा-दीक्षा श्रीगंगानगर में संपन्न हुई।

आपका जन्म १४ फरवरी १९६५ को हुआ। अपने परिवार के बारे में बताते हुए कहते हैं कि हमारे पूर्वज राजस्थान के ओसिया से गारबदेसर आकर बसे उन्होंने ऊन व्यवसाय किया, पंजाब के भटिंडा से ऊन आता था। लगभग २०० वर्ष यह ही कारोबार रहा। वर्तमान में आपके परिवार का सीड्स प्रोडक्शन का कारोबार है जो भारत सीड्स के नाम से जाना जाता है। आपका व्यापार राजस्थान के साथ-साथ भारत के अन्य क्षेत्रों फैला हुआ है। व्यापार के साथ-साथ आप सामाजिक संस्था में भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। पिछले २० वर्षों से महावीर इंटरनेशनल के सदस्य के रूप में सेवारत हैं, साथ ही अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

विवेक करनानी

व्यवसायी व समाजसेवी
सरदारशहर निवासी-सिलीगुडी प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ८९२७६२४५५७

विवेक जी का परिवार लगभग १३०-१३२ वर्षों से 'सिलीगुड़ी' का प्रवासी है, मूलत: आपका परिवार राजस्थान स्थित सरदारशहर का निवासी है। ७० वर्षीय विवेक जी का जन्मस्थान बिहार का देवघर है, आपकी संपूर्ण शिक्षा सिलीगुडी व कोलकाता में संपन्न हुई। सिलीगुडी में खाद्य तेल व कंस्ट्रक्शन के कारोबार से जुड़े हैं। आप सामाजिक संस्थाओं में भी सतत सक्रिय रहते हैं। माहेश्वरी भवन, माहेश्वरी कॉलेज व अन्य सामाजिक संस्थाओं में सदस्य के रुप में जुड़े हैं। आपका दो भाइयों का संयुक्त परिवार है। आपके पूर्वजों का भी 'सिलीगुड़ी' के सामाजिक कार्य में विशेष योगदान रहा है।

'लूणकरणसर' के संदर्भ में कहते हैं कि लूणकरणसर में हमारे दादाजी श्रीकृष्ण करनानी द्वारा राहगीरों के ठहने के लिए एक धर्मशाला बनायी गयी है जिसका रख-रखाव आज भी हमारा परिवार करता है, इसी उद्देश्य से २-३ वर्ष में मेरा 'लुणकरणसर' जाना होता है। 'लुणकरणसर' बहुत ही शांत प्रिय व आनंद प्रदान करने वाला गांव है, यहां सभी आपसी प्रेमभाव व मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। लूणकरणसर एक उत्तम स्थान है।

बलदेव सरिया

व्यवसायी व समाजसेवी
लूणकरणसर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१४४५०२७८

बलदेव जी का जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'लूणकरणसर' में ही संपन्न हुई है। यहां अनाज ट्रेडिंग के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। 'लूणकरणसर' में स्थित अग्रवाल समाज में कार्यकारिणी सदस्य हैं। 'लूणकरणसर' में स्थित सती दादी के मंदिर से भी जुड़े हुए हैं जिसमें आपके पिताजी किशन गोपाल सरिया अध्यक्ष भी थे।

अपनी जन्मभूमि कर्मभूमि लूणकरणसर के संदर्भ में कहते हैं कि यहां कई समाज के लोग बसे हैं, जिनका आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम हैं। यहां कई धार्मिक स्थल व सामाजिक संस्थाएं हैं जो 'लूणकरणसर' के विकास में सतत सक्रिय रहती हैं। यहां सबसे पुराना सती दादी, हनुमान जी का मंदिर है जिससे लोगों की आस्था जुड़ी है, इन स्थानों पर वार्षिक मेले का भी आयोजन होता है, जिसमें देश भर में बसे लूणकरणसरवासी अवश्य आते हैं। 'लूणकरणसर' एक बहुत ही सुंदर शहर है, पूर्व में यह अपने खारे पानी के लिए व जिप्सम की खदान के लिए विशेष रूप से जाना जाता था। वर्तमान में यहां एक सरकारी फॉर्म है, जहां ऑलिव ऑयल के पेड़ लगे हैं, रिफाइनरी फैक्ट्री भी लगी हुई है जिसका संपूर्ण संचालन सरकार द्वारा होता है। आज लूणकरणसर आर्थिक दृष्टि से व सामाजिक दृष्टि से पूर्णत: उत्कृष्ट है। देश भर में फैले लूणकरणसरवासी अपने कार्यों व व्यापार के माध्यम से 'लूणकरणसर' का नाम रोशन कर रहे हैं।

लुणकरणसर में विकास की आवश्यकता

लुणकरणसर को कर्मठ भूमि मानने वाले वर्तमान में ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष प्रभुदयाल सारवस्त जी ने विश्वस्तरीय राजस्थानियों की एकमात्र ऐतिहासिक पत्रिका 'मेरा राजस्थान' को बताया कि वर्तमान के 'लुणकरणसर' को विकास की आवश्यकता है। पूर्व में हुए सन् २०१८ के विधान सभा के चुनाव में २४००० मतों को प्राप्त करने वाले प्रभुदयाल जी का जन्म 'कपूरीसर' के में ९ दिसम्बर १९६० को हुआ। २००५ में 'लूणकरणसर' पंचायत में डायरेक्टर के पद पर सेवारत रहे। साथ ही बीकानेर देहात से बीजेपी के जिला महामंत्री पद पर भी सेवारत रहे। ब्राह्मण महासभा 'लूणकरणसर' के अध्यक्ष पद पर आपका यह दूसरा कार्यकाल है। परिवार में पत्नी ३ पुत्रों व १ पुत्री के साथ पोते-नातियों से भरापूरा है। पुत्री की शादी कर प्रभुदयाल जी ने अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभाई है। पुत्र सभी व्यापार से जुड़े हैं। वर्तमान में हुए ग्रामपंचायत के चुनाव में प्रभुदयाल जी का ज्येष्ठ सुपुत्र चुनाव जीत कर अपनी पैतृक भूमि के विकास में संलग्न हैं।

- प्रभुदयाल सारस्वत
अध्यक्ष ब्राह्मण सभा, लुणकरणसर
भ्रमणध्वनि: ९४१४४५०११८

प्रभुदयाल जी ने मोबाईल पर हुए साक्षात्कार में कहा कि 'लुणकरणसर' में किसी समय नमक की झील हुआ करती थी, पर बदलते समय के अनुसार सन १९७४ में इंदिरा गांधी नहर के कारण यहाँ भरपूर पानी आया। मूंगफली उत्पादन के साथ सरसों, चना आदि का उत्पादन काफी बढा। विकास के लिए प्रभुदयाल जी कहते है कि 'लुणकरणसर' आज भी ग्रामपंचायत है जबकि जनसंख्या के अनुसार 'लुणकरणसर' को नगरपालिका की महत्ता प्राप्त होनी चाहिए। यहाँ की सड़कों का सुधार होना चाहिए। कुछ रेलगाड़ियां यहां नहीं रुकती, जिससे स्थानीय रेलयात्रियों को काफी असुविधाएं होती हैं, वर्तमान में जनसंख्या की बढोत्तरी हुयी है इसलिए 'लुणकरणसर' से गुजरने वाली हर रेल का रूकाव हो तो काफी सुविधा होगी।

'लुणकरणसर' में स्थापित ब्राह्मण सभा के बारे में प्रभुदयाल जी बताते हैं कि ब्राह्मण सभा की स्थापना सन् २००८ में हुयी जिसके प्रथम अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद जी पारीख, द्वितीय श्री हजारी प्रसार जी चावणिया, तृतीय श्री अरुण कुमार जी गौड़ व चतुर्थ अध्यक्ष यानी मैं प्रभुदयाल सारस्वत हूँ। ब्राह्मण सभा द्वारा एक भवन का निर्माण भी किया गया है जिसके संस्थापक कालू निवासी सीताराम जी सारस्वत थे, भवन में १० कमरे व एक विशाल हॉल है। सभा द्वारा मंदिर का भी निर्माण किया गया है जो कि ब्राह्मणी माउदिया माताजी के नाम से प्रसिद्ध हम ब्राह्मणों के लिए पूजनीय है। ब्राह्मण सभा में कार्यकारिणी २१ से लेकर ३१ सदस्यों का समावेश है। श्री प्रभुदयाल सारस्वत जी कहते हैं कि भले ही मेरा जन्म कपूरीसर में हुआ पर मेरी कर्मभूमि 'लूणकरणसर' है। मैं चाहता हूँ कि दोनों कस्बों का विकास हो, जिसके लिए मैं और मेरा परिवार गतिशील हैं। मैं यह भी चाहता हूँ कि भारत को 'भारत' ही बोला जाए, India तो गुलामी का नाम है।

-मे.रा.

'लूणकरणसर' के इतिहास प्रकाशन पर 'मेरा राजस्थान' परिवार को धन्यवाद

Hanuman Duggar
भ्रमणध्वनि : 9414452243

Balchand Tolara
Lunkarnsar

Pradeep Duggar
भ्रमणध्वनि : 7790974999

Harsh
भ्रमणध्वनि : 9983831379

Oswal Trading Company
Chandpole Mandi, Jaipur

'लूणकरणसर' के इतिहास प्रकाशन पर 'मेरा राजस्थान' परिवार को धन्यवाद

विवेक करनानी
ट्रस्टी
भ्रमणध्वनि : 8927624557

सेठ श्री किशनदास करनानी धर्मशाला ट्रस्ट,
लूणकरणसर

रामप्रसाद करनानी एण्ड कम्पनी, मंगतुराम कम्पाउण्ड, पो. सिलीगुड़ी,
जि. दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल, भारत - ७३४००१

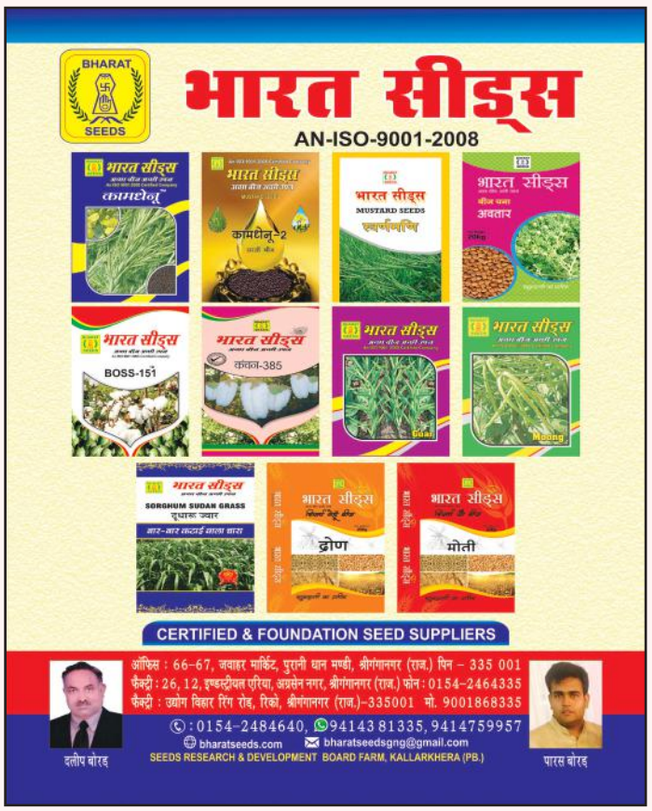

'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठक का निधन

श्री मनमोहन बागड़ी

मुंबई: निवासी एवं सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री मनमोहनजी बागड़ी का स्वर्गवास २६ सितम्बर २०२० को बड़ौदा में हो गया। आप ८४ साल के थे।

आप मधुरभाषी एवं मनमोहक स्वभाव के धनी थे। आपने शिक्षा, समाजसेवा एवं साहित्य के क्षेत्र में आजीवन धुन के धनी रूप में ठोस कार्य किया। आप अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा, माहेश्वरी प्रगति मंडल (मुंबई) एवं मनमोहन रास मंडल (मुबई) लायंस क्लब ऑफ जे.बी.नगर, सीनियर सिटीजन्स वेलफेयर एसोसिएशन (जे.बी.नगर) आदि अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे।

अपने ६ दशक के सामाजिक जीवन में अनेक संस्थाओं में विभिन्न पदों पर एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में अपना योगदान देते रहे। अपनी स्पष्ट विचारधारा, आधुनिक सोच एवं समाज सुधारक विचारों के साथ 'उच्च विचार-सादा जीवन'' के प्रतीक थे। लेखन में आपकी विशेष रूची रही। 'सगाई से विदाई', 'व्यंजन सौरभ' हैंडबुक फॉर प्रोग्रेसिव सीनियर सिटीजन्स आदि जैसी कई पुस्तकों का सफल संपादन/प्रकाशन किया।

पिछले १५ वर्षों से आप अपने पिता सेठ श्री चाँदरतनजी बागड़ी द्वारा बालिकाओं के लिए स्थापित 'श्री भैरवरतन मातृ उच्च माध्यमिक पाठशाला-बीकानेर' में सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। आपने विद्यालय के प्रबंधन एवं विस्तार में अदमुद योगदान दिया। आपके सफल प्रयासों से स्कूल में कम्प्यूटर विभाग, CCTV के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा, द्वितीय मंजिल बना कर उस पर १५ नये कमरों का निर्माण, सोलार पॉवर से स्कूल में अविरत बिजली, पहली से आठवीं कक्षा तक अंग्रेजी माध्यम स्कूल शुरू हो पाए। आपके प्रयासों के फलस्वरूप आज यह स्कूल बीकानेर की अग्रिम स्कूलों की श्रेणी में स्थापित हो चुकी है। विश्व प्रसिद्ध 'मेरा राजस्थान' पत्रिका में आपके द्वारा लिखित लेख व समाचार छपते रहे है।

आप अपने पीछे एक सफल व्यवसाय एवं एक खुशहाल परिवार छोड़ कर पंचभूत में विलीन हुए है। आपकी आत्मा को परमशांति प्राप्त हो यह प्रार्थना 'मेरा राजस्थान' परिवार निली छतरी वाले से करता हूँ।

लुणकरणसर कुछ तथ्य

स्थापन- राज्य बीकानेर की स्थापना राव बीकाजी राठौड़ स्थापना से सम्बन्धित दोहा प्रचलित हैं-

पन्द्रह सौ पेंतालवे, सुद बैशाख सुमेर।
थावर बीज थरपियो बीके, बीकानेर।।

बीकाजी का स्वर्गारोहण सन् १५०४ में हो जाने के बाद उनके पुत्र राव नरसी का १५०५ ईस्वी में स्वर्गवास हो जाने पर बीकानेर के तृतीय नरेश का राज्यारोहण १५०५ ई. में हुआ। ये तृतीय नरेश राव लुणकरण सन् १५२६ ई. तक सिंहासनारुढ रहे। राव लुणकरण के नाम पर ही आधारित है, कस्बा **लुणकरणसर**।

भौगोलिक स्थिति:- राजमार्ग ६२ पर स्थित लुणकरणसर बीकानेर से ७२ कि. मी. उत्तरपूर्व कि.मी. दूर श्री गंगानगर जो कि लुणकरणसर से १७० किमी दूरी पर अवस्थित है।

खनिज पदार्थ:- लुणकरणसर से १३ कि.मी. दूर दुलमेरा में बड़ी मात्रा में लाल पत्थर की खाने हैं। ग्राम हंसेरा, खीयेरां, उत्तम है। लुणकरणसर व धीरेरां में पर्याप्त मात्रा में जिप्सम की खुदाई होती है। कस्बे से सटे हुए भूभाग पर खारे पानी की झील बनी हुई है। इस झील किनारे साइबेरियन सारस-कुरजां का आगमन और प्रतिगमन प्रत्येक वर्ष होता है।

दो वर्ष पूर्व एक महिला आय.ए.एस अफसर ने इस क्षेत्र की अभयारण्य (पक्षी) और पर्यटन स्थल के रुप में विकसित करने का प्रोजेक्ट बनाया था जो उनके स्थानांतरण हो जाने के उपरान्त रुका पड़ा है।

साहित्य क्षेत्र:- लुणकरणसर से २० किमी दूर कालू कस्बा अवस्थित है जहाँ नानूराम संस्कर्ता नामक विख्यात राजस्थानी के साहित्य ने अपना सृजन किया। इनकी रचनाएं, राजस्थान बोर्ड व महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जाती रही हैं। वर्तमान में राजूराम बिजारणिया, सुरेन्द्र सिंह शेखावत, रामजी लाल घोड़ेला, डा. मदन गोपाल लढ़ा, ओंकारनाथ योगी आदि साहित्यकार सृजनरत हैं। कॉलेज व्याख्याता गज़ादान चारण और छौलू दान छैल भी स्थापित मंचीय कवि है जो इसी तहसील क्षेत्र के निवासी हैं।

विख्यात व्यक्तित्व:-

१. श्री केशरी सिंह राजवी (राजाजी)
२. मेजर पूर्ण सिंह - Indian Army
३. कर्नल जगमाल सिंह - Indian Army गारबदेसर
४. कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह - Indian Army गारबदेसर (वर्तमान सांसद)
५. मेखाराम चौधरी - भक्त एवम् दानी - कालू
६. नानूराम संस्कर्ता - कवि, कथाकार- कालू
७. सेठ जेठमल बोथरा
८. स्व.मानिक चन्द सुराना - विधायक व पूर्व मंत्री राजस्थान सरकार
९. भीमसेन चौधरी - पूर्व मंत्री राज. सरकार- बन्धा
१०. वीरेन्द्र बेनीवाल - पूर्व मंत्री राज. सरकार - बन्धा
११. श्री सीताराम शर्मा ढाणी - भोपालाराम गोसेवी
१२. मामराज गोदारा - बरसों तक प्रधान
१३. मनीराम सियाग - पूर्व विधायक शेमपुरा
१४. मालू राम लेघा - पूर्व विधायक लुणकरणसर
१५. सुमित गोदारा - वर्तमान विधायक लुणकरणसर
१६. डॉ. सुभाष गोयल -आकाश गंगा कोरियर लिमिटेड
१७. भेराराम जी शर्मागुरुजी वरिष्ठ अध्यापक
१८. ठाकुर भवानी सिंह जी सुराणा
१९. स्वतन्त्रता सेनानी पूर्व सरपंच हुकमाराम गौड़
२०. गुमान मल बोथरा पूर्व सरपंच

लूणकरणसर के पत्रकार: राय सिंह राव, राम प्रताप गौदारा, चेतराम ज्याणी, श्रेयांस बैद, मनोज पूरी

माहेश्वरी समाज द्वारा मानव सेवा कार्य

कर्नाटक गोवा प्रांतिय माहेश्वरी युवा संगठन के तत्वावधान व सभी स्थानीय माहेश्वरी युवा संगठन के सहयोग से इस दीपावली को ओर सुंदर बनाने हेतु जरूरतमंद लोगो की सेवा भाव कार्यक्रम किया गया, आनेवाली सर्दी के मौसम में उनकी रक्षा हेतु रजाई आदि का वितरण किया गया, जिसमें कर्नाटक गोआ प्रांत के सभी ३४ गाँव में एक साथ-एक दिन ३६५ दिन ३६५ व्यक्ति के उद्देश्य से किया गया, जिसमें स्थानीय युवा संगठन व समाज के सदस्यों ने निस्वार्थ सहयोग किया। कार्यक्रम को कर्नाटक गोआ प्रान्तीय माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष नवीनजी तापड़िया (गुलबर्गा), सचिव दीपकजी गिलड़ा (गुलबर्गा), अनूपजी राठी, (बागलकोट) कोषाध्यक्ष के संरक्षण में किया गया। कार्यक्रम को यशस्वी बनाने हेतु सचिन राठी (बागलकोट), सीनियर पैनल सदस्य व भरत बजाज (सेडम),संगठन मंत्री के नेतृत्व में कार्यक्रम को रूप रेखा मिली। आनंदजी कासट (बागलकोट), निवर्तमान अध्यक्ष द्वारा सभी जगह पर पार्सल पहुँचाया गया।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
चहुं ओर स्नेह श्रद्धा, सद्भाव की लहर, न कोई दिखावा,
ना कहीं आडंबर प्रकृति का अनोखा उपहार है 'लूणकरणसर'

के.जी. सरिया
भ्रमणध्वनि: ९३५१९९२७२५
के.सी. सरिया
भ्रमणध्वनि: ९६८०६७६८०६
बलदेव सरिया
भ्रमणध्वनि: ९४१४४५०२७८

झंवरी मल किशन गोपाल
ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट
११४, नई अनाज मण्डी, लूणकरणसर,
बीकानेर, राजस्थान, भारत -३३४००१
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा राजस्थान की गोद में राजस्थान की शान
'लूणकरणसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

अजय गौड़
उप प्रधान, पं. स. लूणकरणसर
भ्रमणध्वनि : ९४१४४५०२४४

अजय टैन्ट हाऊस
विवाह-शादी, पार्टी, भागवज कथा, जागरण,
सम्मेलन आदि में फैन्सी टैन्ट एवं डोम की सुविधा
लूणकरणसर, बीकानेर, राजस्थान, भारत -३३४६०३
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचायें

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
'लूणकरणसर' के इतिहास प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान' परिवार को धन्यवाद

Jugal Bothra
भ्रमणध्वनि : 94619 27426
Pr. Vyapar Mandal
Lunkaransar Dhaan Mandi, Po. Lunkaransar,
Dist. Bikaner, Rajasthan, Bharat- 334603
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

जीवन-वृत्त

मानिक चन्द सुराना

पूर्व वित्त एवं आयोजना मंत्री,
राजस्थान सरकार, जयपुर

पिता का नाम	स्व. श्री धर्मचन्द जी सुराना
शैक्षणिक योग्यता	एम.ए., एल.एल.बी.
धर्म	जैन (हिन्दू)
व्यवसाय	वकालत-राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रसिद्ध अधिवक्ता

राजस्थान विधानसभा की सदस्यता का विवरण:

विधानसभा	निर्वाचन क्षेत्र	राजनीतिक दल	कार्यकाल
१९६२-१९६७	कोलायत	प्रजा समाजवादी पार्टी	५ वर्ष
१९७७-१९८०	लूणकरणसर	जनता पार्टी	३ वर्ष
१९८५-१९९०	लूणकरणसर	जनता पार्टी	५ वर्ष
२०००-२००३ (उपचुनाव)	लूणकरणसर	भारतीय जनता पार्टी	३ वर्ष
२०१३-२०१८	लूणकरणसर	निर्दलीय	५ वर्ष

मानिक चन्द जी की जीवन की विशेष घटनायें

- विद्यार्थी काल से ही लोकचेतना और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय श्री मानिक चन्द सुराना का विद्यार्थियों को संगठित करने का सार्वजनिक जीवन सन् १९४६ से ही शुरू हो गया था।
- देश के स्वाधीनता आन्दोलन में छात्रों की भूमिका के रूप में श्री सुराना के वैचारिक तेवर सामने आ गए थे। इसी कारण उन्हें कॉलेज से निष्कासन का भी सामना करना पड़ा था।
- विद्यार्थीकाल में एक अध्ययनशील छात्र के रूप में एक ओर अपने गुरूजनों के प्रिय छात्र रहे तो दूसरी ओर देश के सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक परिदृश्य की प्रखर समझ के कारण विद्यार्थी समुदाय में भी विशिष्ट स्थान रहा। इस तरह विद्यार्थी काल से ही सामाजिक और राजनीतिक सरोकारों के प्रति ऐसी गहरी प्रतिबद्धता रही कि आज तक श्री सुराना एक कुशल और सक्रिय राजनेता के रूप में प्रतिष्ठित हैं।
- श्री सुराना ने पहला चुनाव सन् १९५६ में लूणकरणसर (उपचुनाव) से लड़ा। फिर सन् १९५७ में नोखा-मगरा विधानसभा सीट (बीकानेर जिला) से आम चुनाव में खड़े हुए। श्री सुराना ने सन् १९६० का उपचुनाव नोखा-मगरा द्विसदस्यीय क्षेत्र से लड़ा। उक्त चुनाव सन् १९५७ में नोखा-मगरा क्षेत्र से विजयी उम्मीदवार श्री गिरधारी लाल भोबिया के विरूद्ध उसकी कम उम्र होने के आधार पर चुनाव याचिका राजस्थान हाईकोर्ट में की। वह याचिका हाईकोर्ट द्वारा सन् १९६० में मंजूर की गई और श्री भोबिया का चुनाव निरस्त कर दिया गया। फलस्वरूप सन् १९६० में उपचुनाव हुआ, जिसे श्री सुराना ने लड़ा, चुनाव त्रिकोणीय था व श्री सुराना दूसरे स्थान पर रहे।
- सन् १९६२ में कोलायत विधानसभा क्षेत्र के चुनाव में श्री सुराना विजयी रहे। सन् १९६७ व १९७२ का चुनाव श्री सुराना ने कोलायत क्षेत्र से ही लड़ा लेकिन वे सफल नहीं हुए लेकिन चुनाव नतीजों में इनका नम्बर २ रहा।
- सन् १९७७ का चुनाव श्री सुराना ने लूणकरणसर क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकिट पर लड़ा। इस चुनाव में श्री सुराना को भारी वोटों से विजयश्री प्राप्त हुई।
- बीकानेर जिले में कुल सात विधानसभा क्षेत्र रहे हैं और श्री सुराना किसी न किसी अवधि में सात में से चार विधानसभा क्षेत्रों से चुनाव मैदान में उतरे हैं। १९५७ में नोखा-मगरा द्वि-सदस्यीय क्षेत्र था एक आरक्षित व एक सामान्य। सुराना जी सामान्य सीट से चुनाव मैदान में उतरे। इसी तरह कोलायत, लूणकरणसर, (लूणकरणसर में सम्मिलित खाजूवाला) और बीकानेर शहर विधानसभा क्षेत्रों से भी श्री सुराना चुनावी मैदान में उतरे।
- सन् १९६२-६७ के मध्य जब श्री सुराना कोलायत से विधायक थे तब तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने उनके कानूनविद होने के कारण उन्हें पंचायत राज्य स्टडी टीम का सदस्य बनाया, जिसके अध्यक्ष श्री सादिक अली थे। श्री सादिक अली उस वक्त कांग्रेस पार्टी में अखिल भारतवर्षीय महामंत्री भी थे। पंचायत राज्य स्टडी टीम की रिपोर्ट श्री सादिक अली ने राज्य सरकार को सन् १९६५-६६ में प्रस्तुत की।
- सन् १९६२-६७ में श्री सुराना को राज्य सरकार ने राजस्थान रेवेन्यू विधि (लॉ) कमीशन का सदस्य घोषित किया, जिसके अध्यक्ष न्यायाधीश श्री दौलतमल जी भंडारी साहब थे। रेवेन्यू लॉ कमीशन में श्री सुराना ने अति महत्वपूर्ण प्रश्नों पर कमीशन की रिपोर्ट से अलग अपना असहमति नोट लिखा जो आज भी लॉ कमीशन विभाग की रिपोर्ट का अंग है। श्री सुराना ने उपनिवेशन कानून और राजस्व कानून में कुछ मूलभूत सुधार किये जाने की ओर अपना नोट प्रस्तुत किया। राजस्थान काश्तकारी अधिनियम १९५५ व उपनिवेशन एक्ट की विसंगतियों को श्री सुराना ने अपने असहमति नोट में उजागर किया।
- सन् १९७७ से देश की राजनीति ने नई करवट ली। राजस्थान में भी राजनीतिक बदलाव आया और श्री सुराना ने प्रदेश में जनता पार्टी सरकार के मुख्यमंत्री पद के लिए जिस सूझ-बूझ का परिचय दिया वह राजनैतिक नेताओं व पूरे राजस्थान से छिपा नहीं है। १९७७ की शेखावत सरकार में श्री मानिक चन्द सुराना वित्त, आयोजना और परिवहन जैसे महत्वपूर्ण विभागों में मंत्री रहे हैं।
- श्री सुराना ने सन् १९८० का विधानसभा चुनाव हारने के बाद भी अपने क्षेत्र की जन-समस्याओं को हल करने व जनहित के कार्य करने में सक्रियता बनाये रखी।
- इसी प्रकार "महाजन फील्ड फायरिंग क्षेत्र" में आने वाले ३४ गांवों की समस्याओं को लेकर श्री सुराना ने जो नेतृत्व प्रदान किया ओर जोरदार संघर्ष के बाद जो सफलता प्राप्त की, उसे लूणकरणसर के ३४ गांवों के हजारों-लाखों विस्थापित ग्रामीण-किसान कभी भूल नहीं सकते। ग्रामीण-किसानों को अपनी सम्पत्ति का वाजिब मुआवजा दिलाने से लेकर आवंटन के नये नियम जारी करने में श्री सुराना ने जो नेतृत्व किया, वह राजस्थान के ग्रामीण-किसानों के हकों के संघर्ष में एक मील का पत्थर साबित हुआ। श्री सुराना द्वारा विस्थापितों का मुआवजा कृषि भूमि के वर्गीकरण के अनुसार १२००/-रूपये, १४००/-रूपये व १८००/-रूपये प्रति बीघा राजस्थान सरकार से संघर्ष कर दिलाया गया। मुआवजा मिलने के बाद ३३ गांवों के विस्थापित अत्यन्त प्रसन्न थे। श्री सुराना का ध्यान उन्होंने इस बात की ओर आकर्षित किया कि आपके नेतृत्व में संघर्ष करने पर मुआवजा तो हम किसानों को अच्छा मिल गया पर हमें तो देश की सुरक्षा के लिए भूमिहीन कर दिया गया है। राज्य सरकार से संघर्ष जारी रखिये और हमें भूमि आवंटन के लिए आपके नेतृत्व में संघर्ष करना है।
- सन् १९८५ में कांग्रेस सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी सा. से समय लेकर उन्हें प्रतिवेदन दिया गया। क्षेत्र के ५१ प्रमुख विस्थापित किसान, श्री सुराना के साथ मुख्यमंत्री निवास पर प्रातः ९:०० बजे मिले। श्री हरिदेव जोशी का बड़प्पन था कि उन्होंने प्रतिवेदन पर ही आदेश लिख दिया कि महाजन फील्ड फायरिंग रेंज के विस्थापितों को उतनी ही बारानी भूमि ३००/-रूपये प्रति बीघा के हिसाब से आवंटित कर दी जाये, जितनी भूमि पिछले

शेष पृष्ठ 49 पर...

पृष्ठ ४८ से... गांव में पहले उनके पास थी और सिंचित भूमि लेने वालों को २०००/-रूपये प्रति बीघा के मूल्य पर पीछे वाले गांव से आधी जमीन आवंटित कर दी जाये। नवम्बर, १९८५ में उपनिवेशन विभाग, राजस्थान सरकार ने महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में विस्थापित किसानों को भूमि आवंटन नाम से नए नियम जारी कर दिये। महाजन तोप्याभ्यास क्षेत्र के ३३ गांवों में ५१०० काश्तकार थे, जो सारे के सारे २० प्रतिशत सिंचित भूमियों में व ८० प्रतिशत बारानी भूमि आवंटन करवाकर सकुशल आबाद हैं। महाजन फील्ड फायरिंग रेंज के विस्थापित किसानों का नेतृत्व भी श्री सुराना व उनकी टीम ने ही किया।

❁ श्री सुराना ने इंदिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र की कीमतें खत्म करने के सवाल पर ऐतिहासिक आन्दोलन सन् १९८७ में खाजूवाला तहसील के किसानों को लामबंद करके किया व किसानों के संघर्ष का नेतृत्व कर इनकी वसूली पर रोक लगवाई। यह किसान आंदोलन सन् १९८७ में लगातार छः माह तक खाजूवाला तहसील मुख्यालय पर व ४ दिन दिनांक २२.०७.१९८७ से २५.०७.१९८७ तक जयपुर में चला, इसमें करीब ३० हजार काश्तकार इससे जुड़े हुए थे। आंदोलन के दौरान खाजूवाला के चार सौ किसानों को जयपुर ले जाकर चार दिन तक सिविल लाईन्स, जयपुर में धरना दिया गया, किसानों के साथ स्वयं की गिरफ्तारी देकर जेल भी गए। ''खाजूवाला किसान आंदोलन'' नाम से प्रचलित इस आंदोलन की चर्चा संपूर्ण राजस्थान में रही। **भूदान आवंटियों को खातेदारी दिलाने हेतु आन्दोलन**

❁ सन् २००५ से २००८ के मध्य जब सुराना जी राजस्थान राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष थे, उस समय लंबा पत्राचार मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे से हुआ, जिसमें भूदान आवंटियों की त्रासदी से अवगत कराया गया कि भूदान आवंटी को ४० वर्ष काश्तकार रहने के बावजूद एक ही भूमि पर गैर-खातेदारी के अधिकार (यानि भूमि के मालिक) होने के अधिकार से वंचित रहना पड़ता है। मुख्यमंत्री महोदया ने भूदान आवंटियों की त्रासदी व व्यथा को समझा और भूदान एक्ट में वर्ष २००८ में ही संशोधन कर उन्हें खातेदारी अधिकार दिये जाने की घोषणा कर दी।

❁ महाजन फील्ड फायरिंग रेंज के विस्थापित काश्तकारों को बढ़े हुए भूमि मुआवजा दिलवाकर व अवाप्तशुदा भूमि के बदले उसी माप की बारानी भूमि ३००/-रूपये प्रति बीघा व सिंचित भूमि २०००/- रूपये प्रति बीघा दिलवाने का लम्बा संघर्ष खाजूवाला में खेत के खालों की कीमत समाप्त करवाने का सन् १९८७ का आन्दोलन सन् २००० से २००८ के मध्य ४४०० भूदान आवंटियों को भूदान में १३ मई, २००८ को संशोधन किए जाने के बाद एक साथ तीन हजार भूदान आवंटियों को एक ही दिन में आवंटियों की पासबुक में खातेदारी को लिखवाने का ऐतिहासिक कार्य करवाया। लूणकरणसर क्षेत्र की तहसील पूगल मुख्यालय पर ''बारानी भूमि का आवंटन खोलो'' की मांग के साथ २१ दिन तक आन्दोलन किया। बारानी भूमि का आवंटन राजस्थान में भूमिहीनों का होता रहा है, लेकिन राज्य सरकार ने सन् १९८५ से बारानी भूमि का भूमिहीनों को बंद कर रखा था, इसलिए भूमिहीनों के हितों की रक्षा के लिए श्री सुराना ने २१ दिन तक ''बारानी भूमि का आवंटन खोलो'' का आंदोलन २१ दिसम्बर, १९९६ से १० जनवरी, १९९७ तक आंदोलन रोजाना १२५-१५० नए पूगल के किसानों की उपस्थिति में किया गया। उक्त आन्दोलन के सकारात्मक परिणाम चार माह में ही आ गये।

❁ श्री सुराना ने उपनिवेशन क्षेत्र के भूमिहीनों की सुरक्षा के लिए श्रीमती वसुन्धरा सरकार से २००३-२००८ के मध्य ब्याज माफी के आदेश करवाये, जिसकी घोषणा तत्कालीन मुख्यमंत्री महोदया ने वर्ष २००४ में कर दी।

❁ सन् १९९० के चुनाव के बाद सन् १९९३ का चुनाव श्री सुराना द्वारा निर्मित जनता दल (प्रगतिशील) पार्टी से लड़ा गया। उस पार्टी का गठन 'लूणकरणसर' जिसमें बीकानेर जिले की पांच तहसीलों लूणकरणसर, बीकानेर, खाजूवाला, छत्तरगढ़ व पूगल समाहित थे, नई पार्टी के ६००० सदस्य बनाये गये। जनाधार के साथ जनता दल (प्रगतिशील) नाम लोगों की जुबान पर चढ़ गया। सन् १९९३-९८ का चुनाव हार गया और हमेशा की तरह मैं जीतने के अलावा दो नम्बर पर रहा।

❁ सन् १९९० का चुनाव बीकानेर शहर निर्वाचन क्षेत्र, सन् १९९३ का चुनाव जनता दल (प्रगतिशील) से व १९९८ का चुनाव भाजपा टिकिट से लड़ने के बावजूद मैं कुल मिलाकर तीन चुनाव लगातार हार गया। 'लूणकरणसर' क्षेत्र में दुर्भाग्य से सन् १९९८ मे निर्वाचित विधायक श्री भीमसेन चौधरी की सन् २००० में एक दुर्घटना से मृत्यु हो गई। यह शोकपूर्ण समाचार मुझे राजस्थान हाउस, दिल्ली में मिला। श्री भीमसेन जी की दुःखद मृत्यु के पश्चात् विधानसभा के तीन साल का समय बाकी था। 'लूणकरणसर' क्षेत्र में नियमानुसार उपचुनाव होना तय था।

❁ सन् १९९८ में श्री सुराना की पार्टी जनता दल (प्रगतिशील) का विलय उनके ६००० सदस्यों के साथ ''विलय सम्मेलन'' में हुआ, जो तत्कालीन उपमुख्यमंत्री श्री हरिशंकर जी भाभड़ा की उपस्थिति में हुआ। भाजपा में व्यक्ति तो एक पार्टी छोड़कर आते-जाते रहते हैं। तत्कालीन उपमुख्यमंत्री ने घोषित किया कि जनता दल (प्रगतिशील) ही एकमात्र पार्टी है जिसका ६००० सदस्यों के साथ भाजपा में विलय हुआ है।

छपते-छपते

मानिक चन्द सुराना, पूर्व वित्त, आयोजना एवं यातायात मंत्री, राजस्थान का दिनांक २५.११.२०२० को सुबह करीब ६:०० बजे सवाई मानसिंह अस्पताल, जयपुर में ईलाज के दौरान देहावसान हो गया। वे करीब एक माह से बीमार चल रहे थे।

❁ जून, २००० में बादल फटने से बाढ़ आ गई। लूणकरणसर तहसील का एक गांव रोझां जल प्लावन (बाढ़) की विभिषिका में जलमग्न हो गया। 'लूणकरणसर' तहसील के सभी १२५ गांवों में भारी बारिश के कारण गरीबों के ३० हजार कच्चे मकान ध्वस्त हो गये। श्री मानिक चन्द सुराना ने जिस सक्रियता, सूझ-बूझ और दृढ़ता से नेतृत्व किया उसी का परिणाम था कि ३० हजार घरों को पुननिर्माण करवाया गया तथा २० हजार ग्रामीणों को अपेक्षित राहत मिल सकी। पीड़ित गांव के एक सौ काश्तकारों का एक प्रतिनिधि मंडल माननीय प्रधानमंत्री जी से श्री सुराना के नेतृत्व में ही मिला और केन्द्र ने भरपूर सहायता भी दी। इसी अवधि में तत्समय की केन्द्रीय मंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे व श्री सुभाष महरिया स्वयं धरना स्थल पर गए और हालात देखकर जी-जान से इस कार्य में सहयोग किया।

❁ १ दिसम्बर, २००३ के दिन राज्य विधानसभा के लिए मतदान का दिन था इसी दिन 'लूणकरणसर' क्षेत्र के घेघड़ा गांव में इंदिरा गांधी मुख्य नहर टूट गई और कुछ गांव डूब गए। श्री मानिक चन्द सुराना सब काम छोड़ ग्रामीणों के संकटों के साझीदार बने ओर प्रदेश नेतृत्व को पूरे हालात बतलाए। इसी का प्रतिफल रहा कि मुख्यमंत्री का पद भार संभालते ही श्रीमती वसुन्धरा राजे घेघड़ा पहुंची। फलस्वरूप राहत और पुनर्निमाण के कार्यों में यथोचित तेजी आई ओर हजारों ग्रामीणों को अपेक्षित राहत मिल सकी। मुख्यमंत्री महोदया ने श्री सुराना को राहत व पुनर्निर्माण की देखरेख का दायित्व सौंपा।

❁ सन् २००३ से २००८ के कार्यकाल में मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने मुझे बहुत बड़ा सम्मान 'राजस्थान राज्य वित्त आयोग' का अध्यक्ष वर्ष २००५ में मनोनीत कर दिया।

❁ सन् २००८ में चुनाव न लड़ने के बावजूद मैंने मेरा राजनैतिक चुनावी कार्यक्रम ३ क्षेत्रों में भाजपा पार्टी के पक्ष में अभियान किया व मुहिम चलाई, जिसमें १० दिन खाजूवाला, ८ दिन बीकानेर शहर पूर्व में व ८ दिन पश्चिम में अभियान चलाया। खाजूवाला क्षेत्र का टिकिट जहां नये उम्मीदवार डॉ. विश्वनाथ को अनुसूचित जाति के रिजर्व सीट पर दिया गया था। उक्त तीनों सीटों में से २ सीटों पर खाजूवाला व बीकानेर (पश्चिम) में जीत का श्रेय काफी हद तक श्री सुराना यानी मुझे जाता है।

❁ श्री सुराना ने सन् २००८ का आम चुनाव नहीं लड़ने के बावजूद 'लूणकरणसर' क्षेत्र में सक्रिय रहे। श्री सुराना सन् २००९ की नवम्बर में **शेष पृष्ठ ५० पर...**

मनोकामना पूर्ण करने वाला मनकामेश्वर भगवान शिव मठ

करीब छः सौ साल प्राचीन शिव मठ की पूजा अर्चना नत्थू गिरी जी गोस्वामी करते हैं। मंदिर में दो जीवित समाधियां भी हैं, दूर दराज के लोग पूजा अर्चना करने आते हैं। कस्बे में करीब ५०० वर्ष प्राचीन शिव मंदिर (मठ) वार्ड ३६ में स्थित है। मन्दिर का इतिहास बहुत पुराना है। मन्दिर परिसर में दो जीवित समाधि स्थल हैं जो कि दशनामी गोस्वामी समाज के महंत गंगा गिरी महाराज व उनके शिष्य की है। वर्तमान में महंत गणेश गिरी मंदिर के पुजारी हैं। उन्होंने बताया कि पांच पीढ़ियों से पूजा अर्चना करते आ रहे हैं।

मनकामेश्वर मन्दिर परिसर में पाषाण युग की चमत्कारी शिवलिंग है व शिव परिवार की ऐतिहासिक जीवित आकर की मूर्तियां विराजमान है। इन मूर्तियों पर पर पहले सोने चांदी के आवरण चढ़े थे जो कि कंटको द्वारा तोड़ दिए गए। मन्दिर का गुम्बज मस्जिदनुमा है व बरामदा छः खम्भों पर टिका हुआ है। मठ स्थापत्यकला का जीता जागता उदाहरण है।

शिव भवन, जाट धर्मार्थ संस्थान

उक्त संस्था लगभग चार दशक पूर्व स्थापित हुई थी। संस्थान पंजीकृत व सरकार द्वारा पट्टा प्रदत्त संस्थान है। जाट समाज के (तहसील वासियों) दान दाताओं ने इसमें शिव मंदिर और धर्मशाला का निर्माण करवाया है।

खेल कूद, चिकित्सा कैम्प, सांस्कृतिक कार्यक्रम व अनेकानेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का यह संस्थान एक जीवन्त केन्द्र बना हुआ है।

वर्तमान में संस्थान विकास हेतु एक कार्यकारिणी कार्यरत है:

१) मोटा राम चौधरी-अध्यक्ष

शिव भवन, जाट धर्मार्थ संस्थान कालू रोड लूणकरणसर (जिला-बीकानेर)

२) परता राम-उपाध्यक्ष

३) राजा राम आखड-मंत्री/सचिव

४) सोहन लाल झोरड-कोषाध्यक्ष

कार्यकारिणी में ग्यारह सदस्य और पाँच आमंत्रित सदस्य हैं।

विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजनार्थ एक महत्वाकांक्षी योजना हेतु हॉल का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें अनुमानित व्यय दो करोड़ रूपयों का सम्भवत: होना है। उदारहृदयी जाट समाज के भामाशाह इस लक्ष्य प्राप्ति के लिए तलाशे जा रहे हैं।

जैतसी बोथरा कुल में जन्में

श्री करणी दान बोथरा

जैतसी बोथरा कुल में जन्मे श्री करणी दान बोथरा का जन्म शुरू से ही परोपकार व नवाचार के लिए हुआ। आपके उदार हृदय के लिए आज भी लोग आपका नाम, सम्मान के साथ लेते हैं। संघर्ष मयी जीवन रहने के बावजूद आप सदैव साथ में बंदूक (दुनाली) व घोड़ी रखते थे।

आपने लूणकरणसर में सर्वप्रथम स्लेट की फैक्ट्री लगाई, आटे की चक्की लगाई, लोगों को रोजगार से जोड़ने का कार्य किया। आप उत्तम किस्म के वस्त्र व विभिन्न किस्मों के सेंट के शौकीन थे। लूणकरणसर में पंच भी रहे। आप बहुत अच्छे कवि थे। कालू से छपी नानूराम संस्कर्ता की पुस्तक खेड़े रपट में करणी दान बोथरा का उल्लेख है जो ये स्पष्ट करता हैं कि करणी दान उस समय के बहुत अच्छे लेखक थे। आप दान जी के नाम से विख्यात थे आपका विवाह कलरखेड़ा के जागीरदार बोरड़ परिवार की आसी देवी के साथ हुवा था वे धर्मपरायण महिला थी।

पृष्ठ ४९ से... अस्वस्थ हो गये और उन्हें जयपुर के सुविख्यात डॉक्टर एस.आर. मेहता के संपर्क में रहे, मेरी चिकित्सा सन् १९७७ से बराबर कर रहे थे।

- श्री सुराना २०१३ के आम चुनाव हेतु टिकिट के संदर्भ में श्रीमती वसुन्धरा राजे से जयपुर में दो बार मिले थे। २५ अक्टूबर, २०१३ श्रीमती वसुन्धरा राजे ने श्री सुराना को दिल्ली बुलाया। श्री सुराना अपने पुत्र श्री जितेन्द्र सुराना के साथ २४ अक्टूबर की रात्री में दिल्ली पहुंच गये और २५ अक्टूबर को सुबह ११ बजे श्रीमती वसुन्धरा राजे के दिल्ली ''लेखा विहार'' आवास में उनसे मिले।

पूर्व मुख्यमंत्री ने साफ कहा कि आपको टिकिट नहीं मिल सकता। जब उन्होंने यह कहा तो मैंने उनको स्पष्ट कहा की मैडम! मेरा टिकिट नहीं हो सकता तो क्षेत्र में मुकाबला त्रिकोणीय होगा, हम चुनाव लड़ेंगे और हम चुनाव जीतेंगे।

चुनाव में आपके उम्मीदवार को हरायेंगे और भाजपा व कांग्रेस दोनों को परास्त कर विधानसभा में पहुंचेंगे।

- मेरे कार्यकर्ताओं के मन व मस्तिष्क में यह बात बैठीं थी कि हमें सुराना जी को जिताकर विधानसभा में पहुंचाना है।

मेरे खड़े होने के फलस्वरूप आमजन का भारी समर्थन मुझे वर्ष २०१३ के चुनाव में प्राप्त हुआ और जनता के आशीर्वाद से व जनता के सक्रिय सहयोग से २०१३ का चुनाव मैंने अपने क्षेत्र से जीता।

- अनंतोगत्वा श्री सुराना ने प्रदेश में यह प्रमाणित कर दिया था कि जाति, सम्प्रदाय, समुदाय और धार्मिक उन्माद से ऊपर उठकर आम जन की समस्याओं के लिए संघर्षरत रहकर उनके हितों को आगे बढ़ाना और उनके हितों को सामने रख कर राजनीतिक सक्रियता दीर्घकालिक दृष्टि से आम जन समूह के दिलों में घर बनाया जा सकता है। (प्रस्तुत लेख श्री सुराणा जी के द्वारा प्रमाणित किया गया है) **-मेरा**

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2019-2021
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2019-21
'License to post without prepayment'
Published on 28/11/2020 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S
FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

ONLY ₹50/- PER PC

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक व प्रकाशक विजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इंन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इंन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणुडाक - mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना - www.merarajasthan.co.in